संगमयुग का श्रेष्ठ खजाना

समय

BRAHMAKUMARIES

वरदानी समय पर भी वरदान नहीं लेंगे तो और किस समय लेंगे? समय समाप्त हुआ और समय प्रमाण यह समय की विशेषतायें भी सब समाप्त हो जायेंगी । इसलिए जो करना है, जो लेना है जो बोलना है वह अब वरदान के रूप में बाप की मदद के समय में कर लो, बना लो । फिर यह डायमन्ड चांस मिल नहीं सकता ।

Dt. 14.12.1987

Part 1

‘समय’

भाग - 1

प्रस्तावना

परमपिता शिव परमात्मा ने ब्रह्मा तन में प्रवेश कर ब्रह्मा-मुख कमल से हम बच्चो को अथाह ज्ञान दिया है। बाबा ने हम बच्चो को **संगमयुग के दो श्रेष्ठ खजाने दिये है। एक समय दुसरा संकल्प।** समय का महत्व जानने से हमारी एक एक सेकण्ड सफल होती है। जिससे हमारा जीवन भी सफल हो जाता है। इस किताब में 1969 से 2011 तक अव्यकत बापदादा ने अव्यकत वाणीयों में जो समय के बारे मे इशारे दिये है उसका यह संग्रह है। जिसको बार-बार पढने से हमारा पुरसोतम संगमयुगी समय कैसे सफल करना और उसका सदउपयोग कैसे करना इसके बारे में हम अच्छी तरह से समज सकेंगे। यह किताब ब्रह्मामुख वंशावली ब्राह्मण आत्माओ कि स्व उन्नति में लिफट का काम करेगी।

समय आपकी रचना है

बाबा मुरली में कई बार यह कहता है कि समय आपकी रचना है, विनाश की घड़ी के काँटे आप हो,आप रचयिता हो।

बाबा इस धरा पर आया है और आकर हमको ज्ञान दिया और हम बाबा की धारणा पर चलकर पावन बनने लगे और कलियुगी समय को सतयुगी समय में परिवर्तन करने लगे तो हमारे पावन बनने से,पवित्र बनने से सारा वायुमण्डल और प्रकृति पवित्र बनती है और सारा ही समय परिवर्तन हो जाता है।

अब इस रीति से देखें तो समय और प्रकृति हमारी ही रचना है। हम ज्ञान को धारण कर पावन बनें तो परिवर्तन जल्दी होगा।

अब समय किसी सापेक्ष में हुआ? हमारे परिवर्तन से समय का परिवर्तन होगा, तो समय हमारे रेफरन्स में है, ना कि हम समय के।

सारे कल्प में रचयिता का ही महत्व है

बाबा कहते हैं कि आपकी सारे कल्प में पूजा होती है, आप ही हो जिसने संसार को परिवर्तन करने में मदद की है।

आगे हमने देखा कि समय हमारी रचना है, हम रचियता है। सारे कल्प में हम देखें तो रचयिता का ही महत्व है।

पाँच तत्त्वों के बारे में देखें तो जो कुछ गिने-चुने विज्ञानिकों ने समय की डिटेल दी तो आज सारा विज्ञान उसके गणना के आधार पर चलता है अभी तक उनका ही महत्व है। पढ़ाई से लेकर सेमीनार तक महत्व देखें तो उनका ही है।

तो हमने ही कलियुगी समय को सतयुगी समय में परिवर्तन करने में बाबा की मदद की तो समय हमारे रेफरन्स में है। तो सारे कल्प में हमारा ही महत्व है।

बाबा कहते हैं आप ही पूजन योग्य हो क्योंकि हमने ही समय का परिवर्तन किया तो हम रचयिता है और रचयिता का ही महत्व है।

अगर ड्रामा के आधार से देखें तो ड्रामा हर पाँच हजार वर्ष बाद रिपीट

होता है तो आत्माओं के मन में स्मृति है कि यह वही आत्मायें हैं जिन्होंने समय को परिवर्तन किया था। तब ही उनका पूजन करते हैं, महिमा करते हैं और मन में आशा है कि यह वही आत्मायें हैं जो हमें दुःख के समय से छुड़ायेंगे।

रचयिता का कल्प में महत्व है, रचना का नहीं

बाबा कहते हैं समय से पहले सम्पूर्ण बनो, समय के बाद में बने तो वह समय की महिमा है,नहीं की आपकी।

अगर हम समय से पहले सम्पूर्ण बनें तो सारे कल्प में हमारा महत्व होगा क्योंकि हमने समय को परिवर्तन किया। कलियुगी समय को हमने सतयुगी समय में बदला है। कुछ महान आत्माओं ने समय को हमारे पहले बदला तो हम रचना हो गये। और समय को परिवर्तन करने में मेरा कोई महत्व नहीं है। और महत्व तो रचयिता का ही है, नही की रचना का।

सारे कल्प में पूजन तो रचयिता का ही होता है, रचना का नहीं। तभी बाबा कहते हैं जल्दी सम्पूर्ण बनो।

ड्रामा के आधार से हम देखें तो पाँच हजार वर्ष के ड्रामा में यह संगमयुग बहुत छोटा-सा युग है। और यह सब रिपीट होता है नथिंग न्यू।

अगर ड्रामा अनुसार जो भी Xआत्मायें हैं वह भी फिक्स है। यह जो X आत्मायें सम्पूर्ण बनें तो उनकी सम्पूर्णता और पवित्रता से ही विश्व का और समय का परिवर्तन होगा। अगर यह X आत्मायें कल सम्पूर्ण बनें तो विश्व का परिवर्तन कल हो सकता है। और वह आत्मायें कुछ साल बाद सम्पूर्ण बनें तो परिवर्तन भी कुछ साल बाद होगा। हमको मालूम नहीं है कि ड्रामा अनुसार यह कब सम्पूर्ण बनेंगे। और परिवर्तन होगा यह ड्रामा अनुसार समय भी फिक्स है परंतु हम उन X आत्माओं में आवें तो हम रचयिता बन जायेंगे और सारे कल्प में महत्व होगा और अगर नहीं आये तो हमारा महत्व ही नहीं होगा। और यह ड्रामा तो रिपीट होता है। बार-बार वही होगा।

हमें उस बात पर पूरा-पूरा ध्यान रखना पड़े। और अगर इस बात का हम अटेन्शन रखते हैं तो हमें आगे बढ़ने में मदद मिलेगी।

दुःखी-अशान्त आत्माओं को दुःख से मुक्त कौन करायेगा?

हम कोई दुःखी-अशान्त आत्माओं को देखते है तो हमारे मन में रहम के भाव उत्पन्न होते हैं, परंतु बाबा कहते हैं उनको दुःख से आप ही छुड़ायेंगे। कैसे?

आज दुनिया में सब आत्मायें दुःखी है, परेशान है। यह कलियुगी समय से उनको मुक्त होना है परंतु मार्ग मालूम नहीं और मार्ग पर चलने की हिम्मत और शक्ति भी नहीं है। बाबा ने हमें बताया है कि हम रचयिता है। हमने ही कलियुगी समय को बदल कर सतयुगी समय में परिवर्तन किया था और अभी कर रहे हैं।

हम सम्पूर्ण बन जाये तो यह समय परिवर्तन होगा और यह दुःखी अशान्त आत्मायें हैं वह दुःख के समय के समाप्ति के कारण मुक्त होकर शान्तिधाम में चले जायेंगे। दुःखी आत्माओं को दुःख से मुक्त करना है तो इस समय को परिवर्तन करना होगा। इसके लिए मुझे ही जल्दी सम्पूर्ण बनना होगा। अगर हम सम्पूर्ण बनने में देरी करेंगे तो परिवर्तन में देरी होगी। और यह अशान्त आत्मायें और ज्यादा दुःखी होगी। तो जब भी हम ऐसी दुःखी-अशान्त आत्माओं को देखें तो हमें यही ख्याल रहना चाहिए कि मेरे सम्पूर्ण बनने से ही समय का परिवर्तन होगा और इससे ही उन आत्माओं को मुक्ति मिलेगी। तो मुझे ही जल्दी सम्पूर्ण बनना है।

यही आत्मायें यह संस्कार मर्ज रूप में लेकर परमधाम में जायेंगी। और द्वापर युग में जब धरा पर आयेगी तो उनको यह स्मृति मर्ज रूप में होगी कि हमारे इष्ट ने हमें बचाया था तो हमारी पूजा करना आरंभ करेंगे। जब भी दुःख की अनुभूति होगी तो यही स्मृति इमर्ज होगी कि हमको दुःखों से मुक्त हमारे इष्ट ने ही कराया था। तो इष्ट को ही याद करेंगे। तभी तो बाबा हमें कहता है कि आपके भक्त लोग आपको पुकार रहे हैं आप रहम करो।

प्राथमिक समय और गौण समय

हमारे पुरुषार्थ का समय हमारा प्राथमिक समय है। इस समय में हम अपना भाग्य जो भी बनाने चाहे वह बना सकते हैं। और उसका फल पूरे कल्प में मिलता रहेगा। हम रचयिता बन पूजन और महिमा लायक, स्वर्ग के अधिकारी बन सकते हैं। यह समय सदैव याद रहना चाहिए।

गौण समयः- ड्रामा अविनाशी है यह रिपीट होता है। यह जो कुछ हुआ है वह वापस होना है - यह गौण समय है।

हम प्राथमिक समय पर आधारित रह सकते हैं। गौण समय के आधार पर हम सम्पूर्ण नहीं बन सकते हैं। क्योंकि ड्रामा अनुसार हमारा शरीर का विनाश कब होगा यह तो हमें मालूम नहीं है।

हमें पता है विनाश होने वाला है परंतु हम दूसरे लोगों को पूछते है कि विनाश कब होगा?

प्रकृति तो हमारी रचना है हम रचयिता है। आगे हमने देखा उस प्रमाण हमारी सम्पूर्णता के रेफरन्स पर ही विनाश की तारीख है। इसलिए बाबा ने कहा है कि विनाश की घड़ी के काँटे आप हो। इसलिए हम सम्पूर्ण बनने में देरी करेंगे तो विनाश भी उसी प्रमाण ही होगा। हम कई बार यह प्रश्न पूछते हैं कि विनाश कब होगा तो मतलब साफ है कि विनाश हम नहीं करते, कोई और करता है। तो हम रचयिता नहीं है, हम रचना है। तो अगर हम विनाश की राह देख रहे हैं तो हम रचना है, हमारा सारे कल्प में महत्व ही नहीं है और यह रिपीट होगा। हर कल्प में जब जब भगवान धरा पर आयेंगे तब हर बार में रचना बनेंगे। मेरे लिये तो विनाश से भी ज्यादा भयानक है यह। तो मुझे अपने को सम्पूर्ण बनाना ही पड़ेगा और वह भी विनाश के समय से पहले तो मैं रचयिता बन सकूँ। तो जब भी हमारे मन में यह पश्न उठे कि विनाश कब होगा तो हमें इस बात का अटेन्शन रखना चाहिए कि यह रचयिता का प्रश्न नहीं है, रचना का है।

विषय सूची

भाग - 1

1 समय हमारी रचना है.....................(11-48)

1-1 हम रचयिता है 13

1-2 अब नहीं तो कब नहीं 22

1-3 रचयिता का कर्तव्य 31

2 अंतिम समय ....(49-104)

2-1 अंतिम समय के नजारे 51

2-2 अंतिम समय का अभ्यास...........................85

3 संगम के समय का महत्व ....(105-138)

4 समय का अटेन्शन एवं अभ्यास ....(139-216)

4-1 अटेन्शन एवं अभ्यास 141

भाग - 2

4-2 आलस्य और अलबेलापन

4-3 पश्चाताप

4-4 दिनचर्या

5 समय के साथ शक्तियाँ

6 समय और संपूर्णता

7 ये समय पुनरावर्तित (रिपीट) है

8 कर्मो कि गुह्य गति

8-1 धर्मराज

8-2 कर्मो कि गुह्य गति

1
समय हमारी रचना है

1-1 हम रचयिता है

वायुमण्डल का असर नाजुक को होता है। **वायुमण्डल कोई रचयिता नहीं है। वह तो रचना है।** रचयिता ऊंचा व रचना? (रचयिता) तो फिर रचयिता रचना के अधीन क्यों?

25.1.70

अब एक सेकेण्ड भी नहीं गंवाना है। चेक आप कर सकते हो। अब समय बहुत थोड़ा रह गया है। समय भी बेहद की वैराग्य वृत्ति को उत्पन्न करता है। लेकिन **समय के पहले जो अपनी मेहनत से करेंगे तो उनका फल ज्यादा मिलेगा। जो खुद नहीं कर सकेंगे उन्हों के लिये समय हेल्प करेगा। लेकिन वह समय की बलिहारी होगी। अपनी नहीं।**

26.1.70

जैसे समय की रफ्तार को देख रहे हो; और चैलेंज भी करते हो तो जो चैलेंज की है वह सम्पन्न तब होगी जब आप लोगों की स्थिति सम्पन्न होगी। यह जो चैलेंज करते हो वह परिवर्तन किसके आधार पर होगा? उसका फाउन्डेशन कौन है? आप लोग ही फाउन्डेशन हो ना। अगर फाउन्डेशन तैयार हो जाये तब फिर उसके बाद नम्बरवार राजधानी भी तैयार हो।

2.8.72

प्रकृति आपकी रचना है, आप तो मास्टर रचयिता हो ना। तो सोचो, जब मेरी रचना में यह पावर है और मुझ मास्टर रचयिता में यह पावर नहीं हो, यह श्रेष्ठ

आत्मा का लक्षण है? आज प्रकृति की पावर एक सेकेण्ड में जो चाहे वह प्रेक्टिकल में करके दिखाती है। इसलिए आज की भटकी हुई आत्माएं परमात्म-शक्ति ईश्वरीय शक्ति वा साईलेन्स की शक्ति को प्रेक्टिकल सबूत रुप में अर्थात् प्रमाण रुप में देखना चाहते हैं। कोई अपकार करे, आप एक सेकेण्ड में अपकार को उपकार में परिवर्तित कर लो। कोई अपने संस्कार वा स्वभाव के रुप में आपके सामने परीक्षा के रुप में आवे लेकिन आप सेकेण्ड में अपने श्रेष्ठ संस्कार, एक की स्मृति से ऐसी आत्मा के प्रति भी रहमदिल के संस्कार वा स्वभाव धारण कर सकते हो। कोई देहधारी दृष्टि से सामने आये आप एक सेकेण्ड में उनकी दृष्टि को आत्मिक दृष्टि में परिवर्तित कर लो। कोई गिराने की वृत्ति से, वा अपने संगदोष में लाने की दृष्टि से सामने आवे तो आप उनको सदा श्रेष्ठ संग के आधार से उसको भी संगदोष से निकाल श्रेष्ठ संग लगाने वाले बना दो। ऐसी परिवर्तन करने की युक्ति आने से कब भी विघ्न से हार नहीं खायेंगे।

24-12-72

निमित्त बने हुए महावीर जो हैं वह हैं मानों समय की घड़ी। जैसे घड़ी समय स्पष्ट दिखाती है, इसी प्रकार महावीर जो बनते हैं, निमित्त बने हुए हैं, वह भी घड़ी हैं, तो घड़ी में समय नज़दीक दिखाई पड़ता है या दूर?

11.4.73

जैसे समय की रफ्तार को देख रहे हो और चैलेंज भी करते हो तो जो चुनौती दी है, वह सम्पन्न तब होगी, जब आप लोगों की स्थिति सम्पन्न होगी। यह जो चुनौती करते हो-वह परिवर्तन किसके आधार पर होगा? उनकी आधार-शिला (नींव) कौन है?

2.8.73

आप जितना-जितना स्वयं समर्थ बनेंगे, उतना ही सृष्टि को परिवर्तन करने

का समय समीप ला सकेंगे। ड्रामा-अनुसार समय भले ही निश्चित है, लेकिन वह ड्रामा भी किसके आधार से बना है? आखिर आधार तो होगा ना? उसके आधार-मूर्त तो आप हो।

28.1.74

जैसे समय की समीपता दिखाई देती है क्या वैसे ही अपनी स्थिति की समीपता व समानता दिखाई देती है? जैसे दुनिया के लोग आपके सुनाये हुए समय प्रमाण दो वर्ष का इन्तजार कर रहे हैं, क्या ऐसे भी आप स्थापना के और विनाश का कार्य कराने वाले दो वर्ष के अन्दर अपने कार्य को और अपनी स्टेज व स्थिति को सम्पन्न बनाने के इन्तजाम में लगे हुए हो? या इन्तजाम करने वाले अलबेले और इन्तजार करने वाले तेज हैं।

3.2.74

आधारमूर्त्त आत्माओं का संकल्प ही विनाश-अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रेरणा का आधार है।

16.1.75

स्वयं के परिवर्तन से ही समय का परिवर्तन कर सकेंगे। स्वयं को देखो तो समय का मालूम स्वत: ही पड़ जायेगा। परिवर्तन के समय की घड़ी आप हो। तो स्वयं की घड़ी में टाइम देखो। सारे विश्व का अर्थात् सर्व आत्माओं का अटेन्शन अब आप निमित्त बनी हुई समय की घड़ी पर है कि अब और कितना समय रहा हुआ है।

6.2.76

समय के परिवर्तन का इन्तज़ार बहुत करते हो। स्वयं के परिवर्तन के लिए कम सोचते हो और समय के परिवर्तन के लिये सोचते हो कि होना चाहिये। **स्वयं**

रचयिता हैं, समय रचना है। रचयिता अर्थात् स्वयं के परिवर्तन से रचना अर्थात् समय का परिवर्तन होना है। परिवर्तन के आधारमूर्त्त स्वयं आप हो। समय की समाप्ति अर्थात् इस पुरानी दुनिया के परिवर्तन की घड़ी आप हो। सारे विश्व की आत्माओं की आप घड़ियों के ऊपर नजर है कि कब यह घड़ियाँ समाप्ति का समय दिखाती हैं। आपको मालूम है कि आपकी घड़ी में कितना बज़ा है? आप बताने वाले हो या पूछने वाले हो? इन्तज़ार है क्या? समय दिखाने वालों को समय के प्रति हलचल तो नहीं है ना? हलचल है अथवा अचल हो? क्या होगा, कब होगा, होगा या नहीं होगा? ड्रामा अनुसार समय-प्रति-समय हिलाने के पेपर्स आते रहे हैं और आयेंगे भी।

7.2.76

आप पूर्वज आत्माओं के आधार से सृष्टि का समय और स्थिति का आधार है।

ऐसे नहीं समझो कि हमारे कर्म का आधार सिर्फ अपने कर्म के हिसाब से प्रालब्ध प्रति है। लेकिन पूर्वज आत्माओं के कर्मों की प्रालब्ध स्वयं के साथ-साथ सर्व आत्माओं के और सृष्टि चक्र के साथ सम्बन्धित हैं।

2-6-77

अभी ड्रामानुसार समय मिला है, यह अपना लक (भाग्य) समझ समय का लाभ उठाओ। विनाश की घड़ी के कांटे आप हो। आपका सम्पन्न होना समय का सम्पन्न होना है। इसलिए सदा स्व-चिन्तन, स्वदर्शन चक्रधारी बनो।

30-6-77

दादी जी से -

समय समीप आ रहा है वा आप समय के समीप आ रही हो? स्वयं को ला

रहे हैं वा समय स्वयं को खींच रहा है? ड्रामा आपको चला रहा है या आप ड्रामा को चला रहे हैं? मास्टर आप हो या ड्रामा? रचता ड्रामा है या आप हो?

आगे चलते हुए ड्रामा में कया होना है वह इतना स्पष्ट टच होगा जो फिर ऐसा नहीं कहेंगे कि जो होना होगा वह होगा। अथार्टी से कहेंगे कि यही ड्रामा में होना है। और वही होगा। जैसे भविष्य प्रालब्ध स्पष्ट है वैसे ड्रामा में क्या होना है वह भी स्पष्ट होगा।

यह तब होगा जब थोड़ा सा एकान्तवासी होंगे। जितना एकान्तवासी होंगे उतना टचिंग्स अच्छी आयेंगी।

20.1.81

ब्राह्मण आत्मायें आदि रचना है। अनादि रचना तो सब हैं, सारे विश्व की आत्मायें रचना हैं। लेकिन आप अनादि और आदि रचना हो।

16-2-88

दुनिया वालों को समय करायेगा और समय पर मजबूरी से करेंगे। बच्चों को बाप समय के पहले तैयार करते हैं और बाप की मोहब्बत से करते हो। अगर मोहब्बत से नहीं किया वा थोड़ा किया तो क्या होगा? मजबूरी से करना ही पड़ेगा।

13.12.90

समय पर ठीक हो जायेंगे। बाप को भी यह पक्का कराते हैं कि आप देखना हम समय पर बहुत नम्बर आगे ले लेंगे। लेकिन बापदादा ऐसे बच्चों को सदा सावधान करते हैं कि समय पर जागे और समय प्रमाण परिवर्तन किया तो यह कोई बड़ी बात नहीं हैं। लेकिन समय के पहले परिवर्तन किया तो आपके पुरुषार्थ में यह पुरुषार्थ की मार्क्स जमा होगी और अगर समय पर किया तो समय को मार्क्स मिलेगी आपको नहीं मिलेगी। तो टोटल रिज़ल्ट में अलबेले या आलस्य के

नींद के कारण धोखा लेंगे। यह भी कुम्भकरण के नींद का अंश है।

15-4-92

आपका पुरुषार्थ तीव्र गति का है वा समय तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है, क्या कहेंगे? समय तेज है और आप ढीले हो? समय रचता है या रचना है? रचना चाहे कितनी भी पॉवरफुल हो, फिर भी रचता तो रचता ही होगा ना। तो समय का आह्वान आपको करना है या समय आपका आह्वान करेगा? समय आपका आह्वान करे कि आओ मेरे मालिक!

30.11.92

समय तो समीप आना भी है और लाना भी है। ड्रामानुसार आना तो है ही लेकिन लाने वाले कौन हैं? आप ही हो ना?

31.12.94

सम्पूर्णता समीपता का आधार है। तो पंजाब की विशेषता है स्वयं को सम्पूर्ण बनाये अन्तिम समय को समीप लाने वाले। हिम्मत है? जितना-जितना स्वयं को सम्पन्न बनाते जायेंगे उतना सम्पूर्णता और समीपता नजदीक आ जायेगी।

9.1.95

चलता है.... होता है.... हो जायेगा..... समय आयेगा तो ठीक हो जायेगा.... तो समय आपका शिक्षक है या बाबा शिक्षक है? कौन है? अगर समय पर परिवर्तन करेंगे तो आपका शिक्षक तो समय हो गया! आपकी रचना आपका शिक्षक हो - ये ठीक है?

3.4.96

समय रचना है तो हे रचता आत्मायें रचना को शिक्षक नहीं बनाओ।

ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा। आदि में देखा इतना तन लगाया, मन लगाया, धन लगाया, लेकिन जरा भी लगाव नहीं रहा।

मेरापन नहीं। समय , श्वांस अपने प्रति नहीं, उससे भी बेहद के वैरागी रहे।

18-1-98

अभी समय भी फास्ट गति ले रहा है, सिर्फ समय बार-बार फास्ट होकर आप लोगों को ऐसे पीठ करके (मुड़ करके) देखता है कि हमारे मालिक तेज रफतार से आ रहे हैं वा समय फास्ट जा रहा है? मालिक तो आप हो ना? तो आपको बार-बार देखता है, फास्ट आ रहे हैं! इसलिए इस वर्ष क्वालिटी की सेवा में विशेष अटेन्शन दो।

30.3.99

आज विशेष अटेन्शन दिला रहे हैं कि समय की समाप्ति अचानक होनी है। यह नहीं सोचो कि मालूम तो पड़ता रहेगा, समय पर ठीक हो जायेंगे। जो समय का आधार लेता है, समय ठीक कर देगा, या समय पर हो जायेगा.... उनका टीचर कौन? समय या स्वयं परम-आत्मा? परम-आत्मा से सम्पन्न नहीं बन सके और समय सम्पन्न बनायेगा, तो इसको क्या कहेंगे? समय आपका मास्टर है या परमात्मा आपका शिक्षक है? तो ड्रामा अनुसार अगर समय आपको सिखायेगा या समय के आधार पर परिवर्तन होगा तो बापदादा जानते हैं कि प्रालब्ध भी समय पर मिलेगी।

30-11-99

कब विनाश होगा, कब विनाश होगा, सब रूहरिहान में पूछते हैं, बाहर से नहीं बोलते लेकिन अन्दर बात करते हैं पता नहीं कब विनाश होगा, दो साल में

होगा 10 साल में होगा, कितना साल में होगा? आप क्यों समय का इन्तजार करो, समय आपका इन्तजार कर रहा है।

एवररेडी तो हो जाओ ना! हो जायेंगे, हो जायेंगे कहके बाप को बहुत समय खुश किया है। अभी ऐसा नहीं करना। होना ही है, करना ही है। बाप समान बनना है।

31-12-05

कई पूछते हैं थोड़ा सा इशारा तो दे दो ना - 10 साल लगेंगे, 20 साल लगेंगे, कितना समय लगेगा!

तो बाप बच्चों से प्रश्न करता है, बाप से तो प्रश्न बहुत करते हैं ना, तो आज बाप बच्चों से प्रश्न करता है - समय को समीप लाने वाले कौन? ड्रामा है लेकिन निमित्त कौन? आपका एक गीत भी है, किसके रोके रूका है सवेरा। है ना गीत? तो सवेरा लाने वाला कौन? विनाशकारी तो तड़प रहे हैं कि विनाश करें, विनाश करें... लेकिन नव निर्माण करने वाले इतना रेडी हैं? क्या पुराना खत्म हो जाए, नया निर्माण हो नहीं तो क्या होगा?

28-03-06

समय आपका इन्तजार कर रहा है। बापदादा मुक्ति का गेट खोलने का इन्तजार कर रहा है। एडवांस पार्टी आपका आह्वान कर रही है। क्या नहीं कर सकते हो? मास्टर सर्वशक्तिवान तो हो ही। दृढ़ संकल्प करो यह करना है, यह नहीं करना है, बस। नहीं करना है, तो दृढ़ संकल्प से 'नहीं को नहीं' करके दिखाओ। मास्टर तो हो ही ना!

15/12/2007

अभी लक्ष्य रखो होना ही है, करना ही है, समाप्ति को समीप लाओ। आप थोड़े हिलते हो ना तो समाप्ति भी दूर हो जाती है। आपको ही समाप्ति को

समीप लाना है क्योंकि राज्य करने वाले तैयार नहीं होंगे तो समय क्या करेगा? इसलिए सब बहाना, कारण, कारण शब्द को समाप्त करो। निवारण सामने लाओ।

15-12-09

कई बच्चे बहुत मीठी-मीठी रूहरिहान करते हैं, कहते हैं बाबा हम तैयार हो ही जायेंगे। क्योंकि समय जितना नजदीक आयेगा, हालतें हलचल में आयेंगी तो वैराग्य तो आटोमेटिकली आ जायेगा। लेकिन आपका टीचर कौन हुआ? समय या बाप? समय तो आपकी रचना है। तो बाप अभी इशारा दे रहा है कि बहुत समय का तीव्र पुरुषार्थ अन्त में पास विद ऑनर बनायेगा। पास तो सभी होंगे लेकिन पास विद ऑनर बनने वाला बहुत समय का लगातार तीव्र पुरुषार्थ करने वाला आवश्यक है। इसलिए आज की तारीख नोट कर दो, अगर अब भी कभी-कभी, समथिंग हो जायेंगे, कर ही लेंगे, यह शब्द आगे भी चलते रहे... बाप का प्यार तो सदा ही है। लास्ट दाने पर भी बाप का प्यार है।

17-02-11

अब समय भी आपका सहयोगी बनने के लिए तैयार है हालतें बदल रही हैं जो हालतें न चाहते भी भगवान की याद दिलाती हैं।

13-04-11

1-2 अब नहीं तो कब नहीं

अभी कमी रखने का समय बीत चुका। अब समय बहुत तेज आ रहा है। अगर समय तेज चला गया और खुद ढीले रह गये तो फिर क्या होगा? मंजिल पर पहुँच सकेंगे? फिर सतयुगी मंजिल के बजाये त्रेता में जाना पड़ेगा। जैसे समय तेज दौड़ रहा है वैसे खुद को भी दौड़ना है। स्थूल में भी जब कोई गाड़ी पकड़नी होती है तो समय को देखना पड़ता है। नहीं तो रह जाते हैं। **समय तो चल ही रहा है। कोई के लिए समय को रूकना नहीं है।** अब ढीले चलने के दिन गये। दौड़ी के भी दिन गये। अब है जम्प लगाने के दिन। **कोई भी बात की कमी फील होती है तो उसको एक सेकेण्ड में परिवर्तन में लाना इसको कहा जाता है जम्प।**

25.1.70

समय की कौन सी तेजी देखते हो? समय में बीती को बीती करने की तेजी है। वही बात को समय फिर कब रिपीट करता है? तो पुरुषार्थ की जो भी कमियां हैं उसमें बीती को बीती समझ आगे हर सेकेण्ड में उन्नति को लाते जाओ तो समय के समान तेज चल सकते हो। **समय तो रचना है ना। रचना में यह गुण है तो रचयिता में भी होना चाहिए।**

जैसे ड्रामा में हर सेकेण्ड अथवा जो बात बीती, जिस रूप से बीत गई वह फिर से रिपीट नहीं होगी फिर रिपीट होगी 5000 वर्ष के बाद। वैसे ही कमजोरियों को बार-बार क्यों रिपीट करते हो? अगर यह कमजोरियां रिपीट न होने पायें तो फिर पुरुषार्थ तेज हो जायेगा।

कमजोरी की बीती हुई बातें फिर संकल्प में भी नहीं आनी चाहिए। अगर संकल्प चलते हैं तो वाणी और कर्म में आ जाते हैं। संकल्प में ही खत्म कर देंगे तो वाणी कर्म में नहीं आयेंगे। फिर मन वाणी कर्म तीनों शक्तिशाली हो जायेंगे।

26.1.70

जितना अपने सामने सम्पूर्ण स्टेज समीप होती जायेगी उतनी विश्व की आत्माओं के आगे आप अन्तिम कर्मातीत स्टेज का साक्षात्कार स्पष्ट होता जायेगा। इससे जज कर सकते हो कि साक्षात्कार मूर्त बन विश्व के आगे साक्षात्कार कराने का समय नजदीक है वा नहीं। समय तो बहुत जल्दी -जल्दी दौर लगा रहा है। 10 वर्ष कहते कहते 24 वर्ष तक पहुँच गये हैं। समय की रफतार अनुभव से तेज तो अनुभव होती है ना। इस हिसाब से अपनी सम्पूर्ण स्टेज भी स्पष्ट और समीप होने चाहिए।

28.2.72

समय पर जो भी बात स्वत: होती है उसका गायन नहीं होता लेकिन बिना समय के आधार से कोई कार्य करता है तो कमाल गाई जाती है। मौसम के फल की इतनी वैल्यू नहीं होती है लेकिन उस फल को बिगर मौसम प्राप्त करो तो वैल्यू हो जाती है। तो समय आपे ही सम्पूर्ण बना देगा, यह भी नहीं**। सम्पूर्ण बन समय को समीप लाना है। समय रचना है, आप रचयिता हो। रचयिता रचना के आधार पर नहीं होते।**

24-12-72

अभी फिर भी समय है, बहुत थोड़ा। अभी तो बाप-दादा और सहयोगी श्रेष्ठ आत्मायें आप पुरूषार्थी आत्माओं को एक का हज़ार गुना सहयोग देकर, सहारा देकर, स्नेह देकर और सम्बन्ध के रूप में बल देकर आगे बढ़ा सकते हैं। लेकिन थोड़े समय के बाद यह बातें अर्थात् लिफ्ट का मिलना भी बन्द हो जायेगा। इसलिए अभी जो-कुछ भी लेना चाहो वह ले सकते हैं। फिर बाद में बाप के रूप का स्नेह बदल कर सुप्रीम जस्टिस का रूप हो जावेगा।

30.5.73

ऐसे नहीं कहना है कि इतना समय पड़ा है, कमी दूर हो ही जाएगी। नहीं।

यह बुद्धि में रखना है कि अभी नहीं तो कभी नहीं। हर संकल्प, हर सेकेण्ड के लिए यह स्लोगन कि अब नहीं तो कभी नहीं। जब ऐसे अभी के संस्कार भरेंगे तो ऐसी **अभी कहने वाली आत्मायें सतयुग के आदि में आयेंगी। कभी कहने वाले मध्य में आयेंगे। कभी कहने वाले समय का इन्तज़ार करते हैं। तो पद में भी इन्तज़ार करेंगे।**

24.1.76

समय भी आपकी क्रियेशन (रचना) है। क्रियेशन के आधार पर क्रियेटर (रचियता) का पुरुषार्थ हो अर्थात् समय के आधार पर स्वयं का पुरुषार्थ हो तो उसे क्रियेटर कहा जायेगा।

आप श्रेष्ठ आत्माएं सृष्टि के आधार मूर्त्त हो, ऐसे आधार मूर्त्त, समय के व किसी भी प्रकार के आधार पर रहें तो अधीन कहेंगे वा आधार मूर्त्त कहेंगे? तो अपने आप को चेक करो कि सृष्टि के आधार मूर्त्त आत्मा किसी भी प्रकार के आधार पर तो नहीं चल रहे है? सिवाए एक बाप के आधार मूर्त्त किसी भी हद के सहारे के आधार पर चलने वाली आत्मा तो नहीं है? वायदा तो यही किया है मेरा तो एक ही सहारा है लेकिन प्रेक्टिकल क्या है?

12-6-77

समय के प्रमाण स्व का पुरुषार्थ। समय तेज़ भाग रहा है या स्वयं भी हाई जम्प दे रहे हो? **समय की रफतार के अनुसार अब हाई जम्प के बिना पहुँच नहीं सकते। अभी दौड़ने का समय गया। हाई जम्प लगाओ। पुरुषार्थ में 'तीव्र' शब्द एड करो।** याद में रहते हो, यह कोई बड़ी बात नहीं लेकिन याद के साथ-साथ सहजयोगी, निरन्तर योगी हो। अगर यह नहीं तो याद भी अधूरी रहेगी।

26.12.79

विश्व के उद्धारमूर्त को इन आत्माओं के भी उद्धार का संकल्प उत्पन्न

होता है। वा स्व के उद्धार में ही बिजी हो। अपने सेवाकेन्द्रों में ही बिजी हो? सर्व आत्माओं के पिता के बच्चे हो, सर्व आत्मायें आपके भाई हैं। हे मास्टर नालेजफुल अपने भाईयों के तरफ संकल्प की नजर भी कब जाती है? विशाल बुद्धि दूरांदेशी अनुभव करते हो? छोटी-छोटी बातों में तो समय नहीं जा रहा है, ऊंची स्टेज पर स्थित हो विशाल कार्य दिखाई देता है।

वैज्ञानियों के सहयोग (माइक, हैडफोन आदि) कारण सुन रहे हो। रिफाइन इन्वेन्शन तैयार कर आप श्रेष्ठ आत्माओं को गिफ्ट में दे चले जायेंगे। इन आत्माओं का भी कितना त्याग है। कितनी मेहतनत है। कितना दिमाग है। मेहनत खुद करते हो प्रालब्ध आपको देते। इन आत्माओं के कल्याण की भी विद्धि संकल्प में आती है? वा यह समझकर छोड़ देते कि यह तो नास्तिक हैं। यह क्या जानें? लेकिन नास्तिक हैं वा आस्तिक हैं। फिर भी बच्चे तो हैं ना। आपके भाई तो हैं। ब्रदरहुड के नाते से भी इन आत्माओं को भी किसी प्रकार से वर्सा तो मिलेगा ना। विश्व-कल्याणकारी के रूप में इस तरफ कल्याण की नजर नहीं डालेंगे?

15.3.81

सूर्यवंशी की निशानी है - तीव्र पुरुषार्थ। सोचा और किया। ऐसे नहीं, सोचा एक वर्ष पहले और किया दूसरे वर्ष में। तीव्र पुरुषार्थ अर्थात् उड़ती कला वाले। अभी चढ़ती कला का समय भी चला गया। अब तो आगे बढ़ने का बहुत सहज साधन मिला हुआ है सिर्फ एक शब्द की गिफ्ट है - वह कौन सी? 'मेरा बाबा', यही एक शब्द ऐसी लिफ्ट है जो एक सेकण्ड में नीचे से ऊपर जा सकते हो।

22-3-82

श्रेष्ठ आत्मायें सदा पहले से ही एवररेडी रहती हैं। समय प्रमाण शस्त्रधारी बनने में 'समय' शिक्षक बन जाता है। समय रूपी शिक्षक के आधार पर चलने वाले सर्व शक्तिवान शिक्षक की शिक्षा से एवररेडी न बनने के कारण कभी समय

पर धोखा भी खा लेते हैं। धोखा खाने से स्मृति के होश में आते हैं। इसलिए सर्वशक्तिवान शिक्षक के श्रेष्ठ शिक्षाधारी बनो। समय रूपी शिक्षक के शिक्षाधारी नहीं।

आप समय रूपी रचना के मास्टर रचता, समय अर्थात् युग परिवर्तक हो। डबल काल पर विजयी हो।

3-12-84

समय बहुत तीव्रगति से आगे बढ़ रहा है। जैसे समय आगे बढ़ रहा है, तो समय पर मंजिल पर पहुँचने वाले को किस गति से चलना पड़े? समय कम है और प्राप्ति ज्यादा करनी है। तो थोड़े समय में अगर ज्यादा प्राप्ति करनी हो तो तीव्र करना पड़ेगा ना। समय को देख रहे हो और अपने पुरुषार्थ की गति को भी जानते हो। तो समय अगर तेज है और अपनी गति तेज नहीं है तो समय अर्थात् रचना आप रचता से भी तेज हुई। रचता से रचना तेज चली जाए तो उसे अच्छी बात कहेंगे? रचना से रचता आगे होना चाहिए।

10-1-88

अगर ज़रा भी कमी होगी तो माया छोड़ेगी नहीं, उसी जगह से हिलायेगी।

यह नहीं सोचो- 2 वर्ष या 3 वर्ष में हो जायेंगे। ब्राह्मणों के लिए स्लोगन है - 'अब नहीं तो कभी नहीं'। अब समय की रफ़्तार के प्रमाण कोई भी समय कुछ भी हो सकता है। इसलिए तीव्र पुरुषार्थी बनो।

13-12-89

हर समय यह याद रहे कि कि 'अब नहीं तो कब नहीं'। जो घड़ी बीत गई वह फिर से नहीं आयेगी। एक घड़ी व्यर्थ जाना अर्थात् कितने कदम व्यर्थ गये? पद्म व्यर्थ गये! इसलिए हर घड़ी यह स्लोगन याद रहे - 'जो समय के महत्त्व को

जानते है वह स्वत: ही महान बनते हैं।' स्वयं को भी जानना है और समय को भी जानना है।

18-1-1990

बाप तो उस समय रुकेंगे नहीं। अभी रुक रहे हैं। अभी समय दिया है, उस समय नहीं रुकेंगे। उस समय तो सेकण्ड में उड़ेंगे। अभी नये-नये बच्चों के लिए लेट हुआ है लेकिन टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है। अभी तो नई दुनिया आने के लिए, नये-नये बच्चों के लिए रुकी हुई है कि यह भी लास्ट सो फास्ट और फर्स्ट नम्बर तक पहुंच जाएं।

19-3-90

शक्तिहीन समय पर क्यों हो जाते? बापदादा ने देखा है, मैजारिटी बच्चों की लीकेज है, शक्तियां लीकेज होने के कारण कम हो जाती हैं और लीकेज विशेष दो बातों की है - वह दो बातें हैं - **संकल्प और समय वेस्ट जाता है।** खराब नहीं होता लेकिन व्यर्थ, समय पर बुरा कार्य नहीं करते हैं लेकिन जमा भी नहीं करते हैं। सिर्फ देखते हैं आज बुरा कुछ नहीं हुआ लेकिन अच्छा क्या जमा किया?

अब नहीं तो कब नहीं, यह हर घड़ी याद रहे। हो जायेगा, कर लेंगे..... अब नहीं तो कब नहीं। ब्रह्मा बाप का यही तीव्रगति का पुरुषार्थ रहा तब नम्बरवन मंजिल पर पहुंचा। तो जो बाप ने समर्थियां दी हैं, आज समर्थ दिवस पर याद आई ना! बचत की स्कीम बनाओ। संकल्प की बचत, समय की बचत, वाणी की बचत, जो यथार्थ बोल नहीं हैं, अयथार्थ व्यर्थ बोल की बचत।

18-01-06

समय का भी महत्व अटेन्शन में रखो। समय पूछ के नहीं आना है। कई बच्चे अभी भी कहते हैं, सोचते हैं, कि थोड़ा सा अन्दाज मालूम होना चाहिए।

चलो 20 साल हैं, 10 साल हैं, थोड़ा मालूम हो। लेकिन बापदादा कहते हैं समय का फाइनल विनाश का छोड़ो, आपको अपने शरीर के विनाश का पता है? कोई है जिसको पता है कि मैं फलाने तारीख को शरीर छोडूंगा, है पता? और आजकल तो ब्राह्मणों के जाने का भोग बहुत लगाते हो। कोई भरोसा नहीं। इसलिए समय का महत्व जानो।

16-11-06

बापदादा खुश होते हैं कि लेट का बोर्ड तो लग गया है लेकिन टू लेट का नहीं लगा है। इसलिए आये पीछे हैं लेकिन तीव्र पुरुषार्थी बन आगे जाना है। अगर इस संगम के समय को एक-एक सेकण्ड सफल करेंगे तो सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है लेकिन अटेन्शन प्लीज़। सेकण्ड भी व्यर्थ न जाये। अटेन्शन को भी अण्डरलाइन करके चलना पड़े।

15.11.2008

अभी फिर भी बापदादा पहले से ही अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि अभी फिर भी चेक करके चेन्ज करने का तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो मार्जिन है लेकिन कुछ समय के बाद अचानक टूलेट का बोर्ड लगना ही है। फिर नहीं कहना कि बाबा ने तो बताया ही नहीं। इसलिए अभी पुरुषार्थ का समय तो गया लेकिन तीव्र पुरुषार्थ का समय अभी भी है तो चेक करो लेकिन सिर्फ चेक नहीं करना, चेन्ज करो साथ में।

15.12.2008

बापदादा का वायदा है कि भले अभी लास्ट में आये हैं लेकिन अभी लेट का बोर्ड लगा है, टूलेट का नहीं लगा है। तो कोई भी लास्ट इज फास्ट और फास्ट इज फर्स्ट ले सकते हो। यह नहीं समझो तो हम तो बहुत देरी से आये हैं लेकिन अगर अभी भी डबल तीव्र पुरुषार्थ लक्ष्य और लक्षण प्रमाण दोनों समान बनायेंगे, लक्ष्य ऊँचा और लक्षण कम तो फर्स्ट नहीं हो सकते। लेकिन अगर लक्ष्य और

लक्षण समान बनाते चलेंगे तो आप एक्जैम्पुल बन सकते हो, लास्ट और फर्स्ट का। इसीलिए पुरुषार्थ का लक्ष्य रखो। फिर अगर टूलेट का बोर्ड लग गया तो फर्स्ट नम्बर नहीं आ सकेंगे।

31.12.2008

अभी तो टूलेट का बोर्ड नहीं लगा है, अभी तो समय पड़ा है। पुरुषार्थ कर रहे हैं, पहुंच जायेंगे। तो माया भी समझती है एक तो आने दिया, दूसरा यह तो हमारे को साथ दे रहे हैं, खातिरी कर रहे हैं, तो जो माया को पहचान लेते हैं क्योंकि कोई कोई बच्चे पहचानने में भी गलती कर लेते हैं, माया की मत है वा बाप की मत है, न पहचानने के कारण माया के प्रभाव में आ जाते हैं।

22.02.2009

अब नहीं तो कब नहीं। सदा याद रहता है यह? क्योंकि संगमयुग का जन्म सबसे छोटा सा लेकिन अमूल्य जन्म है। इस जन्म का मूल्य सारा कल्प चलता है।

अभी चलने का समय समाप्त हुआ। उड़ने का समय है। पुरुषार्थ का समय पूरा हुआ लेकिन अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। वह भी थोड़ा है

22.02.2009

समय पर कोई भरोसा नहीं। बापदादा ने पहले से ही कहा है कि अचानक क्या भी हो सकता है इसलिए सन्देश देने का वा अपने प्रोग्रेस का अभी-अभी, कभी-कभी नहीं, बापदादा ने कहा ही है कि वास्तव में ब्राह्मणों की डिक्शनरी में कभी-कभी शब्द शोभता नहीं है, अभी-अभी, संकल्प किया करना ही है। देखेंगे, करेंगे, यह गे-गे का शब्द ही नहीं है। इसलिए आपकी मम्मा ने भी यही लक्ष्य रखा, याद दिलाने का कि अब नहीं तो कब नहीं।

25-10-09

आज पहले बारी आने वाले बच्चों को बापदादा नये ब्राह्मण परिवार में आने की अपने तरफ से और बाह्मण पारिवार की तरफ से बहुत-बहुत बधाई दे रहे हैं क्योंकि फिर भी टू-लेट आये हो लेकिन आ तो गये। बापदादा और परिवार को देख तो लिया। बापदादा समझते हैं कि आप चाहो तो आज आने वालों को विशेष वरदान है कि अगर दिल से चाहो तो लास्ट सा` फास्ट, फास्ट सो आगे आ सकते हो।

31-03-11

1-3 रचयिता का कर्तव्य

संजय की कलम से (बी.के. जगदीशचंद्र हसीजा).........

बाबा ने यह भी कहा है, बच्चे, आप दाता हो, रहमदिल हो, क्या आपको दुःखियों की पुकार सुनने में नहीं आती? लोग रो रहे हैं, चिल्ला रहे हैं, अपने इष्टों को पुकार रहे हैं, क्या आपको उनकी आवाज़ सुनने में नहीं आती? लेकिन हम क्या कर रहे हैं? मनोरंजन के लिए टीवी देखते हुए बैठे हैं, सामान्य लोगों जैसे अपना समय व्यर्थ गँवा रहे हैं। कहते हैं, जब रोम में आग लगी थी तब रोम का राजा नीरो पियानो बजा रहा था। इतना भावहीन और कर्तव्यहीन वह हो गया था। आज लोगों को न चैन है, न नींद। नींद की गोली लेकर सोते हैं। बाबा ने हमें योग सिखाया है, त्रिकाल ज्ञान समझाया है। क्या हम उन दुःखी और अशान्त व्यक्तियों को बाबा का ज्ञान और योग नहीं सिखला सकते? जो बुजुर्ग है वे बुजुर्गो के पास जायें। पार्क में बहुत बूढे लोग खाली बैठे रहते हैं, वहाँ जाइये, उनको योग सिखाइये। वहाँ नहीं मिलें तो वृद्धाश्रम पर जाइये, वहाँ सेवा कीजिये। युवा, युवाओं को सिखाइये। करने के लिए सेवा बहुत है, करने का मन चाहिए। आपको उनके सामने कोई भाषण नहीं करना है, मेनेजमेन्ट कोर्स नहीं कराना है। सिर्फ आप अपने अनुभव सुनाओ, अपनी सरल भाषा में बाबा का परिचय सुनाओ। लोग यही चाहते हैं। मेनेजमेन्ट कोर्स बाहर वाले बहुत सिखाते हैं, उसकी विषय-वस्तु बाहर की दुनिया में बहुत मिलती है। लेकिन ईश्वरीय ज्ञान, राजयोग कहाँ नहीं मिलता हम बच्चों के सिवाय। लोगों को यह बताइये, यह सुनाइये तब वे सुखी और पवित्र जीवन बितायेंगे। इसलिए बाबा कहते हैं, बच्चे, सोचो, समझो।

ज्ञान सुधा भाग :-1, पेज नं:132

अभी आप रचयिता हो। आप के एक-एक रचयिता के पीछे फिर रचना भी है। माँ-बाप को जब तक बच्चे नहीं होते है, माँ-बाप की कमाई अपने प्रति ही होती है। जब रचना होती है तो फिर रचना का भी पूरा ध्यान रखना पड़ता है। अपने लिए जो कमाई थी वह तो बहुत समय खाया, मनाया। लेकिन अब अपनी रचना का भी ध्यान रखना है। आपने अपनी रचना देखी है?

17.7.69

अब यह बात देखना कि जहाँ संघार करना है वहाँ रचना नहीं रच लेना, और जहाँ रचना रचनी है वहाँ संघार नहीं कर लेना। जहाँ मास्टर ब्रह्मा बनना है वहाँ मास्टर शंकर नहीं बनना। यह बुद्धि में ज्ञान चाहिए।

कहानी सुनी हैं ना जब उल्टा कार्य किया तो बिच्छू टिन्डन पैदा हुए। तो यहाँ भी अगर संघार के बजाए उल्टी रचना रच ली तो व्यर्थ संकल्प बिच्छू टिन्डन मिसल बन पड़ेंगे। तो ऐसी रचना नहीं रचना जो स्वयं को भी काटें और दूसरों को भी काटें। ऐसी रचना रचने से सावधान रहना।

28.5.70

वर्तमान समय जो कर्म कर रहे हो, वह भविष्य के लॉ बन रहे हैं। आप सभी का कर्म भविष्य का लॉ है। जो लॉ-मेकर्स होते हैं वह सोच समझ कर शब्द निकालते हैं।

7.6.70

समय प्रमाण अभी अज्ञानी को ज्ञानी बनाने में कुछ समय लगता है। वह भी इसलिए, क्योंकि बनाने वाले अपने को अव्यक्त रूप बनाने में अभी तक बहुत समय ले रहे हैं। जैसे-जैसे बनाने वाले स्वयं एक सेकेण्ड में व्यक्त से अव्यक्त रूप में स्थित होने के अभ्यासी बनते जायेंगे वैसे ही बनने वालों को भी इतना जल्दी बना सकेंगे।

20.9.71

जब तक आप ब्राह्मण किसी भी आत्मा को गेट-पास नहीं देंगे तो वह पास ही नहीं कर सकेंगे। तो मुक्ति जीवनमुक्ति धाम के गेट-पास लेने वालों की बड़ी लम्बी क्यू आप लोगों के पास लगने वाली है। अगर गेट-पास देने में देरी लगाई तो समय टू लेट हो जायेगा। इसलिए अपने को सदा स्व-स्वरूप, स्वधर्म, स्वदेशी समझने से, सदा इस स्थिति में स्थित रहने से ही एक सेकेण्ड में किसी आत्मा को नज़र से निहाल कर सकेंगे। अपने कल्याण की वृत्ति से उन्हें स्मृति दिलाते हर आत्मा को गेट-पास दे सकेंगे। बिचारी तड़फती हुई आत्माएं आप श्रेष्ठ आत्माओं से सिर्फ एक सेकेण्ड में अपने जन्म-जन्म की आशा पूरी करने का दान मांगने आयेंगी। इतनी सर्वशक्तियां जमा की हैं जो मास्टर सर्वशक्तिवान् बन एक सेकेण्ड की विधि से उन आत्माओं को सिद्धि प्राप्त कराओ?

24.10.71

लास्ट स्टेज कौन-सी है? विश्व-कल्याणकारी की है ना। अब यह प्रयत्न करो - दिन-रात, संकल्प, सेकेण्ड विश्व के कर्तव्य में वा सेवा में जाये। जैसे लौकिक रीति में भी जब लौकिक रचना के रचयिता बनते हैं तो रचयिता बनने से अपने तरफ समय देने के बजाए रचना की तरफ ही लगाते। इसके तो अनुभवी हो ना? अगर अति रोगी, अति दुःखी, अति अशान्त रचना होती है तो रचयिता मां-बाप का पूरा अटेन्शन उसी प्रति रहता है ना। अपने आप को जैसे भूले हुए होते हैं। वह तो है हद की रचना लेकिन आप तो बेहद विश्व के मास्टर रचयिता हो ना। **पहले अपने प्रति समय दिया लेकिन अब की स्टेज मास्टर रचयिता की है। सिर्फ एक-दो की बात नहीं, पूरे विश्व की आत्मायें दुःखी, अशान्त, रोगी, परेशान हैं, भिखारी हैं। बेहद रचना अर्थात् सारे विश्व को कल्याणकारी बन सदाकाल के लिए सुखी और शान्त बनाना है तो बेहद रचयिता का अटेन्शन होना चाहिए।**

दूसरों को देना अर्थात् स्वयं में भरना। तो स्वयं अपनी उन्नति के लिए अलग समय क्यों लगाते हो? एक ही समय में अगर दो कार्य हो जाएं; डबल

प्राप्ति हो जाए तो सिंगल प्राप्ति में समय क्यों लगाते हो? सारे दिन में विश्व-कल्याण के प्रति कितना समय देते हो? ब्राह्मणों का यह अलौकिक जन्म ही किसलिए है? विश्व-कल्याण अर्थ है ना। तो जिस प्रति जन्म है वह कर्म क्यों नहीं करते हैं?

जैसे साकार बाप को प्रत्यक्ष रुप में देखो तो रात का नींद का समय अथवा अपने शरीर के रेस्ट का समय भी ज्यादा कहां देते थे? विश्व-कल्याण के कर्तव्य में, सर्व आत्माओं के कल्याण प्रति, ना कि अपने प्रति। वाणी द्वारा भी सदा विश्व-कल्याण के संकल्प ही करते थे। इसको कहा जाता है विश्व-कल्याणकारी।

ऐसे सदा विश्व-कल्याण के निमित्त समय और संकल्प लगाने वाले क्या बनेंगे?विश्व-महाराजन्। अगर अपने प्रति ही समय लगाते रहते हैं तो विश्व - महाराजन् कैसे बनेंगे?

21.6.72

ड्रामा के अनुसार निश्चित होते हुए भी निमित्त बनी हुई आत्माओं को पुरुषार्थ करना ही पड़ता है। इसी प्रकार अब इस मुक्ति और जीवनमुक्ति के गेट्स खोलने की जिम्मेदारी बाप के साथ-साथ आप सब की है। वह विनाश सर्व-आत्माओं की सर्व-कामनाएं पूर्ण करने का निमित्त साधन है। यह साधन आपकी साधना द्वारा पूरा होगा। ऐसा संकल्प इमर्ज होना चाहिए कि अब सर्व-आत्माओं का कल्याण हो। सर्व तड़पती हुई, दु:खी और अशान्त आत्मायें वरदाता बाप और बच्चों द्वारा वरदान प्राप्त कर सदा शान्त और सुखी बन जाएं और अब घर चलें। यह स्मृति समय की समीपता प्रमाण तेज होनी चाहिए। क्योंकि इस संकल्प से ही और इस स्मृति से ही विनाश ज्वाला भड़क उठेगी और सर्व का कल्याण होगा।

विनाश होगा कि नहीं होगा, क्या होगा और कैसे होगा? यह समझने के बजाए अब ऐसा समझो कि यह हमारे द्वारा होना है। यह जानकर अब स्वयं को शक्ति स्वरुप बनाओ, स्वयं को लाइट हाउस और पॉवर हाउस बनाओ। अच्छा, क्या हर बात में आप निश्चय बुद्धि हो?

3.2.74

अभी आप लोगों का श्रेष्ठ जीवन विश्व की सेवा के प्रति है। अभी तक स्वयं की सेवा के प्रति व स्वयं के परिवर्तन के प्रति व स्वयं के संस्कार और स्वभाव वश अपने आप को ही बनाने और बिगाड़ने के प्रति हो, तो अभी वह समय बीत गया। अब हर श्वांस, हर संकल्प, हर संकेण्ड, हर कर्म, सर्व-शक्तियाँ, सर्व ईश्वरीय संस्कार, श्रेष्ठ स्वभाव व सर्व प्राप्त हुए खजाने विश्व की ही सेवा के प्रति हैं। अगर अभी तक भी स्वयं के ही प्रति लगाते हो तो फिर प्रालब्ध क्या मिलेगी? मास्टर रचयिता बनेंगे या रचना? रचना स्वयं के प्रति ही होती है, परन्तु रचयिता, रचना के प्रति होता है। जो अभी ही मास्टर रचयिता नहीं बनते तो वह भविष्य में भी विश्व के मालिक नहीं बनते।

27.5.74

इस समय आप सबकी जगत्-माता और जगत्-पिता की व मास्टर रचयिता की स्टेज है।

जो मैं संकल्प करूंगी, जैसी मेरी वृत्ति होगी वैसे वायुमण्डल में व अन्य आत्माओं में वायब्रेशन्स फैलेंगे- यह स्लोगन भी स्मृति में रखना आवश्यक है वर्ना आप रचयिता की रचना कमजोर अर्थात् कम पद पाने वाली बन जायेगी। रचयिता की कमी रचना में भी स्पष्ट दिखाई देगी। इसलिये अपने कमजोर संकल्पों को भी अब समर्थ बनाओ। यह जो कहावत है कि 'संकल्प से सृष्टि रची', यह इस समय की बात है। जैसा संकल्प वैसी अपनी रचना रचने के निमित्त बनेंगे।

जो करेंगे वह पायेंगे या जो सोचेंगे वह पायेंगे? नियम क्या है? सोचना, बोलना और करना - ये तीनों एक-समान बनाओ! सोचना और बोलना बहुत ऊंचा, करना कुछ भी नहीं - तो वे सोचते और बोलते ही समय बिता देंगे और करने से जो पाना है, वह वे पा नहीं सकेंगे। स्वयं को तो श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित करेंगे ही, अपनी रचना को भी वंचित करेंगे। इसलिये कहना कम और करना ज्यादा है। मेहनत करके पायेंगे

- यह लक्ष्य सदा याद रखो। मुझे भी महारथी व सर्विसएबल समझा जाए, मुझे भी अधिकार दिया जाए, स्नेह व सहयोग दिया जाए - यह मांगने की चीज नहीं। श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ वृत्ति और श्रेष्ठ संकल्प की सिद्धि रूप में यह सब बातें स्वतः ही प्राप्त होती हैं। इसलिये इन साधारण संकल्पों में या व्यर्थ संकल्पों में भी समय व्यर्थ न गंवाओ।

9.1.75

सदैव यह सोचो कि जब मैं हूँ ही विश्व को परिवर्तन करने के निमित्त, तो स्वयं को परिवर्तन करना, क्या बड़ी बात है? तो फौरन ही परिवर्तन करने की शक्ति आयेगी।

9.2.75

समय और समय के प्रमाण आत्माओं की सूक्ष्म पुकार सुनने में आती है वा अपने में ही सदा बिजी रहते हो? कल्प पहले वाले आप के भक्त आत्मायें अपने-अपने इष्ट का आह्वान कर रही हैं। आ जा, आ जा की धुन लगा रही हैं। दिन-प्रतिदिन अपनी पुकार साजों से सजाते हुए अर्थात् खूब गाजे बाजे बजाते हुए जोर शोर से पुकारना शुरू करते हैं।

विश्व कल्याणकारी, महादानी, वरदानी स्वरूप में स्थित होने से ही रहम आयेगा। स्वयं को जगत्-माता व जगत पिता के स्वरूप में अनुभव करने से ही रहम उत्पन्न होगा। किसी भी आत्मा का दुःख व भटकना सहन नहीं होगा। ।

3.10.75

संगठित रूप से सर्व ब्राह्मणों के अन्दर रहम की भावना, विश्व-कल्याण की भावना, सर्व-आत्माओं को दुःखों से छुड़ाने की शुभ कामनाए जब तक दिल से उत्पन्न नहीं होंगी तब तक विश्व-परिवर्तन रुका हुआ है।

23.10.75

अभी स्थापना के निमित्त बनी हुई आत्माओं के सोचने और करने में अन्तर है। क्योंकि पुराने भक्ति के संस्कार समय प्रति समय इमर्ज हो जाते हैं।

अब बाप समान बनने के पहले इस एक बात में समान बनो अर्थात् स्वयं के परिवर्तन करने की मशीनरी तेज़ करो। इस अन्तर को मिटाने का मंत्र वा यंत्र सुनाया कि 'साकार सो निराकार' में पार्ट बजाने वाले हैं।

11-1-77

प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाओ, भिखारियों को दान दो। भक्तों को भक्ति का फल बाप के मिलन का मार्ग बताओ। इस क्यू को सम्पन्न करने में बिज़ी रहेंगे तो स्वयं के प्रति क्यों की क्यू समाप्त हो जावेगी। समय की इन्तज़ार में नहीं रहो लेकिन तीनों प्रकार की आत्माओं को सम्पन्न बनाने के इन्तज़ाम में रहो। अब तो नहीं पूछेंगे कि विनाश कब होगा। क्यू को समाप्त करो तो परिवर्तन का समय भी समाप्त हो जाएगा। संगम का समय सतयुग से श्रेष्ठ नहीं लगता है? थक गये हो क्या?

13.1.78

आज सर्व आत्मओं का एक ही आवाज़ सुनने में आ रहा है। सबका एक ही आवाज़ है-दो घड़ी के लिए भी सुख और चैन से जीना चाहते हैं। बेचैन हैं। सम्पत्ति और साधन होते हुए भी सुख और चैनस की नींद आंखों में नहीं है। आजकल मैजारिटी-सच्चे सुख और शान्ति के वा सच्ची खुशी के प्यासे होने के कारण रास्ता ढूंढ रहे हैं। अनेक अल्पकाल के रास्ते अनुभव करते, सन्तुष्टता न मिलने के कारण अब धीरे-धीरे उन अनेक रास्तों से लौट रहे हैं, यह भी नहीं, यह भी नहीं। अब नेती-नेती के अनुभव में आ रहे हैं। अभी, 'सही रास्ता कुछ और है', ऐसी अनुभूति करने लगे हैं। ऐसे समय पर आप पूर्वजों का कार्य है- ऐसी आत्माओं को शमा बन रास्ता दिखाना। अमर ज्योति बन अधंकार से ठिकाने पर लाना। ऐसे संकल्प आते हैं?

सबकी नज़र आप पूर्वजों को ढूंढ रही है। अब बेहद के स्मृति स्वरुप बनो। तो हद की व्यर्थ बातें स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी।

स्थूल साधनों के विस्तार में सूक्ष्म शक्ति गुप्त हो जाती है। स्थूल साधन का विस्तार, जैसे वृक्ष का विस्तार बीज को छुपा देता है, वैसे सूक्ष्म शक्ति की परसेन्टेज गुप्त हो जाती है। आप पूर्वज आतमाओं की अलौकिकता - सूक्ष्म शक्ति है। जो सब अनुभव करें कि पूर्वजों द्वारा कोई विशेष शक्ति उत्पन्न हो रही है।

श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति, शुभ वृति की शक्ति। स्नेह और सहयोग की दृष्टि। यह किसके पास नहीं है। तो हे पूर्वज आत्मायें! अपनी वंशावली के प्राप्ति के आशाओं के दीपक जलाए यर्थाथ मंजिल तक लाओ।

28-11-81

अनेक आत्मायें पूर्वज पूज्य आत्माओं को शान्ति देवा, शक्ति देवा कह याद कर रही हैं। ऐसे समय पर शान्ति देवा आत्मायें मास्टर शान्ति के सागर, मास्टर शान्ति के सूर्य अपनी शान्ति की किरणें, शान्ति की लहरें दाता के बच्चे देवा बन सर्व को दे रहे हो!

19-11-84

हरेक आत्मा के द्वारा यही प्रसन्नता के बोल निकलेंगे, जन्म-जन्म की जो प्यास थी वा आश थी कि मुक्ति को प्राप्त हो जाएं वा एक झलक मात्र दर्शन हो जाएं, आज मुक्ति वा मोक्ष का अनेक जन्मों का संकल्प पूरा हो गया। वा दर्शन के बजाए दर्शनीय मूर्त मिल गए। हमारे ईष्ट हमें मिल गए। इसी थोड़े समय की प्राप्ति के नशे और खुशी में जन्म-जन्म के दुख दर्द भूल जायेंगे। थोड़े से समय की यह समर्थ स्थिति आत्माओं को यथाशक्ति भावना के फलस्वरूप कुछ पापों से भी मुक्त कर देगी।

दर्शन सदा सम्पन्न स्वरूप का होता है। तो ऐसे तैयार हो वा होना

है! वा यही सोचते हो कि समय आयेगा तब तैयार होंगे! जो समय पर तैयार होंगे तो वह अपनी ही तैयारी में होंगे वा दर्शनीय मूर्त बनेंगे? वह स्व प्रति रहेंगे, न कि विश्व प्रति। वह स्व -कल्याणकारी होंगे और वह विश्व-कल्याणकारी। अन्त का टाइटल विश्व-कल्याणकारी है न कि सिर्फ स्व-कल्याणकारी। स्व-कल्याणकारी सो विश्व-कल्याणकारी, डबल कार्य करनेवाले ही डबल ताजधारी बनेंगे। सिर्फ स्व-कल्याणकारी डबल ताजधारी नहीं बन सकते। राज्य में आ सकते हैं लेकिन राज्य अधिकारी नहीं बन सकते हैं। तो समय प्रमाण अभी पुरुषार्थ की गति तीव्र है! अभी याद की शक्ति और तीव्रगति से बढ़ाओ। अभी साधारण स्वरूप में है। इसलिए कभी भी परिस्थितियों के वश धोखा मिल जायेगा। शक्तिशाली याद की भट्ठी में रहेंगे तो सेफ रहेंगे।

21-11-84

समय के हिसाब से अब बचपन का समय समाप्त हुआ। अभी अनुभवी बन औरों को भी अचल- अडोल बनाने का, अनुभव कराने का समय है। अभी खेल करने का समय समाप्त हुआ। अब सदा समर्थ बन निर्बल आत्माओं को समर्थ बनाते चलो। आप लोगों में निर्बलता के संस्कार होंगे तो दूसरों को भी निर्बल बनायेंगे। समय कम है और रचना ज़्यादा-से-ज़्यादा आने वाली है।

29.3.86

सदा इस स्मृति में रहो कि 'मैं मास्टर रचयिता हूँ', इससे रफ़्तार तेज़ हो जायेगी। चल रहे हैं, समय जैसा है वैसा कर रहे हैं - ऐसे नहीं। यह तो समय के दास कहेंगे। आप कहेंगे - हम समय को चला रहे हैं। समय को बदलने के निमित्त आप हो ना, यह ठेका उठाया है ना? तो पुरुषार्थ में तीव्रगति का आधार क्या है? डबल लाइट बनना। बिना डबल लाइट बने तीव्रगति नहीं हो सकती और डबल लाइट बनने के लिए एक शब्द याद रखो — 'मेरा बाबा', बस। कोई भी बात आ

जाए, हिमालय पहाड़ से भी बड़ी हो लेकिन बाबा कहा और पहाड़ रूई बन जायेगा। राई भी नहीं, रूई।

5-12-89

सारे विश्व में ईश्वरीय सन्तान के नाते, ब्राह्मण-जीवन के नाते आप कितनी भी वी. आगे लगा दो तो भी कम है। क्योंकि आपके आधार पर विश्व-परिवर्तन होता है।

अंदर हीरो एक्टर हो और हीरे तुल्य जीवन वाले हो। तो कितने बड़े हुए! यह शुद्ध नशा समर्थ बनाता है और देह-अभिमान का नशा नीचे ले आता है।

व्यर्थ तरफ़ आकर्षित होने का कारण है - अपने मन-बुद्धि की दिनचर्या सेट नहीं करते हो।

17-12-89

वर्तमान समय के प्रमाण मर्सीफुल बाप बच्चों को भी कहते हैं कि बाप के सहयोगी साथी भुजाएं आप ब्राह्मण बच्चे हो। तो जिस चीज की आवश्यक्ता है, वह देने से प्रसन्न हो जाते हैं। तो मास्टर मर्सीफुल बने हो? आपके ही भाई-बहने हैं - चाहे सगे हैं वा लगे हैं लेकिन हैं तो परिवार के। अपने परिवार के अन्जान, परेशान आत्माओं के ऊपर रहमदिल बनो। दिल से रहम आये। विश्व की अन्जान आत्माओं के लिए भी रहम चाहिए। और साथ-साथ ब्राह्मण-परिवार के पुरुषार्थ की तीव्रगति के लिए वा स्व-उन्नति के लिए रहमदिल की आवश्यक्ता है। स्व-उन्नति के लिए स्व पर जब रहमदिल बनते हैं तो रहमदिल आत्मा को सदा बेहद की वैराग्यवृत्ति स्वत: ही आती है। स्व के प्रति भी रहम हो कि मैं कितनी ऊंच-ते-ऊंच बाप की वही आत्मा हूँ और वही बाप समाम बनने के लक्ष्यधारी हूँ।

31-3-90

जब स्वयं सम्पन्न बनो तब विश्व परिवर्तन का कार्य भी सम्पन्न होगा। आप

सबके सम्पन्नता की कमी के कारण विश्व परिवर्तन कार्य सम्पन्न होने में रुका हुआ है। प्रकृति दासी बन आपके सेवा के लिए इन्तज़ार कर रही है कि ब्राह्मण आत्माऐं ब्राह्मण सो फरिश्ता और फिर फरिश्ता सो देवता बनें तो हम दिल व जान, सिक व प्रेम से सेवा करें।

8.4.92

अभी अपने बहन-भाइयों को भिखारी देख रहम तो आता है ना।

जब पा लिया तो पाने की खुशी में रहने वाले सदा ही एवररेडी रहते हैं। कल भी विनाश हो जाये तो तैयार हो? या थोड़ा टाइम चाहिए? एवररेडी, नष्टोमोहा, स्मृति-स्वरूप-इसमें पास हो? एवररेडी का अर्थ ही है-नष्टोमोहा स्मृति-स्वरूप। या उस समय याद आयेगा कि पता नहीं बच्चे क्या कर रहे होंगे, कहाँ होंगे, छोटे-छोटे पोत्रों का क्या होगा? यहीं विनाश हो जाये तो याद आयेंगे? पति का भी कल्याण हो जाये, पोत्रे का भी कल्याण हो जाये, उन्हों को भी यहाँ ले आयें-याद आयेगा? बिजनेस का क्या होगा, पैसे कहाँ जायेंगे? रास्ते टूट जायें फिर क्या करेंगे? देखना, अचानक पेपर होगा।

3.10.92

बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। सदैव अलर्ट माना सदा एवररेडी! आपको क्या निश्चय है-विनाश के समय तक रहेंगे या पहले भी जा सकते हैं? पहले भी जा सकते हैं ना। इसलिए एवररेडी। विनाश आपका इन्तजार करे, आप विनाश का इन्तजार नहीं करो। वह रचना है, आप रचता हो। सदा एवररेडी। क्या समझा? अटेन्शन रखना। जो भी कमी महसूस हो उसे बहुत जल्दी से जल्दी समाप्त करो। सम्पन्न बनना अर्थात् कमजोरी को खत्म करना। ऐसे नहीं-यहाँ आये तो यहाँ के, वहाँ गये तो वहाँ के। सभी तीव्र पुरुषार्थी बनकर जाना।

21.11.92

समय आपका इन्तज़ार कर रहा है कि ये मेरे मालिक मुझ समय को परिवर्तन करेंगे। वह इन्तजार कर रहा है और आपको इन्तजाम करना है, इन्तजार नहीं करना है। सर्व को सन्देश देने का और समय को सम्पन्न बनाने का इन्तजाम करना है। जब दोनों कार्य सम्पन्न हों तब समय का इन्तजार पूरा हो।

आगे बढ़ रहे हैं-यह तो ठीक है। तो अब गति को चेक करो, सिर्फ चलने को चेक नहीं करो। गति को चेक करो, स्पीड को चेक करो। समझा? सभी अपना काम कर रहे हो ना।

20.12.92

इतनी तैयारी कर रहे हो, कि पहले कब्रिस्तान बने, फिर परिस्तान बनायेंगे? क्या करेंगे? (समय करायेगा) समय नहीं करायेगा, समय को लायेंगे। क्योंकि अनेक बार ये निमित्त बनने का पार्ट बजाया है, अभी तो सिर्फ़ रिपीट करना है। तो अपने श्रेष्ठ वायब्रेशन्स द्वारा, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा परिवर्तन कर रहे हो? जितना-जितना शक्तिशाली सतोप्रधान वायब्रेशन होंगे तो यह प्रकृति और मनुष्यात्माओं की वृत्ति दोनों ही चेंज हो जायेगी। मनुष्यात्माओं को वृत्ति से चेंज करना है और प्रकृति को वायब्रेशन द्वारा परिवर्तन करना है।

23-12-93

दादियों से मुलाकात

आप ब्राह्मण जितने सम्पन्न बनते जायेंगे उतना भविष्य में प्रकृति भी प्रगति को प्राप्त करेगी क्योंकि प्रकृति समय प्रति समय अपना सिग्नल दिखा रही है। तो जितनी प्रकृति की हलचल उतनी अचल स्थिति प्रकृति को परिवर्तन करेगी। कितनी आत्मायें समय प्रति समय दु:ख की लहर में आती है। तो ऐसे दु:खी आत्माओं का सहारा तो बाप और आप ही हो। तो रहम पड़ता है ना। जब समाचार सुनते हो तो क्या दिल में आता है? नथिंग न्यू-अपनी अचल स्थिति के लिये तो ठीक है लेकिन प्रकृति की हलचल से जब आत्मायें चिल्लाती हैं तो

किसको चिल्लाती हैं? तो जब मर्सी, रहम मांगते हैं तो आप लोगों को उनके रहम की पुकार पहुँचती तो है ना! ये छोटी-छोटी आपदायें और तड़पाती हैं। ब्राह्मण सम्पन्न हो जाओ तो दु:ख की दुनिया सम्पन्न हो जाये। तो रहम पड़ता है या नहीं? रहम पड़ता है तो फिर क्या करते हो? फिर भी ईश्वरीय परिवार के हैं ना। तो परिवार का कोई भी दु:ख, सुख में परिवर्तन करने का संकल्प तो आता है ना। कोई परिवार में बीमार भी हो तो क्या संकल्प होता है? जल्दी ठीक हो जाये। तो चिल्लाते-चिल्लाते मरना और एकधक से परिवर्तन होना, फ़र्क तो है ना। महाविनाश और रिहर्सल का विनाश, फ़र्क है। महाविनाश अर्थात् महान् परिवर्तन। उसके निमित्त आप हो। सम्पन्न बनेंगे तो समाप्ति होगी।

अभी ये लहर फैलाओ। हर संकल्प में मर्सीफुल। संकल्प में होंगे तो वाणी और कर्म स्वत: ही हो जायेंगे। सब चिल्लाते भी क्या हैं? मर्सी-मर्सी।

25-1-94

समय आप मास्टर रचयिता के लिये रुका हुआ है। अभी भी प्रकृति को ऑर्डर करें तो क्या नहीं कर सकती है? अगर पांचों ही तत्व हलचल मचाना शुरू कर दें तो क्या नहीं हो सकता और कितने में हो सकता? तो समय , प्रकृति और माया विदाई के लिये इन्तज़ार कर रही है। आप सम्पूर्णता की बधाइयाँ मनाओ तो वो विदाई लेकर ही जायेगी। माया भी देखती है अभी ये तैयार नहीं हैं तो चांस लेती रहती है। प्रकृति को ऑर्डर करें? पुरुष तैयार हैं? प्रकृति तो तैयार हो जायेगी।

चेक करो कि अगर इस घड़ी भी महाविनाश हो जाये तो अपनी तस्वीर देखो नॉलेज के आइने में, कि मैं क्या बनूँगा?

जब ब्रह्मा के लिये गायन है कि संकल्प से सृष्टि रच ली तो क्या संकल्प से विनाश नहीं हो सकता? बाप जानते हैं राजधानी चलनी है तो उसमें एक ब्रह्मा क्या करेगा? साथी चाहिये ना? तो ब्रह्मा बाप भी आप साथियों के लिये रुके हुए हैं। तो बाप बच्चों से प्रश्न करते हैं, बच्चे तो बाप से प्रश्न बहुत कर चुके हैं। अभी बाप

बच्चों से प्रश्न करते हैं कि डेट फिक्स करो।

14.12.94

ब्राह्मण स्वरूप की विशेषता (सर्व शक्तियाँ) धारण हुई हैं? सर्व शक्तियाँ हैं वा कोई-कोई शक्ति है? अगर एक शक्ति भी कमजोर है वा कम है तो ब्राह्मण स्वरूप के बदले बार-बार क्षत्रिय अर्थात् युद्ध करने वाले बन जाते हैं।

शक्ति है तो समय पर काम आवे। दुश्मन है ही नहीं और शस्त्र बहुत बढ़िया हैं मेरे पास और जब दुश्मन आवे तो शस्त्र काम में ही नहीं आवे-क्या उसको शक्तिशाली कहेंगे? सिर्फ ये चेक नहीं करो कि शक्ति है लेकिन कर्म में समय प्रमाण जो शक्ति चाहिये वही शक्ति कार्य में लगाना आता है? कि दुश्मन वार कर देता, पीछे शक्ति याद आती है? तो ब्राह्मण जीवन की विशेषताओं को चेक करो। ब्राह्मण सो फ़रिश्ता बनेगा। क्षत्रिय सो फ़रिश्ता नहीं।

23.12.94

सारे विश्व के आत्माओं की पुकार है - हे हमारे ईष्ट......ईष्ट तो हो ना! किसी न किसी रूप में सर्व आत्माओं के लिए ईष्ट हो।

समय की पुकार सुनाते हो और आत्माओं की पुकार सिर्फ सुनते हो? तो ईष्ट देव-देवियों अभी अपने दाता-पन का रूप इमर्ज करो। देना है। कोई भी आत्मा वंचित नहीं रह जाए। नहीं तो उल्हनों की मालायें पड़ेंगी। उल्हनें तो देंगे ना! तो उल्हनों की माला पहनने वाले ईष्ट हो या फूलों की माला पहनने वाले ईष्ट हो?

23-10-99

वर्तमान समय इन खजानों के मैजॉरिटी आप सबके आत्मिक भाई और बहनें प्यासी हैं? तो क्या अपने भाई-बहनों के ऊपर तरस नहीं पड़ता! क्या प्यासी आत्माओं की प्यास नहीं बुझायेंगे? कानों में आवाज नहीं आता 'हे हमारे देव देवियां हमें शक्ति दो, सच्चा प्यार दो'। आपके भक्त और दुःखी आत्मायें दोनों ही

दया करो, कृपा करो, हे कृपा के देव और देवियां कहकर चिल्ला रहे हैं। समय की पुकार सुनाई देती है ना! और समय भी देने का अब है। फिर कब देंगे? इतना अखुट अखण्ड खजाने जो आपके पास जमा हैं, तो कब देंगे? क्या लास्ट टाइम, अन्तिम समय देंगे? उस समय सिर्फ अंचली दे सकेंगे। तो अपने जमा हुए खजाने कब कार्य में लगायेंगे? चेक करो हर समय कोई न कोई खजाना सफल कर रहे हैं!

अब से संकल्प करो - मेरा समय, संकल्प विश्व प्रति, विश्व की सेवा प्रति। इसमें स्व का ऑटोमेटिक हो ही जायेगा, रहेगा नहीं, बढ़ेगा। क्यों? किसी को भी आप उसकी आशायें पूरी करेंगे, दुःख के बजाए सुख देंगे, निर्बल आत्माओं को शक्ति देंगे, गुण देंगे, तो वह कितनी दुआयें देंगे। और दुआयें लेना सबसे लेना सबसे सहज साधन है, आगे बढ़ने का।

31-10-2006

आप लोग कहते हो ना, समय की पुकार है। भक्तों की पुकार, समय की पुकार, दुःखी आत्माओं की पुकार, आपके स्नेही, सहयोगी आत्माओं की पुकार आप ही पूर्ण करेंगे ना! आपका टाइटल क्या है? आपका कर्तव्य क्या है? किस कर्तव्य के लिए ब्राह्मण बनें? विश्व परिवर्तक आपका टाइटल है। विश्व परिवर्तन आपका कार्य है और साथी कौन है? बापदादा के साथ-साथ इस कार्य में निमित्त बने हो। तो क्या करना है?

02-04-08

समय को देख रहे हो, समय की पुकार, भक्तों की पुकार, आत्माओं की पुकार सुन रहे हो और अचानक का पाठ तो सबको पक्का है तो फाउण्डेशन की कमजोरी अर्थात् पवित्रता की कमजोरी। अगर बोल में भी शुभ भावना, शुभ कामना नहीं, पवित्रता के विपरीत है तो भी सम्पूर्ण पवित्रता का जो सुख है अतीन्द्रिय सुख, उसका अनुभव नहीं हो सकता।

30-11-08

बापदादा एक आप सभी से प्रश्न पूछते हैं? पूछें? प्रश्न पूछें? जब आप विश्व परिवर्तक हो तो विश्व परिवर्तन में यह प्रकृति, 5 तत्व भी आ जाते हैं, उन्हों को परिवर्तन कर सकते और अपने को या साथियों को, परिवार को परिवर्तन नहीं कर सकते? विश्व परिवर्तक अर्थात् आत्माओं को, प्रकृति को, सबको परिवर्तन करना। तो अपना वायदा याद करो, सभी ने बाप से वायदा कई बार किया है लेकिन बापदादा यही देख रहे हैं कि समय बहुत फास्ट आ रहा है, सबकी पुकार बहुत बढ़ रही है तो पुकार सुनने वाले और परिवर्तन करने वाले उपकारी आत्मायें कौन हैं? आप ही हो ना!

30-11-08

बापदादा आपका साथी है, जहाँ भी मुश्किल आवे ना बस दिल से कहना, बाबा, मेरा बाबा, मेरा साथी आ जाओ, मदद करो। तो बाबा भी बंधा हुआ है। सिर्फ दिल से कहना। क्योंकि समय और स्वयं दोनों को देखना है। समय चैलेन्ज कर रहा है और आप माया को चैलेन्ज करो क्या करेगी।

तो समय के प्रमाण बापदादा देख रहे थे कि समय की रफ्तार इस समय तीव्र है। तो समय को सामना कौन करेगा? आप ही तो करेंगे। बापदादा ने देखा कि दु:खियों की पुकार, भक्तों की पुकार, समय की पुकार इतना सुनते कम हैं। बिचारे हिम्मतहीन हैं, उन्हों को पंख लगाओ तो उड़ तो सकें । हिम्मत के पंख, उमंग-उत्साह के पंख लगाओ।

31.12.2008

आप पूर्वज हो, पूज्य भी हो और पूर्वज भी हो। तो पूर्वज कोई भी आत्मा का दु:ख या डिस्ट्रबेन्श देख नहीं सकते, जिससे प्यार होता है, रहम होता है उसका दु:ख देख नहीं सकता। तो बाप समझते हैं कि समय आपको परिवर्तन करे, इससे पहले आप पुरुषार्थ के प्राप्ति की प्रालब्ध अभी से अनुभव करो।

क्योंकि आपका सिखाने वाला समय नहीं है, समय आपका टीचर नहीं है।

11-02-10

समय आपका इन्तजार कर रहा है, आप समय का इन्तजार नहीं करना। आप समय को जितना समीप लाने चाहो समाप्ति को, उतना समाप्ति को समीप ला सकते हो। समय आने पर तैयार होना यह आप ब्राह्मणों का संकल्प नहीं हो, आप समय को समीप लाओ। समय बाप को कहता, अभी ब्राह्मण आत्मायें मुझ समय को समीप लायें। प्रकृति भी बाप को कहती अभी समाप्ति को समीप लावे। तो बापदादा क्या जवाब दे? क्या जवाब दे? समय आया कि आया यह कहें! आपकी तरफ से यह जवाब दें? क्या जवाब दें? बोलो। क्या जवाब दें? अभी समाप्ति को समीप लाना अर्थात् स्वयं को सम्पन्न सम्पूर्ण बनाना क्योंकि बापदादा अकेले नहीं जायेगा, बच्चों सहित जायेगा। तो डेट फिक्स करना। कब तक? काम तो दिया है, अब आपस में राय करना। बापदादा जवाब क्या दे, प्रकृति को! प्रकृति बहुत परेशान है। दु:खी आत्मायें बहुत मन में चिल्ला रही हैं। मन्सा सेवा अभी ज्यादा बढ़ाओ। करते हैं मन्सा सेवा लेकिन लगातार बढ़ती रहे, वह और बढ़ाओ क्योंकि प्रकृति और दु:खी आत्मायें बाप के पास आती हैं, चिल्लाती हैं। तो आप उन्हों को कुछ शान्ति या सुख की अनुभूति कराओ। वह एक सेकण्ड की शान्ति भी चाहते हैं, थोड़ी शान्ति दे दो। जैसे भूखा होता है, तो समझता है कि कुछ भी मिल जाए, थोड़ा भी मिल जाए, तो अभी मन्सा सेवा को भी बढ़ाओ। वाचा की तो चल रही है, बापदादा खुश है। अच्छा, बापदादा ने जो होमवर्क दिया वह याद रखना और रखवाना।

15-12-10

अभी समय अनुसार जानते हो कि आप पूर्वज के भक्त लोग दु:खी और अशान्त होने के कारण आप पूर्वज आत्माओं को कितना पुकार रहे हैं। आवाज सुनने आता है, कैसे दु:ख अशान्ति से पुकार रहे हैं? हमें शान्ति दे दो, सुख दे दो,

खुशी दे दो। आवाज सुनने आता है? दो, दो ... तो अभी आप आत्माओं को रहमदिल कल्याणकारी दाता के बच्चे रूप में आत्माओं को मन्सा सेवा द्वारा देने का कार्य करना है। बापदादा को तो बड़ा तरस पड़ता है इन दुःखी, अशान्त आत्माओं पर। आपको भी तरस पड़ता है ना!

31-12-10

जो दुनिया वाले दुःखी हैं, अशान्त हैं उसकी मन्सा सेवा कर उन्हों को भी कुछ न कुछ सहारा देते रहेंगे क्योंकि बापदादा को बच्चों का पुकारना, चिल्लाना सहन नहीं होता। है तो आपका भी परिवार ना! तो बहुत बढ़ रहा है दुःख अशान्ति, तो अब रहमदिल बनो। यह संकल्प भी साथ में करो कि चलते फिरते अमृतवेले आत्माओं की मन्सा सेवा भी अवश्य करेंगे, यह संकल्प ले सकते हो? जैसे यह संकल्प लिया तो संस्कार को समाप्त करेंगे सदा के लिए, सदा के लिए लिया है ना! थोड़े समय के लिए तो नहीं। तो जैसे संस्कार को समाप्त कर बाप समान बनेंगे ऐसे दाता के बच्चे बन मास्टर दाता स्वरूप से मन्सा सेवा भी करनी है।

31-12-10

बापदादा ने सुनाा दिया है कि वतर्मान समय प्रकृति अपना कार्य करती रहती है क्योंकि प्रकृति को भी मनुष्य आत्मायें तंग करते हैं तो प्रकृति भी तंग करती है आजकल देखते हो कि प्रकृति कहाँ न कहाँ अपना कार्य करती रहती है लेकिन आप प्रकृतिजीत बन प्रकृति को भी सताप्रधान बना रहे हो। लोग तो प्रकृति की हलचल देख डरते हैं कि कल क्या होगा! लेकिन आप जानते हो कि अच्छे ते अच्छा होगा क्योंकि अभी यह सगंमयुग सृष्टिचक्र का अमृतवेला चल रहा है तो अमतृवेले के बाद क्या होता है? सवेरा। अधंकार खत्म हो राशेनी आ जाता, तो आपको खुशी है कि अभी हमारा राज्य सुखमय ससांर जहाँ प्रकति भी सुखमई है, वह राज्य आय कि आया।

31-03-11

2
अन्तिम समय

2.1 अन्तिम समय के नजारे

संजय की कलम से (बी.के. जगदीशचंद्र हसीजा)..........

एक है समय बीतता जा रहा है, दूसरा है, समय बदलता भी जा रहा है अथात् परिस्थितियाँ बदलती जा रही हैं। आज यह समय है, कल कैसा समय होगा? बाबा ने हमें पहले ही समझाया है कि ऐसा मत समझो कि अभी नहीं किया तो कभी कर लेंगे। यह स्थिति, ऐसा समय ही नहीं रहेगा तो करेंगे कैसे? अपने शरीर की स्थिति कैसी होगी वो भी हरेक अपना-अपना जानते हैं। किसी को व्याधि होगी, किसी को उपाधि होगी और पुरुषार्थ करने वाले की समाधि होगी। इस दुनिया में ये तीन चीज़ें हैं, चाहे आप व्याधि पा लो, चाहे उपाधि पा लो या चाहे समाधि पा लो। लेकिन यह तो जरूर है कि संसार में परिवर्तन आता है, क्षण-क्षण परिवर्तन आ रहा है। जब अभी यह सृष्टि नाटक अन्त में जा रहा है तो परिस्थितियाँ कैसे आयेंगी? बिना मौसम बरसात आयेगी, चारों तरफ़ पानी घेर लेगा तब लोग क्या करेंगे? कहने का भाव यह है कि ऐसी परिस्थितियाँ आ जायेंगी कि मन भी विचलित हो जायेगा, तब योग का अनुभव कर ही नहीं सकते। तब क्या करेंगे? जो अनुभव करना है अभी कर लो, जो खजानों का संग्रह करना है अब ही कर लो। अब नहीं तो कभी नहीं। यह समय फिर आने वाला है ही नहीं। समय किसी के लिए रुकता नहीं है। क्या आप समझते हैं कि आपके लिए समय रुका रहेगा? नहीं। इसलिए यह सदा स्मृति में रखो कि जो कुछ होगा सब अचानक होगा। ऐसा भी मत समझो, अभी 25-30 वर्ष पड़े ही होंगे, एक दिन में तो सारे अचानक नहीं आयेंगे! लेकिन एक के बाद एक ऐसी परिस्थितियाँ आयेंगी कि आपके मन में कितने भी अच्छे संकल्प, शुभकामनायें, शुभ इच्छायें हैं उनका अनुभव करने का समय ही नहीं मिलेगा। अभी निर्णय किजिए। मम्मा कई बार बताती थी कि बाबा निर्णय करके ही ये सब बता रहे हैं। हमारा ज्ञान भी हमें निर्णय करके बता रहा है,

ड्रामा भी निर्णय करके बता रहा है। कल्पवृक्ष में, गोले में समय की अवधि निर्णय करके ही बतायी हुई है, आपको उसके बारे में निर्णय करने की कोई जरूरत नहीं। आपको क्या करना है और क्या नहीं करना है - उसका निर्णय करने की जरूरत है। फैसला आपको करना है। अगर आप कोई व्यापार करने जाते हैं और आपको कोई अनुभवी बताता है कि देखो भाई, ऐसा किया तो इतना फायदा होगा, ऐसा किया तो इतना ही फायदा होगा, ऐसा नहीं किया तो इतना नुकसान होगा, इतने समय में किया तो इतना फायदा होगा। फैसला आपका है, जो करना चाहो सो करो। हम तो फैसला ही नहीं कर रहे हैं, टालमटोल करने में, सोच में, पूछताछ करने में ही लगे हुए हैं, समय बीतता जा रहा है। ड्रामा में आगे जाकर कैसा समय आने वाला है - बाबा ने वह सब बताया हुआ है। बाबा ने कहा है, मूसलधार बरसात होगी, अकाल पड़ेगा। उस समय क्या होगा? हम आपको बताते हैं, एक बार दिल्ली में बाढ़ आ गयी। पानी घरों में घुस गया। घर के सामान सब तैर रहे हैं, लोग छत पर बैठे हुए हैं, बिजली नहीं है, ऊपर से बरसात पड़ रही है, तीन दिन तक बरसात रुकी नहीं। खाने के लिए कुछ नहीं। आप सोचो, लोगों की स्थिति क्या होगी! लोगों को कई तरह की चमड़ी की बीमारी आ गयीं। बरसात रुकने के बाद भी कई दिनों तक खड़े हुए पानी से मच्छर, कीड़े, साँप आदि निकले, कई तरह की बीमारियाँ फैल गयीं। यह तो एक छोटी-सी घटना थी, अन्तिम समय की स्थिति कैसी होगी, आप जरा सोचिये।

बाबा ने यह भी बताया है कि विश्व में हाहाकार होगी, खूनी नाहक खेल होगा, खून की नदियाँ बहेंगी, बाद में जयजयकार होगी, दूध की नदियाँ बहेंगी। जिन्होंने हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का बँटवारा देखा है वे जानते हैं कि हाहाकार क्या होती है और इन्सान कैसे दरिंदे से भी खराब और बदतर हैं। कई हिंसक पशु भी होते हैं लेकिन हमने उनसे भी खराब इन्सानों को देखा है। ऐसा भी नहीं कि सिर्फ मारते हैं, इंच बाई इंच मारते हैं। इतना जुल्म करते हैं, इसलिए कि यह हिन्दू हैं, इसलिए कि यह मुसलमान है, सिर्फ इसीलिए कि इसके पास पैसा है, मेरे पास नहीं

है, सिर्फ इसलिए कि इससे मेरी दुश्मनी है, दुश्मनी का बदला ले लो। ऐसे दरिंदों को हमने इन आँखों से देखा है, आपको क्या बतायें। सिर्फ गोली मार दी या खून कर दिया - ऐसा नहीं। उसका एक-एक अंग काट रहे हैं, बदन को इंच बाई इंच काट रहे हैं, पहले उसकी आँखें निकालेंगे, बाद में एक हाथ, उसके बाद एक टाँग, उसके बाद और एक अंग। इस तरह से सता-सता के मारते हैं। यह सब धर्म के नाम पर हो रहा है। इसलिए बाबा कहते हैं, यही धर्मग्लानि है। उस समय की उस स्थिति में आप योग कर सकेंगे? ऐसे प्राकृतिक प्रकोप होंगे, आपको खाने-पीने को कुछ नहीं मिलेगा। ऐसे साम्प्रदायिक दंगे होंगे, आप को एक गली से दूसरी गली में जाना मुश्किल होगा। उस समय क्या आपका मन टिकेगा? परमधाम निवासी उस ज्योतिर्बिन्दु शिव की याद रहेगी? आप घर के अन्दर खिड़की बन्द करके बैठे हुए हैं, बाहर से किसी को मार रहे हैं, आपको आवाज सुनाई पड़ रही है, वह चिल्ला रहा है कि बचाओ, बचाओ। आप पहचान भी रहे हैं कि वह किसकी आवाज़ है। उस समय आप क्या कर सकेंगे? उसको बचा सकेंगे? योग में बैठ सकेंगे? साक्षी होकर रह सकेंगे? अगर उस दृश्य को आपने अपनी आँखों से देखा है तो आप खाना खा सकेंगे? चैन से सो सकेंगे? योग लगा सकेंगे? बाबा ने सब विषय चित्र बनाकर बता दिये हैं कि मीठे बच्चे, लाडले बच्चे, आगे ऐसी-ऐसी परिस्थितियाँ आयेंगी, अभी से तैयार रहो।

यहाँ हमारे से दो गलतियाँ हो रही हैं - एक तो दुःखियों की पुकार नहीं सुनायी पड़ रही है, दूसरा, अन्त में क्या-क्या होने वाला है उसके बारे में नहीं सोचते। बाबा यह भी कहते हैं कि हाहाकार के समय मन विचलित होगा, इन्द्रियाँ भी चंचल होंगी। वह आखिरी परीक्षा होगी। छिपे हुए, दबे हुए पुराने संस्कार उछलेंगे। आपको पता नहीं रहेगा और आप आश्चर्य खायेंगे कि यह मेरे अन्दर हैं! अगर पहले से उन पुराने संस्कारों को जड़ से समाप्त नहीं किया होगा तो अन्तिम समय बाहर निकलेंगे। जिनकी दृष्टि-वृत्ति खराब है और भटक रही है उन अशुद्ध आत्माओं का क्या हाल होगा? वे भी दूसरों के अन्दर प्रवेश कर अपने विकारों

को प्रकट करेंगी, अपनी मनमानी करेंगी। बाबा ने कहा है, उस समय पाँच विकार और पाँच तत्त्व दोनों अपनी चरम सीमा पर रहेंगे। तब आप क्या कर सकेंगे? उस समय आपकी स्थिति ऐसी होनी चाहिए कि आपको देखकर उन अशुद्ध आत्माओं को आपका शरीर दिखायी नहीं पड़े, बदले में आपमें प्रकाश ही प्रकाश, नूर ही नूर दिखाई पड़े, आपकी फरिश्तापन की अवस्था दिखाई पड़े। अगर ऐसा अनुभव उनको नहीं होगा तो आप खुद भटक जायेंगे। उन आत्माओं को अपनी शक्ति से शान्त और मुक्त करना तो दूर रह गया, खुद ही उनके प्रभाव में आ जायेंगे। तो हमने इतने साल तक बाबा के बच्चे बनकर, बाबा का अमूल्य ज्ञान सुनकर क्या किया, क्या सार्थक हुआ? इसलिए बाबा कहते हैं, हे बच्चे, अभी का ही समय है, अभी पुरुषार्थ करो। बच्चे, तुम मेरे घर के चिराग हो, तुम मेरे लाडले हो, तुम पर मुझे बहुत उम्मीदें हैं। मैं तुम्हारे सिर पर ताज देखता हूँ, तुम नयी दुनिया की फाउण्डेशन हो। तुम अनादिमूर्त और आदिमूर्त हो, तुम इस मानव वंशवृक्ष के पूर्वज और पूज्य हो। बाबा कहते हैं, अभी से अभ्यास करो एकनामी और एकॉनामी बनने का क्योंकि आगे जाकर खाने-पीने-पहनने के लिए कुछ नहीं मिलने वाला है। अभी से एकॉनामी बनकर रहने का अभ्यास करो। बीच-बीच में कुछ नहीं मिलता तो भी संकल्प नहीं चलाओ। उतना ही नहीं अगर दिन में आप तीन बार, चार बार खाते हो तो एक बार, दो बार खाने का अभ्यास करो, कभी-कभी कुछ नहीं खाने की प्रैक्टिस करो। जब अन्त में कुछ नहीं मिलने वाला होगा उस समय काम आयेगा, भूख-प्यास सहन करने की हिम्मत आयेगी। बाबा कहते हैं, अन्तिम पेपर में तन की परीक्षा होगी। अभी से देह से न्यारा होने की प्रैक्टिस नहीं करेंगे तो अन्त में इस परीक्षा में नापास हो जायेंगे।

वैज्ञानिक लोग कहते हैं कि ग्रीन हाउस इफेक्ट हो जायेगी। ग्रीन हाउस इफेक्ट क्या है? पृथ्वी पर सारा वातावरण घुटन-सा बन जायेगा। हवा सारी खराब हो जायेगी और अच्छी हवा आयेगी नहीं। हवा में माइस्चर (नमी), कार्बन डायऑक्साइड इकट्ठी हो जायेगी। उस हवा में ऑक्सिजन नहीं होगी। तो क्या

होगा एसी हवा के सेवन से चक्कर आने लगेगा, शक्तिहीनता की महसूसता होने लगेगी, उल्टी होने लगेगी। ऐसा अनुभव होने लगेगा कि दम घुट रहा है, हम मर रहे हैं। यह कैसे होगा? वे कहते हैं कि ओज़ोन पर्दा जो उसमें सुराख (छेद) हो रहा है और ग्लोबल वार्मिंग हो रहा है। कारखानों से और बस, जीप, ट्रकों से कार्बन डायऑक्साइड निकल रहा है, उससे ग्रीन हाउस इफेक्ट होगा। वे कहते हैं, ग्रीन हाउस इफेक्ट होने से लोग दम घुट-घुट कर सामूहिक रूप में मर जायेंगे, लाखों लोग मर जायेंगे। वातावरण ऐसा खचा-खच भरा हुआ हो जायेगा जैसे कि किसी को श्वास लेना ही मुश्किल हो। ऐसा होगा जैसे किसी का गला ही दबाया जा रहा हो। यह हो गयी प्रकृति से तन की परीक्षा।

दूसरी परीक्षा होगी तन की बीमारियों से। नये-नये प्रकार की बीमारियाँ आयेंगी और तन को ग्रसित करेंगी। अगर आप ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले होंगे, अन्नदोष से मुक्त होंगे और योगयुक्त होकर भोजन करते रहेंगे तो आप इन सब तन की परीक्षाओं में पास हो जायेंगे। बाबा के इन नियमों से हमारे शरीर का शुद्धिकरण होता है, पवित्रीकरण होता है। बाबा की श्रीमत अनुसरण करने में बहुत फायदे हैं, बहुत-से लोग यह नहीं जानते। बाबा के जो नियम हैं वे बहुत वैज्ञानिक और विकसित हैं। बाबा ने हमें साधारण रूप में बताये हैं इसीलिए उनका महत्त्व बहुत कम भाई-बहनें जानते हैं। जैसे-जैसे इन्वेन्शन होती रहेंगी, लोग समझते रहेंगे कि शाकाहार से क्या फायदे होंगे, शराब पीने से क्या-क्या नुकसान होंगे। हम जो नियम पालन करते आये हैं उन पर वे लोग अभी इन्वेन्शन करके उसके फायदे लोगों को बता रहे हैं। हम तो कब से उनका पालन करते आ रहे हैं बाबा के कहने अनुसार। इस प्रकार, बाबा ने हमें जो नियम दिये हुए हैं उनमें बहुत फायदे हैं। बाबा ने कहा है, तन की परीक्षा, तन की व्याधि की परीक्षा आयेगी, हरेक को इसको पास करना पड़ेगा, अभी नहीं आयी है तो बाद में आयेगी। अगर हमने शरीर से अलग होने का अभ्यास नहीं किया है, आत्म-अभिमानी बनने का अभ्यास नहीं किया है तो उनको इस परीक्षा के समय पर बहुत तकलीफ़ होगी।

अगर आप सारी जिन्दगी मैं आत्मा हूँ रटते रहे और अन्तिम समय देह के दुःख-दर्द की तरफ ध्यान गया तो आप न्यारे होने के बदले देह में फँस गये। देहभान और देह-अभिमान में आ गये तो जिन्दगी भर जो किया था उस पर पानी फिर गया।

अशरीरीपन का अभ्यास, देह से न्यारे होने का जो अनुभव है उसको बार-बार करते रहना चाहिए और उसका अभ्यास दिन-प्रतिदिन बढ़ाते रहना चाहिए। लौकिक में ऐसे कोई परीक्षा-नियंत्रक नहीं होंगे जो प्रश्नों को पहले बता देते हों। लेकिन बाबा हमें पहले से ही बता चुके हैं कि अन्तिम परीक्षा-पेपर कौन-कौन-से होंगे। बाबा हमारे टीचर भी हैं, एक्जामिनर (परीक्षक) भी हैं और बाप भी हैं इसलिए परीक्षा के प्रश्न क्या-क्या होंगे यह भी बताते हैं कि उनकी तैयारी पहले से ही कर लो। इतना ही नहीं, कैसे तैयारी करें यह भी बाबा बता देते हैं। फिर भी हम नहीं करते हैं तो वो क्या करें? बाबा तो शुरू से लेकर अन्त तक यही बताते हैं कि बच्चे, आत्म-अभिमानी बनो क्योंकि यह अन्तिम पेपर है। यही अति, अति, अति प्रमुख परीक्षा-प्रश्न है। इसलिए बाबा बार-बार कहते हैं, अशरीरी बनो, शरीर से न्यारे बनो। अगर हम नहीं बनते हैं तो वो क्या करें? इतनी बड़ी जमीन हिल रही है, तुम नहीं हिलते, हमने हिलाने की कोशिश की तो भी तुम नहीं हिलते हो तो हम क्या करें? तुम तो उस जमीन से ही भारी हो गये।

बाबा ने कहा है कि जिस प्रकार तन की परीक्षा होगी, उसी प्रकार मन की भी परीक्षा होगी। मन चंचल होगा। मन की जो इन्द्रियाँ हैं वे भी चंचल होंगी, उनसे भी परीक्षा होगी। मन में ऐसे संकल्प आयेंगे, उछलेंगे जो सोचा भी नहीं होगा क्योंकि वे मन में दबे हुए रहते हैं, आपने उनको अंश सहित समाप्त नहीं किया होगा। बाबा ने यह भी बताया है कि आसुरी दुनिया वाले क्या-क्या करेंगे, प्राकृतिक प्रकोप भी क्या-क्या होंगे। अणु-अस्त्र आदि जो तैयार हुए हैं उनसे क्या होगा, यह भी बताया गया है। आपने यज्ञ के इतिहास में सुना या पढ़ा होगा कि जब ब्रह्मा बाबा को साक्षात्कार हुआ विनाश का तो उनकी आँखों में आँसू आये। उन्होंने कहा कि बस करो, बस करो, भगवन् सुन्दर रूप दिखाओ। यह मुझसे देखा नहीं जाता। कोई भी बाप अपने बच्चों को तड़प-तड़प कर मरते हुए नहीं देख सकता। कितना

भी कठोर दिल वाला बाप हो अथवा जीवन भर उस लड़के ने अपने बाप की एक भी बात नहीं मानी हो, कितना भी अनाड़ी, आवारा हो लेकिन जब बच्चे पर ऐसी बीतती है तो उस बाप से भी देखा नहीं जाता। तो परमपिता करुणा के सागर हैं, प्रेम के सागर हैं वो कैसे देख सकेंगे? इसलिए बाबा बार-बार कहते हैं कि बच्चों की मेहनत मुझ से देखी नहीं जाती, मेरे बच्चे होकर धर्मराज से सज़ा पायें, यह मैं देख नहीं सकता। इसलिए बच्चे, पूरा पुरुषार्थ करो, पास विद् ऑनर बनो, धर्मराज की सज़ा से दूर रहो। इतना बताने पर भी हम उनकी बात नहीं सुनते, उनके कहने की राह पर नहीं चलते तो हमारे जैसा बदनसीब और कौन होगा इस दुनिया में!

बाबा कहते हैं, इन सब परीक्षाओं में पास होने के लिए लगावमुक्त, क्रोधमुक्त, नष्टोमोहा होना पड़ेगा। मुख्यतः अन्तिम पेपर दो होंगे। एक पेपर आत्म-अभिमानी का आयेगा, दूसरा पेपर नष्टोमोहा स्मृतिस्वरूप का आयेगा। ये दोनों अति, अति, प्रमुख और सूक्ष्म पेपर हैं। अगर अभी भी आपका मन किसी देहधारी की तरफ जाता है, उनसे लगाव-झुकाव है, उनके पीछे बुद्धि भटकती है तो अन्तिम समय मन-बुद्धि और भटकेंगे। उस समय सहन नहीं होगा। किसी से हमदर्दी करना, उनकी सेवा करना, सहयोग करना दूसरी बात है। किसी की अच्छाई के लिए योग करना, सहयोग देना ये दैवीगुण हैं। ये करना भी चाहिए लेकिन लगाव, झुकाव, मोह, ममता छोड़ो। नाम-मान-शान की इच्छा छोड़ो। नाम-मान-शान के पीछे बहुत बड़ी सेना है। नाम की ही एक इच्छा के पीछे बहुत इच्छायें तैयार खड़ी रहती हैं। नाम की इच्छा को आप विश्लेषण करो तो पता पड़ेगा कि मेरा नाम होना चाहिए, उसके बाद सबको मेरी प्रशंसा करनी चाहिए, उसके बाद सबको मुझे इज्जत देनी चाहिए, स्टेज पर मुझे बुलाकर सबके सामने सम्मान करना चाहिए आदि-आदि। यह तो इच्छाओं की बहुत लम्बी कतार है, इसका कोई अन्त नहीं है। एक पूरी हुई तो और कई इच्छायें तैयार रहती हैं। यह नाम-मान-शान की बहुत खतरनाक बीमारी है। इसलिए बाबा कहते हैं, बच्चे, नाम-मान-शान की इच्छा छोड़कर देह और देह के सम्बन्धों से न्यारे और बाप के

प्यारे बनो, नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनो।

ज्ञान सुधा भाग :-1, पेज नं:132

माहविनाश तो होना ही है। बाबा भी कहता है कि महाभारी महाभारत लड़ाई होनी है। यह कब होगा - यह नहीं बताऊँगा, दिनांक नहीं बताऊँगा। बाबा डेट क्यों नहीं बताते, इसका कारण मुझे लगता है कि विनाश एक डेट पर नहीं होगा, कई डेट पर होगा। एक डेट पर कहीं प्राकृतिक आपदाओं के रूप में, एक डेट पर कहीं सिविल वार के रूप में, एक डेट पर कहीं अणुयुद्ध के रूप में होगा। एक डेट पर कहीं बीमारियों के रूप में होगा। किसी डेट पर सारा शहर पानी में डूब जायेगा। इस तरह एक ही तारीख पर, एक ही बार सारा विनाश नहीं होगा। अनेक तारीखें हैं। इसलिए बाबा कहते हैं कि बच्चे, विनाश की तारीख क्यों पूछते हो? परन्तु यह बात निश्चय है कि विनाश होगा क्योंकि यह भगवानुवाच है। एक भगवान ही भूत, वर्तमान और भविष्य को जानने वाला त्रिकालदर्शी है और वह ज्ञानपूर्ण है। उसको पता है कि यह होना है।

ज्ञान सुधा भाग :-2, पेज नं:188

आप भी जानते होंगे कि विनाश का समय कैसा होगा! उस समय साम्प्रदायिक दंगे होंगे, लोग धर्म के नाम पर आपस में लड़ेंगे। जब विनाश होगा तब जीने के लिए जो जरुरी चीज़ें चाहिएँ, वे नहीं होंगी तो जिनके पास होंगी उन पर लोग हमला करेंगे, उनको लूटेंगे। इस प्रकार उस समय लूट-मार होती रहेगी। अमीरों पर गरीब चढ़ाई करेंगे, छीनेंगे, मारेंगे, खून करेंगे। उस समय यातायात, सूचना प्रौद्योगिकी ठप्प हो जायेगी तो उस समय दुनिया की क्या परिस्थिति होगी आप अन्दाजा लगा सकते हैं। आज दुनिया बिजली और परिवहन पर इतना अवलम्बित है कि अगर एक दिन के लिए ये दोनों ही बन्द हो जायें तो हाहाकार मच जाये। बाबा कहते हैं, खूने नाहक खेल होगा, खून की नदियाँ बहेंगी। उस समय परीक्षा किस रूप में आयेगी? भय, असुरक्षा और दुश्चिन्ता। अन्तिम परीक्षा में इतने तीनों रूप

में प्रश्नपत्र आयेगा। ऐसी स्थिति में जब लोग रो रहे होंगे, चिल्ला रहे होंगे, एक-दूसरे को मार-काट रहे होंगे, लूट रहे होंगे तब आपको मन एकाग्र करना होगा, स्थिर करना होगा। योगयुक्त हो रहना पड़ेगा, विदेह अवस्था में, आनन्द की स्थिति में स्थित रहना पड़ेगा। ये सब तब संभव होंगे जब आपको इन अवस्थाओं में रहने का अभ्यास बहुत काल का होगा। हमारी अन्त की स्थिति जैसी होगी वैसी ही हमारी गति होगी। हमारा भविष्य हमारे अन्त की मति पर आधारित होगा। इसलिए अन्तिम विनाश के समय अगर हम रहेंगे तो हमारी अवस्था ऐसी होनी चाहिए कि बाबा, मैं तो आपकी गोद में हूँ, यह देह आपकी अमानत है, मैं आपके पास आ रहा हूँ। बाहर के सब-कुछ - भयानक दृश्य और रुदन देखते हुए, सुनते हुए हमें बाबा की याद में मगन रहना चाहिए। इस अवस्था में जब हमारा शरीर छूटेगा, तब हमारी गति अथवा भविष्य श्रेष्ठ बनेगा।

बाबा ने यह भी कहा है कि विनाश के समय पाँच विकार और पाँच तत्त्व भी वार करेंगे। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ये भी परेशान करेंगे। वे भी बड़े रूप में आयेंगे। ये आपके मन में भी आयेंगे किसी न किसी कोने से और अन्य मनुष्यों के अन्दर भी आयेंगे जिनमें काम वासना जोरों पर रहती है। उस समय कोई पुलिस नहीं होगी, कोई सरकार नहीं होगी, कोई किसी को बचाने वाला नहीं होगा। उस समय सारे विकार अपने चरम स्वरूप में होंगे। यह है अन्तिम समय का दृश्य, उसके बाद सब आसुरी शक्तियाँ खत्म हो जायेंगी। लेकिन उससे पहले विकार और विकारी भी आपको परेशान करेंगे, आपका पीछा करेंगे परन्तु अगर आप आत्म-अभिमानी होंगे और परमात्म-अभिमानी होंगे तो उनको आपका प्रकाश रूप दिखायी पड़ेगा, आप देवी रूप में दिखायी देंगी, फरिश्ते के रूप में दिखायी देंगी। आप पर वे हमला नहीं कर सकेंगे, या तो डर कर भाग जायेंगे या भक्ति भाव से नमस्कार करके चले जायेंगे। आप उस समय ऐसी शक्तिशाली अवस्था में होंगे, ऐसी योग अवस्था में होंगे तो वे आप के पास आ नहीं पायेंगे। उस समय आपको न पुलिस मदद करेगी और न आप के पड़ोस वाले मदद करेंगे। आपको

अपने योग बल से ही, योग अवस्था से ही मदद मिलेगी।

यह है एक रूप, दूसरा रूप है उस समय प्राकृतिक प्रकोप होंगे। बाढ़ आयेगी, भूकम्प आयेगा। उस समय जल के प्राणी भी बाहर आयेंगे। साँप, बिच्छू आदि भी जल से बाहर आयेंगे तो लोग घर के बाहर भी रह नहीं पायेंगे। ऐसे समय जो योग में रहेंगे, बाबा के साथ का अनुभव करते रहेंगे उनको इन जानवर आदि से कुछ भी हानि नहीं होगी। इसलिए बाबा कहते, बच्चे फरिश्ता बनो, अशरीरी बनो, देही-अभिमानी बनो। अगर हम अभी से तैयारी करेंगे तो उस अन्तिम परीक्षा का सामना करेंगे और पास होंगे।

ज्ञान सुधा भाग :-3, पेज नं:198

प्रश्न करते हैं कि अब आगे क्या होने वाला है - विनाश होगा या नहीं होगा?

जैसे यादगार चित्र कलियुगी पर्वत को अंगुली देने का है, वैसे ही विनाश कराने के निमित्त बनी हुई सर्व आत्माओं के अन्दर यह संकल्प दृढ हो कि होना ही है। यह संकल्प रूपी अंगुली जब तक सभी की नहीं हुई है, तब तक विनाश का कार्य भी रुका हुआ है। इसी अंगुली से ही कलियुगी पर्वत खत्म होने वाला है।

14.9.75

आप मास्टर रचयिता हो ना। वह सभी रचना हैं ना। रचना को मास्टर रचयिता कैसे देखेंगे?जब मास्टर रचता के रूप में स्थित होकर देखेंगे तो फिर यह सभी कौनसा खेल दिखाई देगा? कौनसा दृश्य देखेंगे? जब बारिस पड़ती है तो बारिस के बाद कौनसा दृश्य देखते हैं? मेढ़क थोड़े से पानी में महसूस ऐसे करते हैं जैसे सागर में हैं। ट्रां-ट्रां.... करते नाचते रहते हैं लेकिन है वह अल्पकाल सुख का पानी। तो यह मेढ़कों की ट्रां-ट्रां करने और नाचने कूदने का दृश्य दिखाई देगा। ऐसे महसूस करेंगे कि यह अभी-अभी अल्पकाल के सुख में फूलते हुए गये कि गये। तो मास्टर रचयिता की स्टेज पर ठहरने से ऐसा दृश्य दिखाई देगा। कोई सार नहीं दिखाई देगा। बिगर अर्थ बोल दिखाई देंगे। तो सत्यता को प्रसिद्ध करने की हिम्मत और हुल्लास आता है?

27.9.71

परीक्षाएं बहुत आनी हैं। पेपर तो होने ही हैं। जैसे-जैसे अन्तिम फाइनल रिजल्ट का समय समीप आ रहा है वैसे समय-प्रति-समय प्रेक्टिकल पेपर स्वत: ही होते रहते हैं। पेपर प्रोग्राम से नहीं लिया जाता। आटोमेटिकली ड्रामा अनुसार समय प्रति समय हरेक का प्रेक्टिकल पेपर होता रहता है। तो पेपर में पास होने की हिम्मत अपने में समझते हो? घबराने वाले तो नहीं हो ना?अंगद के माफिक जरा भी अपने बुद्धियोग को हिलाने वाले नहीं हो?

12-7-72

ड्रामा प्लैन अनुसार, जो अव्यक्त स्थिति का, बाप से मीठी-मीठी रुह रुहान करने का पुरुषार्थ करेगा उस पुरुषार्थी आत्मा को वा लगन लगाने वाली आत्मा को, सच्चे दिल से बाप से प्राप्ति करने वाली आत्मा को सहज ही वरदान के रुप में अव्यक्ति अनोखे अनुभव प्राप्त होंगे। इसलिये **अब व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन भी समाप्त होता जावेगा। फिर क्या करेंगे? मिलन नहीं मनावेंगे? अल्पकाल के मिलन के बजाय सदाकाल के मिलन के अनुभवी बन जायेंगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे बिल्कुल समीप, सम्मुख मिलन मना रहे हैं।**

24-12-72

अब समय किस ओर बढ़ रहा है यह जानते हो? अति की तरफ बढ़ रहा है। सभी तरफ अति दिखाई पड़ रही है। अन्त की निशानी अति है। तो जैसे प्रकृति समाप्ति की तरफ अति में जा रही है वैसे ही सम्पन्न बनने वाली आत्माओं के सामने अब परीक्षायें व विघ्न भी अति के रुप में आवेंगे। इसलिये आश्चर्य नहीं खाना है कि पहले यह नहीं था अब क्यों है? यह आश्चर्य भी नहीं। **फाइनल पेपर में आश्चर्यजनक बातें क्वेश्चन के रुप में आवेगी तब तो पास और फेल हो सकेंगे। न चाहते हुए भी बुद्धि में क्वेश्चन उत्पन्न न हों, यही तो पेपर है। और है भी एक सेकेण्ड का ही पेपर। क्यों का संकल्प चन्द्रवंशी की क्यू में लगा देगा।**

15.4.74

आगे चल कर, जब प्रकृति के प्रकोप होंगे और आपदायें आवेंगी, तब सबका पेट भरने के लिये कौन-सी चीज काम आवेगी? उस समय सबके अन्दर कौन-सी भूख होगी?अन्न की कमी या धन की? तब तो, शान्ति और सुख की भूख होगी। क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं के कारण, धन होते हुए भी, धन काम में नहीं आवेगा। साधन होते हुए भी साधनों द्वारा प्राप्ति नहीं हो सकेगी। जब सब स्थूल साधनों

से व स्थूल धन से प्राप्ति की कोई आशा नहीं रहेगी, तब उस समय सबका संकल्प क्या होगा कि कोई शक्ति देवे, जो कि इन आपदाओं से पार हो सकें और कोई हमें शान्ति देवे। तो ऐसे-ऐसे लंगर बहुत लगने वाले हैं। उस समय पानी की एक-आधा बूंद भी कहीं दिखाई नहीं देगी। अनाज भी प्राकृतिक आपदाओं के कारण खाने योग्य नहीं होगा, तो फिर उस समय आप लोग क्या करेंगे? जब ऐसी परीक्षायें आपके सामने आयें तो, उस समय आप क्या करेंगे? क्या ऐसी परीक्षाओं को सहन करने की इतनी हिम्मत है? क्या उस समय योग लगेगा या कि प्यास लगेगी। अगर कूएँ भी सूख जावेंगे, फिर क्या करेंगे? जब यह विशेष आत्माओं का ग्रुप है, तो उनका पुरुषार्थ भी विशेष होना चाहिए ना? क्या इतनी सहनशक्ति है? यह क्यों नहीं समझते-जैसा कि गायन है कि चारों ओर आग लगी हुई थी, लेकिन भट्टी में पड़े हुए पूंगरे, ऐसे ही सेफ रहे, जो कि उनको सेक तक नहीं आया। आप इस निश्चय से क्यों नहीं कहते? अगर योग-युक्त है, तो भल नजदीक वाले स्थान पर नुकसान भी होगा, पानी आ जावेगा लेकिन बाप द्वारा जो निमित्त बने हुए स्थान हैं, वह सेफ रह जावेंगे, यदि अपनी गफलत नहीं है तो। अगर अभी तक कहीं भी नुकसान हुआ है, तो वह अपनी बुद्धि की जजमेन्ट की कमजोरी के कारण। लेकिन अगर महारथी, विशाल बुद्धि वाले और सर्वशक्तियों के वरदान प्राप्त करने वाले, किसी भी स्थान में रहते हैं, तो वहाँ सूली से काँटा बन जाता है अर्थात् वे सेफ रह जाते हैं। कैसा भी समय हो यदि शक्तियों का स्टॉक जमा होगा, तो शक्तियाँ आपकी प्रकृति को दासी जरुर बनावेंगी अर्थात् साधन स्वत: जरुर प्राप्त होंगे।

13.9.74

अभी तो समय समीप आता जा रहा है, यह मानो युद्ध के मैदान में सामने आने का समय है। ऐसे समय में चारों ओर सर्व-शक्तियों का स्वयं में अटेन्शन चाहिए। अगर जरा भी अटेन्शन कम होगा तो जैसे-जैसे समय -प्रमाण चारों ओर टेन्शन (तनाव) बढ़ता जाता है ऐसे ही चारों ओर टेन्शन के वातावरण का प्रभाव, युद्ध में

उपस्थित हुए रूहानी पाण्डव सेना में भी पड़ सकता है। **दिन-प्रतिदिन जैसे सम्पूर्णता का समय नजदीक आता जायेगा तो दुनिया में टेन्शन और भी बढ़ेगा, कम नहीं होगा। खींचातान के जीवन का चारों ओर अनुभव होगा जैसे कि चारों ओर से खींचा हुआ होता है। एक तरफ से प्रकृति की छोटी-छोटी आपदाओं का नुकसान का टेन्शन, दूसरी तरफ इस दुनिया की गवर्नमेन्ट के कड़े लॉज का टेन्शन, तीसरी तरफ व्यवहार में कमी का टेन्शन, और चौथी तरफ जो लौकिक सम्बन्धी आदि से स्नेह और -फ्रीडम होने के कारण खुशी की भासना अल्प काल के लिये रहती है वह भी समाप्त हो कर भय की अनुभूति के टेन्शन में, चारों ओर का टेन्शन लोगों में बढ़ना है। चारों ओर के टेन्शन में आत्मायें तड़फेंगी। जहाँ जायेंगी वहाँ टेन्शन। जैसे शरीर में भी कोई नस खिंच जाती है तो कितनी परेशानी होती है। दिमाग खिंचा हुआ रहता है। ऐसे ही यह वातावरण बढ़ता जायेगा। जैसे कि कोई ठिकाना नजर नहीं आयेगा कि क्या करें? अगर हाँ करे तो भी खिंचावट - ना करें तो भी खिंचावट - कमायें तो भी मुश्किल, न कमायें तो भी मुश्किल। इकट्ठा करें तो भी मुश्किल, न करे तो भी मुश्किल। ऐसा वातावरण बनता जायेगा। ऐसे टाइम पर चारों ओर के टेन्शन का प्रभाव रूहानी पाण्डव सेना पर न हो।** स्वयं को टेन्शन में आने की समस्यायें न भी हों, लेकिन वातावरण का प्रभाव कमजोर आत्मा पर सहज ही हो जाता है। भय का सोच कि क्या होगा? कैसे होगा? इन बातों का प्रभाव न हो - उसके लिये कोई-न-कोई बीच-बीच में ईश्वरीय याद की यात्रा का विशेष प्रोग्राम मधुबन द्वारा ऑफिशियल जाते रहना चाहिए। जिससे कि आत्माओं का किला मजबूत रहेगा।

3.8.75

अब तक यह साधारण परिस्थितियाँ हैं। **विकराल रूप तो प्रकृति अब धारण करेगी जिसमे विशेष आपदाओं का वार अचानक ही होगा। अभी तो**

थोड़ा समय पहले मालूम पड़ जाता है। लेकिन प्रकृति का विकराल रूप क्या होगा? एक ही समय प्रकृति के सभी तत्व साथ-साथ और अचानक वार करेंगे। किसी भी प्रकार के प्रकृति के साधन बचाव के काम के नहीं रहेगे और ही साधन समस्या का रूप बनेंगे। ऐसे समय पर प्रकृति के विकराल रूप का सामना करने के लिये किस बात की आवश्यकता होगी? अपने अकाल-तख्त नशीन अकालमूर्त बनने से महाकाल बाप के साथ-साथ 'मास्टर महाकाल' स्वरूप में स्थित होंगे तब ही सामना कर सकेंगे।

जैसे प्रकृति के पाँच तत्व विकराल रूप को धारण करेंगे, वैसे ही पाँच विकार भी अपना शक्तिशाली रूप धारण कर अन्तिम वार अति सूक्ष्म रूप में ट्रायल करेंगे अर्थात् माया और प्रकृति दोनों ही अपना फुल फोर्स का अन्तिम दाव लगायेंगे। जैसे किसी भी स्थूल युद्ध में भी अन्तिम दृश्य ह्रास पैदा करने वाला होता है और हिम्मत बढ़ाने वाला भी होता है, ऐसे ही कमजोर आत्माओं के लिये भी ह्रास पैदा करने वाला दृश्य होगा - मास्टर सर्वशक्तिवान् आत्माओं के लिये वह हिम्मत और हुल्लास देने वाला दृश्य होगा।

ऐसे समय में समेटने की शक्ति आवश्यक है। जो अपने देह-अभिमान के संकल्प को, देह की दुनिया की परिस्थितियों के संकल्प को, क्या होगा? - इस हलचल के संकल्प को भी समेटना है। शरीर और शरीर के सर्व सम्पर्क की वस्तुओं को भी वा अपनी आवश्यकताओं के साधनों की प्राप्ति के संकल्प को भी समेटना है। **घर जाने के संकल्प के सिवाय अन्य किसी संकल्प का विस्तार न हो - बस यही संकल्प हो कि अब अपने घर गया कि गया। शरीर का कोई भी सम्बन्ध व सम्पर्क नीचे न ला सके। जैसे इस समय साक्षात्कार में जाने वाले साक्षात्कार के आधार पर अनुभव करते हैं कि मैं आत्मा इस आकाश तत्व से भी पार उड़ती हुई जा रही हूँ, ऐसे ही ज्ञानी एवं योगी आत्मायें ऐसा अनुभव करेंगी। उस समय ट्रान्स की मदद नहीं मिलेगी। ज्ञान और योग का आधार चाहिए। इसके लिये अब से अकाल-तख्त-नशीन होने का अभ्यास चाहिए। जब चाहे अशरीरीपन का अनुभव**

कर सकें, बुद्धियोग द्वारा जब चाहे तब शरीर के आधार में आयें। 'अशरीरी भव!' का वरदान अपने कार्य में अब से लगाओ।

ऐसे समय में श्रीमत कैसे लेंगे?टेलीफोन व टेलीग्राम से वायरलेस (बिना तार के विद्युत-चुम्बकीय तरंगों द्वारा समाचार भेजने का यंत्र) सेट है-चाहिये तो वायरलेस लेकिन सेट है? वायरलेस की सेटिंग कैसे होगी? बिल्कुल वाइसलेस (पाप-रहित) वाइसलेस बनना ही वायरलेस सेट की सेटिंग है। जरा अंश के भी अंश-मात्र विकार, वायरलेस के सेट को बेकार कर देगा। इसलिये महीन रूप से स्वयं के स्वयं ही चेकर बनो। तब ही प्रकृति और पाँच विकारों की अन्तिम विदाई के वार को विजयी बन सामना कर सकेंगे। यही प्रकृति वार करने के बजाय बधाई के नजारे सामने लायेगी। चारों ओर जय-जयकार की शहनाइयाँ बजायगी। और बाप-दादा के विजय माला के मणके विश्व के बीच प्रसिद्ध होंगे। सारा विश्व 'अमर भव!' का नारा लगायेगा।

14.9.75

जितना-जितना चक्रवर्ती बनकर चक्र चलायेंगे, उतना चारों ओर का अवाज़ निकलेगा कि हम लोगों ने ज्योति देखी, चलते हुए फरिश्ते देखे, यह आवाज़ फैलता जायेगा और ज्योति को फरिश्तों को ढूंढ़ने निकलेंगे कि कहां से यह ज्योति आई है, कहाँ से यह फरिश्ते चक्र लगाने आते हैं। जैसे आदि में बाप साक्षात्कार अर्थ निमित्त बने, अब अन्त में बाप सहित बच्चों को भी निमित्त बनना है। जागते हुए जैसे देखेंगे। स्वप्न में जैसे अचानक कई दृश्य आ जाते हैं ना। तो ऐसे अनुभव करेंगे तब ही साईन्स वाले भी इस विचित्र लीला को जानने और देखने के लिए समीप आयेंगे। ऐसे विचित्र नज़ारे भी थोड़े समय में ही देखेंगे और सुनेंगे। लेकिन परिक्रमा लगाओ तब तो देखेंगे ना! ऐसे कैसे देखेंगे? बैठे-बैठे ऐसे अनुभव करेंगे, जैसे कि बहुत दूर से कोई रेज़ आयीं, किरणें आयीं और कुछ जगाकर चली गयीं, ऐसे भी बहुत अनुभव करेंगे। इसके लिए कहा कि, अभी सम्पूर्ण मूर्त्त बन सेवा में समय और शक्तियाँ लगाओ। घर बैठे सब भागते हुए ढूंढ़ते हुए

आयेंगे।

5-5-77

समय समीप आने के कारण जल्दी-जल्दी सेवा का विस्तार बढ़ता ही जायेगा। क्योंकि संगम पर ही त्रेता के अन्त तक की प्रजा, रायल फैमली और साथ-साथ कलियुग के अन्त तक की अपने धर्म की आत्मायें तैयार करनी है।

अन्तः वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास करो। ऐसा समय आयेगा जो प्लेन भी नहीं मिल सकेगा। ऐसा समय नाजुक होगा तो आप लोग पहले पहुँच जायेंगे। अन्तः वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास जरूरी है। ऐसा अभ्यास करो जैसे प्रेक्टिकल में सब देखकर मिलकर आये हैं। दूसरे भी अनुभव करें - हाँ यह हमारे पास वहीं फरिश्ता आया था। फिर ढूंढने निकलेंगे फरिश्तों को। अगर इतने सब फरिश्ते चक्र लगायें तो क्या हो जाये? ऑटोमेटिकली सबका अटेन्शन जायेगा।

13.3.81

ऐसा भी समय आयेगा जब बेहद के हाल में यह चार तत्व चार दीवारों का काम करेंगे। कोई मौसम के नीचे ऊपर के कारण छत की वा दीवारों की आवश्यकता ही नहीं होगी। कहाँ तक बड़े हाल बनायेंगे। यह प्रकृति भविष्य की रिहर्सल आपको यहाँ ही अन्त में दिखायेगी। चारों ओर कितनी भी किसी तत्व द्वारा हलचल हो लेकिन जहाँ आप प्रकृति के मालिक होंगे वहाँ प्रकृति दासी बन सेवा करेगी। सिर्फ आप प्रकतिजीत बन जाओ। प्रकृति आप मालिकों का अब से आह्वान कर रही है।

जहाँ आप प्रकृतिजीत ब्राह्मणों का पाँव होगा, स्थान होगा वहाँ कोई भी नुकसान हो नहीं सकता। एक दो मकान के आगे नुकसान होगा लेकिन आप सेफ होंगे। सामने दिखाई देगा यह हो रहा है, तूफान आ रहा है, धरनी हिल रही है लेकिन वहाँ सूली होगी, यहाँ काँटा होगा। वहाँ चिल्लाना होगा यहाँ अचल होंगे।

सब आपके तरफ स्थूल-सूक्ष्म सहारा लेने के लिए भागेंगे। आपका स्थान एसलम बन जायेगा। तब सबके मुख से, 'अहो प्रभू, आपकी लीला अपरमपार है' यह बोल निकलेंगे। धन्य हो, धन्य हो। आप लोगों ने पाया, हमने नहीं जाना, गंवाया। यह आवाज़ चारों ओर से आयेगा। फिर आप क्या करेंगे? विधाता के बच्चे विधाता और वरदाता बनेंगे। लेकिन इसमें भी एसलम लेने वाले भी स्वत: ही नम्बरवार होंगे। **जो अब से अन्त तक वा स्थापना के आदि से अब तक भी सहयोग भाव में रहे हैं, विरोध भाव में नहीं रहे हैं, मानना न मानना अलग बात है लेकिन ईश्वरीय कार्य में वा ईश्वरीय परिवार के प्रति विरोध भाव के बजाए सहयोग का भाव, कार्य अच्छा है वा कार्यकर्ता अच्छे हैं, यही कार्य परिवर्तन कर सकता है, ऐसे भिन्न-भिन्न सहयोगी भावनायें वाले, ऐसे आवश्यता के समय इस भावना का फल नजदीक नम्बर में प्राप्त करेंगे अर्थात् एसलम के अधिकारी नम्बरवन बनेंगे। बाकी इस भावना में भी परसेन्टेज वाले उसी परसेन्ट प्रमाण एसलम की अंचली ले सकेंगे। बाकी देखने वाले देखते ही रह जायेंगे।** जो अभी भी कहते हैं - देख लेंगे, तुम्हारा क्या कार्य है! वा देख लेंगे आपको क्या मिला है! जब कुछ होगा तब देखेंगे, ऐसे समय की इन्तजार करने वाले, एसलम के इन्तजाम के अधिकारी नहीं बन सकते। उस समय भी देखते ही रह जायेंगे। हमारी बारी कब आती है, इसी इन्तज़ार में ही रहेंगे और आप दूर में इन्तज़ार करने वाली आत्माओं को भी मास्टर ज्ञान सूर्य बन, शुभ भावना, श्रेष्ठ बनने के कामना की किरणें चारों ओर की आत्माओं पर विश्व कल्याणकारी बन डालेंगे। फिर-कितनी भी विरोधी आत्मायें हैं, अपने पश्चाताप की अग्नि में स्वयं को जलता हुआ, बेचैन अनुभव करेंगी। और आप शीतला देवियाँ बन रहम, दया, कृपा की शीतल छीटों से विरोधी आत्माओं को भी शीतल बनायेंगी। अर्थात् सहारे के गले लगायेंगी। उस समय आपके भक्त बन 'ओ माँ, ओ माँ' पुकारते हुए विरोधी से बदल भक्त बन जायेंगे। यह हैं आपके लास्ट भक्त। तो विरोधी आत्माओं को भी अन्त में भक्तपन की अंचली जरुर देंगे। वरदानी बन 'भक्त भव' का वरदान देंगे। फिर भी हैं तो आपके भाई ना। तो ब्रदरहुड का नाता निभायेंगे, ऐसे वरदानी बने हो? जैसे प्रकृति आपका आह्वान कर रही

है ऐसे आप सब भी अपने ऐसे सम्पन्न स्थिति का आह्वान कर रहे हो?

27-10-81

अभी न रोगी रहेंगे, न डाक्टर रहेंगे। इसकी प्रैक्टिस अन्त में भी होगी। जो डाक्टर होंगे लेकिन कुछ कर नहीं सकेंगे। इतने पेशन्ट होंगे। बस उस समय सिर्फ अपनी दृष्टि द्वारा, वायब्रेशन द्वारा, उनको टैम्प्रेरी वरदान द्वारा शान्ति दे सकते हो। मरेंगे भी बहुत। मरने वालों के लिए जलाने का ही समय नहीं होगा। क्योंकि अति में जाना है ना अभी। अति में जाकर अन्त हो जायेगी। अभी के समाचारों के अनुसार भी देखों कोई नई बीमारी फैलती है तो कितनी फास्ट फैलती है। जब तक डाक्टर उस नई बीमारी की दवाई निकाले- तब तक कई खत्म हो जाते हैं। क्योंकि अति में जा रहा है। और जब ऐसा हो तब तो डाक्टर भी समझें कि हमसे भी कोई श्रेष्ठ चीज़ है। अभी तो अभिमान के कारण कहते हैं, आत्मा वगैरा कुछ नहीं है। डाक्टरी ही सब कुछ है। फिर वह भी अनुभव करेंगे। जब कुछ भी कन्ट्रोल नहीं कर पायेंगे तो कहां नजर जायेगी? अभी तो नई-नई बीमारियां कई आने वाली हैं। लेकिन यह नई बीमारियां नया परिवर्तन लायेगी।

आप लोग तो बहुत-बहुत भाग्ययवान आत्मायें हो जो विनाश के पहले अपना अधिकार पा लिया। और सब चिल्लायेंगे, हाय हमने कुछ नहीं पाया, और आप बापदादा के साथ दिलतख्त नशीन होकर उन्हों को वरदान देंगे। तो कितने भाग्यवान हो। सदा ही खुश रहते हो ना? सदा इसी मस्ती में झूमते हुए सभी पेशन्ट को भी सदा खुशी के झूले में झुलाओ। फिर आपको ही भगवान का ही अवतार मानने लग जायेंगे लेकिन आप फिर इशारा करेंगे यथार्थ की तरफ। जब ऐसे भावना में आवें तब इशारा कर सकेंगे ना। तो सभी ऐसे तैयार हो ना? सभी डाक्टर का बहुत अच्छा ग्रुप है।

जब चारों ओर अधंकार छा जायेगा तब आपकी किरणें अधंकार में स्पष्ट दिखाई देंगी। नालेज की लाइट, गुणों की लाइट, शक्तियों की लाइट, सब लाइट्स, लाइट हाउस का कार्य करेंगी। मधुबन में आये रिफ्रेश भी हुए और सेवा भी हुई

और प्रत्यक्ष फल भी मिल गया। प्लैन्स जो बनाये हैं उनको आगे बढ़ाते रहना। बापदादा के पास तो आपके संकल्प भी पहुंच जाते हैं। कागज तो आप पीछे लिखते हो।

29-12-81

अभी जैसे मस्जिद के ऊपर, चर्च के ऊपर चढ़कर अपने-अपने गीत गाते हैं। मस्जिद में अल्लाह का नाम चिल्लाते हैं, चर्च में गॉड का... मन्दिरों में आओ, आओ कहते हैं लेकिन अब ऐसा समय आयेगा जो सभी मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, चर्च आदि से सबसे मिलकर एक ही आवाज़ होगी कि 'हमारा बाबा आ गया है।' फिर आप फ़रिश्तों को ढूँढेंगे कि कहाँ गये वह। चारों ओर फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते उन्हों को नज़र आयेंगे। सारे वर्ल्ड में फ़रिश्ते छा जायेंगे। जैसे बादल छाये हुए होते हैं और सबकी नज़र पर आप एन्जिल और बाप की तरफ होगी। तो ऐसी स्टेज पर पहुँच गये हो - जो साक्षात्कार कराओ फ़रिश्ते का! अभी अगर थोड़ा-थोड़ा हिलते भी हो तो समय आने पर यह सब खत्म हो जायेगा। क्योंकि कल्प-कल्प के निश्चित फ़रिश्ते तो आप ही हो ना। आप के सिवाए और कौन हैं तो यह जो थोड़ा-थोड़ा हिलने का पार्ट वा खेल दिखाते हो यह सब समाप्त जल्दी हो जायेगा। फिर सभी के मुख से यही आवाज़ निकलेगी कि माया चली गई और हम मायाजीत बन गये। वह टाइम आ रहा है।

16-1-82

प्रश्नः- धर्मराजपुरी क्या है उसका अनुभव कब और कैसे होता है?

उत्तरः- धर्मराजपुरी कोई अलग स्थान नहीं है। सजाओं के अनुभव को ही धर्मराजपुरी कहते हैं। लास्ट में अपने पाप सामने आते हैं, और चैतन्य में यमदूत नहीं है, लेकिन अपने ही पाप डरावने रूप में सामने आते हैं। उस समय पश्चाताप और वैराग की घड़ी होती है। उस समय छोटे-छोटे पाप भी भूत की तरह लगते हैं। जिसको ही कहते हैं - यमदूत आये, काले-काले आये, गोरे-गोरे आये...ब्रह्मा बाप भी आफीशियल रूप

में सामने दिखाई देते और छोटा सा पाप भी बड़े विकराल रूप में दिखाई देता, जैसे कई आइने होते हैं जिसमें छोटा आदमी भी मोटा या लम्बा दिखाई देता है, ऐसे अन्त समय में पश्चाताप की त्राहि-त्राहि होगी। अन्दर ही कष्ट होगा। जलन होगी। ऐसे लगेगा जैसे चमड़ी को कोई खींच रहा है। यह फीलिंग आयेगी। ऐसे ही सब पापों के सज़ाओं की अनुभूति होगी जो बहुत ही कड़ी है। इसको ही 'धर्मराज पुरी' कहा गया है।

11-4-83

मैजारिटी आत्मायें मुक्ति की भीख मांगने के लिए आप कर्मातीत वानप्रस्थ महादानी वरदानी बच्चों के पास आयेंगी। जैसे अभी आपके जड़ चित्रों के आगे, कोई मन्दिरों में जाकर प्रार्थना कर सुख शान्ति मांगते हैं। कोई तीर्थ स्थानों पर जाकर मांगते हैं। कोई घर बैठे मांगते हैं। जिसकी जहाँ तक शक्ति होती वहाँ तक पहुँचते हैं, लेकिन यथाशक्ति यथाफ़ल की प्राप्ति करते हैं। कोई दूरे बैठे भी दिल से करते हैं और कोई मूर्ति के सामने तीर्थ स्थान वा मन्दिरों में जाकर भी दिखावे मात्र करते हैं। स्वार्थ वश करते हैं। उन सब हिसाब अनुसार जैसा कर्म, जैसी भावना वैसे फ़ल मिलता है। ऐसे अब समय प्रमाण आप चैतन्य महादानी वरदानी मूर्तियों के आगे प्रार्थना करेंगे। कोई सेवा स्थान रुपी मन्दिरों में पहुँचेंगे। कोई महान तीर्थ मधुबन तक पहुँचेंगे। और कोई घर बैठे साक्षात्कार करते दिव्य बुद्धि द्वारा प्रत्यक्षता का अनुभव करेंगे। सम्मुख न आते भी स्नेह और दृढ़ संकल्प से प्रार्थना करेंगे। मंसा में आप चैतन्य फ़रिश्तों का आह्वान कर मुक्ति से वर्से की अंचली मांगेंगे। थोड़े समय में सर्व आत्माओं को वर्सा दिलाने का कार्य तीव्रगति से करना होगा।

बहुतकाल से अर्थात् अब से भी एवररेडी। तीव्रगति वाले कर्मातीत, समाधान स्वरुप सदा रहने का अभ्यास नहीं करेंगे तो तीव्रगति के समय देने वाले बनने के बजाए देखने वाले बनना पड़े। तीव्र पुरुषार्थी बहुत काल वाले तीव्रगति की सेवा के निमित्त बन सकेंगे।

समस्या भी एक अपनी कमजोरी की रचना है। कोई द्वारा वा कोई सरकमस्टांस द्वारा आई हुई समस्या वास्तव में अपनी कमजोरी का ही कारण है। **जहाँ कमजोरी है वहाँ व्यक्ति द्वारा वा सरकमस्टांस द्वारा समस्या वार करती है। अगर कमजोरी नहीं तो समस्या का वार नहीं। आई हुई समस्या, समस्या के बजाए समाधान रुप में अनुभवी बनायेगी। यह अपनी कमजोरी के उत्पन्न हुए मिक्की माउस हैं। अभी तो सब हंस रहे हैं और ज़िस समय आती है उस समय क्या करते हैं? खुद भी मिक्की माउस बन जाते हैं। इससे खेलो न कि घबराओ। लेकिन यह भी बचपन का खेल हैं। न रचना करो न समय गंवाओ। इससे परे स्थिति में वानप्रस्थी बन जाओ। समझा!**

समय क्या कहता?बाप क्या कहता? अब भी खिलौनों से खेलना अच्छा लगता है क्या? जैसे कलियुग की मानव रचना भी क्या बन गई है? मुरली में सुनते हो ना। बिच्छु-टिण्डन हो गये हैं। तो यह कमजोर समस्याओं की रचना भी बिच्छू-टिण्डन के समान स्वयं को काटते हैं। शक्तिहीन बना देते हैं।

7-3-84

बहुत काल से अभ्यासी आत्मा, प्यासे की प्यास बुझा सकती है। अब चेक करो, ऐसे दुख दर्द, दर्दनाक भयानक वायुमण्डल के बीच सेकण्ड में मास्टर विधाता, मास्टर वरदाता, मास्टर सागर बन ऐसी शक्तिशाली स्थिति का अनुभव करा सकते हो? ऐसे समय पर यह क्या हो रहा है, यह देखने वा सुनने में लग गये तो भी सहयोगी नहीं बन सकेंगे। यह देखने और सुनने की ज़रा भी नाम मात्र इच्छा भी सर्व की इच्छायें पूर्ण करने की शक्तिशाली स्थिति बनाने नहीं देगी। इसलिए सदा अपने अल्पकाल की 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की शक्तिशाली स्थिति में अब से अभ्यासी बनो। हर संकल्प, हर श्वास के अखण्ड सेवाधारी, अखण्ड सहयोगी सो योगी बनो। जैसे खण्डित मूर्ति का कोई मूल्य नहीं, पूज्यनीय बनने की अधिकारी

नहीं। ऐसे खण्डित सेवाधारी खण्डित योगी ऐसे समय पर अधिकार प्राप्त कराने के अधिकारी नहीं बन सकेंगे। इसलिए ऐसे शक्तिशाली सेवा का समय समीप आ रहा है। समय घण्टी बजा रहा है। जैसे भकत लोग अपने ईष्ट देव वा देवियों को घण्टी बजाकर उठाते हैं, सुलाते हैं, भोग लगाते हैं। तो **अभी समय घण्टी बजाए ईष्ट देव, देवियों को अलर्ट कर रहे हैं। जगे हुए तो हैं ही लेकिन पवित्र प्रवृत्ति में ज्यादा बिजी हो गये हैं। प्यासी आत्माओं की प्यास मिटाने की, सेकण्ड में अनेक जन्मों की प्राप्ति वाली शक्तिशाली स्थिति के अभ्यास के लिए तैयारी करने की समय घण्टी बजा रहा है। प्रत्यक्षता के पर्दे खुलने का समय आप सम्पन्न ईष्ट आत्माओं का आह्वान कर रहा है। समझा। समय की घण्टी तो आप सबने सुनी ना।**

26-11-84

जैसे स्थूल शरीर के दर्द भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। ऐसे आज की मनुष्य आत्माओं के दिल के दर्द भी अनेक प्रकार के हैं। कभी तन के कर्म भोग का दर्द, कभी सम्बन्ध सम्पर्क से दुखी होने का दर्द, कभी धन ज्यादा आया वा कम हो गया दोनों की चिंता का दर्द, और कभी प्राकृतिक आपदाओं से प्राप्त हुए दुख का दर्द। ऐसे एक दर्द से अनेक दर्द पैदा होते रहते हैं। **विश्व ही दुख दर्द की पुकार करने वाला बन गया है। ऐसे समय पर आप सुखदाई सुख स्वरूप बच्चों का फर्ज क्या है? जन्म-जन्म के दुख दर्द के कर्ज से सभी को छुड़ाओ। यह पुराना कर्ज दुख दर्द का मर्ज बन गया है। ऐसे समय पर आप सभी का फर्ज है दाता बन जिस आत्मा को जिस प्रकार के कर्ज का मर्ज लगा हुआ है उनको उस प्राप्ति से भरपूर करो।**

जैसे अन्तिम समय समीप आ रहा है, वैसे सर्व आत्माओं के भक्ति की शक्ति भी समाप्त हो रही है। द्वापर से रजोगुणी आत्माओं में फिर भी दान-पुण्य, भक्ति की शक्ति अपने खातों में जमा थी। इसलिए अपने आत्म-निर्वाह के लिए कुछ न कुछ शान्ति के साधन प्राप्त थे। लेकिन अब तमोगुणी आत्मायें इस थोड़े समय के सुख के आत्म-

निर्वाह के साधनों से भी खाली हो गई हैं। अर्थात् भक्ति के फल को भी खाकर खाली हो गई हैं। अब नामधारी भक्ति है। फलस्वरूप भक्ति नहीं है। भक्ति का वृक्ष विस्तार को पा चुका है। वृक्ष की रंग-बिरंगी रंगत की रौनक जरूर है। लेकिन शक्तिहीन होने के कारण फल नही मिल सकता। जैसे स्थूल वृक्ष जब पूरा विस्तार को प्राप्त कर लेता, जड़जड़ीभूत अवस्था तक पहुँच जाता है तो फलदायक नहीं बन सकता है। लेकिन छाया देने वाला बन जाता है। ऐसे भक्ति का वृक्ष भी दिल खुश करने की छाया जरूर दे रहा है। गुरू कर लिया, मुक्ति मिल जायेगी। तीर्थयात्रा दान पुण्य - किया, प्राप्ति हो जायेगी। यह दिल खुश करने के दिलासे की छाया अभी रह गई है। 'अभी नहीं तो कभी मिल जायेगा'! इसी छाया में बिचारे भोले भक्त आराम कर रहे हैं लेकिन फल नहीं है। इसलिए सबके आत्म-निर्वाह के खाते खाली हैं। तो ऐसे समय पर आप भरपूर आत्माओं का फर्ज है अपने जमा किये हुए हिस्से से ऐसी आत्माओं को हिम्मत हुल्लास दिलाना। जमा है या अपने प्रति ही कमाया और खाया! कमाया और खाया उसको राजयोगी नहीं कहेंगे। स्वराज्य अधिकारी नहीं कहेंगे। राजा के भण्डारे सदा भरपूर रहते हैं। प्रजा के पालना की जिम्मेवारी राजा पर होती है।

12.12.84

ऐसा भी फ़िर समय आयेगा जैसे आदि में दवाईयाँ नहीं चलती थी। याद है ना। शुरू में कितनी समय दवाईयाँ नहीं थी। हाँ, थोड़ा मलाई मक्खन खा लिया। दवाई नहीं खाते थे। तो जैसे आदि में प्रैक्टिस कराई है ना। थे तो पुराने शरीर। अन्त में फ़िर वह आदि वाले दिन रिपीट होंगे। साक्षात्कार भी सब बहुत विचित्र करते रहेंगे। बहुतों की इच्छा है ना - एक बार साक्षात्कार हो जाए। लास्ट तक जो पक्के होंगे उन्हों को साक्षात्कार होंगे फ़िर वही संगठन की भट्ठी होगी। सेवा पूरी हो जायेगी। अभी सेवा के कारण जहाँ तहाँ बिखर गये हो! फिर नदियाँ सब सागर में समा जायेंगी। लेकिन समय नाजुक होगा। साधन होते हुए भी काम नहीं करेंगे। इसलिए बुद्धि की लाइन बहुत क्लीयर चाहिए। जो टच हो जाए कि अभी क्या करना है। एक सेकण्ड भी देरी

की तो गये। जैसे वह भी अगर बटन दबाने में एक सेकण्ड भी देरी की तो क्या रिजल्ट होगी? यह भी अगर एक सेकण्ड टचिंग होने में देरी हुई तो फ़िर पहुँचना मुश्किल होगा। वह लोग भी कितना अटेन्शन से बैठे रहते हैं। तो यह बुद्धि की टचिंग। जैसे शुरू में घर बैठे आवाज़ आया, बुलावा हुआ कि आओ, पहुँचो। अभी निकलो। और फौरन निकल पड़े। ऐसे ही अन्त में भी बाप का आवाज़ पहुंचेगा। जैसे साकार में सभी बच्चों को बुलाया। ऐसे आकार रूप में सभी बच्चों को - 'आओ-आओ' का आह्वान करेंगे। सब आना और साथ जाना। ऐसे सदा अपनी बुद्धि क्लीयर हो और कहाँ अटेन्शन गया तो बाप का आवाज़, बाप का आह्वान मिस हो जायेगा। यह सब होना ही है।

6-3-85

अभी विश्व में और भी विकारों की आग तेज़ होनी है - जैसे आग लगने पर मनुष्य चिल्लाता है ना। शीतलता का सहारा ढूँढता है। ऐसे यह मनुष्य आत्मायें, आप शीतल आत्माओं के पास तड़पती हुई आयेंगी। ज़रा-सा शीतलता के छींटे भी लगाओ। ऐसे चिल्लायेंगी। एक तरफ़ विनाश की आग, दूसरे तरफ़ विकारों की आग, तीसरे तरफ़ देह और देह के संबंध, पदार्थ के लगाव की आग, चौथे तरफ़ पश्चाताप की आग। चारों ओर आग ही आग दिखाई देगी। तो ऐसे समय पर आप शीतलता की शक्ति वाली शीतलाओं के पास भागते हुए आयेंगे। सेकण्ड के लिए भी शीतल करो। ऐसे समय पर इतनी शीतलता की शक्ति स्वयं में जमा हो जो चारों ओर की आग का स्वयं में सेक न लग जाए। चारों तरफ़ की आग मिटाने वाले शीतलता का वरदान देने वाले शीतला बन जाओ। अगर ज़रा भी चारों प्रकार की आग में से किसी का भी अंश मात्र रहा हुआ होगा तो चारों ओर की आग अंश मात्र रही हुई आग को पकड़ लेगी। जैसे आग, आग को पकड़ लेती है ना। तो यह चेक करो।

21-2-85

अभी थोड़ा समय को आगे बढ़ने दो। थोड़े समय में जब अति और अन्त - दोनों ही अनुभव होगा तो चारों ओर अन्जान आत्मायें हद के वैराग वृत्ति में आयेंगी और आप भाग्यवान आत्मायें बेहद के वैराग वृत्ति के अनुभव में होंगी।

'अति' और 'अन्त' के नजारे सामने आयेंगे तो स्वत: ही हद की वैराग वृत्ति उत्पन्न होगी और अति टेन्शन (तनाव) होने के कारण सभी का अटेन्शन (ध्यान) एक बाप तरफ जायेगा। उस समय सर्व आत्माओं की दिल से आवाज निकलेगी कि सब का रचयिता, सभी का बाप एक है और बुद्धि अनेक तरफ से निकल एक तरफ स्वत: ही जायेगी। ऐसे समय पर आप भाग्यवान आत्माओं के बेहद के वैराग वृत्ति की स्थिति स्वत: और निरन्तर हो जायेगी।

7-3-88

सारे विश्व की आत्मायें प्रकृति से, वायुमण्डल से, मनुष्य आत्माओं से, अपने मन के कमज़ोरियों से, तन से, बेचैन हैं। ऐसी आत्माओं को सुख-चैन की स्थिति का एक सेकण्ड भी अनुभव करायेंगे तो आपका दिल से बार-बार शुक्रिया मानेंगे। वर्तमान समय संगठित रूप के ज्वाला स्वरूप की आवश्यकता है।

रॉयल भिखारी बहुत हैं। सिर्फ धन के भिखारी, भिखारी नहीं होते लेकिन मन के भिखारी अनेक प्रकार के हैं। अप्राप्त आत्मायें प्राप्ति के बूँद की प्यासी बहुत हैं। इसलिए अभी संगठन में विधातापन की लहर फैलाओ। जो खजाने जमा किये हैं वह जितना मास्टर विधाता बन देते जायेंगे उतना भरता जायेगा। कितना सुना है। अभी करने का समय है। तपस्वी मूर्त का अर्थ है - तपस्या द्वारा शान्ति के शक्ति की किरणें चारो ओर फैलती हुई अनुभव में आवें।

स्व-कल्याण में ही समय जा रहा है? स्व-कल्याण करने का समय बहुत बीत चुका। अभी विधाता बनने का समय आ गया है। इसलिए बापदादा फिर से समय का इशारा दे रहे हैं। अगर अब तक भी विधातापन स्थिति का अनुभव नहीं किया तो अनेक जन्म विश्व-राज्य अधिकारी बनने के पद्मापदम भाग्य को प्राप्त नहीं कर सकेंगे, क्योंकि विश्व-राजन विश्व के मात-पिता अर्थात्

विधाता हैं। अब के विधातापन के संस्कार अनेक जन्म प्राप्ति कराता रहेगा

7.4.86

आज तो सभी रात का खेल देखकर थोड़ा थके हुए थे। थोड़ा सा परेशानी तो हुई ना। (रात को तूफान के साथ बरसात हुई) लेकिन लास्ट समय में तो बहुत कुछ होने वाला है। अगर थोड़ी सी रिहर्सल कर ली तो अच्छा है। थोड़ी रिहर्सल होनी चाहिए। बैग बैगेज समेटना और भागना, दौड़ना - यह तो एक्सरसाइज कराई। वैसे तो बूढ़ी-बूढ़ी मातायें भागती नहीं हैं लेकिन रात को बिस्तर और अटैची लेकर तो भागी। इसलिए यह भी खेल है। एक्सरसाइज तो हो गई ना। टांगे तो चली। यह छोटी-मोटी रिहर्सल तो फाइनल के आगे कुछ भी नहीं है। यह भी अभ्यास होना चाहिए। बापदादा ने कहा है एवररेडी रहो। इसमें भी एवररेडी, बारिस पड़ी सेकण्ड में चल पड़े। कोई डिस्टर्ब हुए? सेकण्ड में सेट हो गये।

3-4-97

आपके हिसाब से जिसको महारथी नहीं कहें, मैजारिटी साधारण कहते हो, वह भी स्नेह के कारण योग में अच्छे पावरफुल रहे हैं। और विशेष योग की सबजेक्ट में आगे रहने वाली ऐसी आत्मायें,योगबल से जन्म देने के निमित्त बन नई सृष्टि की स्थापना करेंगी। तो वह पूछ रहे थे कि कब हमारी सेवा शुरू होगी? इसमें भी कुछ आत्माओं का, जो गई हैं अलग पार्ट भी है। सभी का एक जैसा नहीं है लेकिन मैजारिटी का नई सृष्टि के स्थापना का पार्ट बना हुआ है। तो रूहरिहान चल रही थी। बापदादा ने तो मुस्कराते हुए उन्हों को दूसरी-दूसरी बातों में बिज़ी कर दिया क्योंकि कब का रेसपान्ड बापदादा को अकेला नहीं करना है, आप सभी को करना है। जब आप कहेंगे एवररेडी, तब उन्हों की सेवा आरम्भ होगी। इसीलिए विनाश का समय कभी भी फिक्स नहीं होना है। अचानक होना है। बापदादा ने पहले से ही इशारा दे दिया है, उस समय नहीं उल्हना देना कि बाबा थोड़ा इशारा तो देते। अचानक होना है, एवररेडी रहना है। इसके लिए एक निमित्त महारथी को एक्जैम्पल बनाया (दादी चन्द्रमणी

को)। है तो सब ड्रामा अनुसार लेकिन कोई विशाल सेवा का एक्जैम्पल भी बनता है।

3-4-97

एक बल, एक भरोसा.. कुछ भी हो जाए, बनना ही है। यह संकल्प रूपी पांव मजबूत रखना। तो बातें आयेंगी भी लेकिन ऐसे ही अनुभव करेंगे जैसे प्लेन में बादल नीचे रह जाते हैं और स्वयं बादलों के ऊपर रहते हैं। बादल एक मनोरंजन का दृश्य बन जाता है। ऐसे कितने भी काले बादलों जैसी बातें हों, जिसमें कुछ समस्या का हल या समाधान उस समय दिखाई न भी दे लेकिन यह दृढ़ निश्चय हो कि यह बादल आये हैं जाने के लिए। यह बादल बिखरने वाले ही हैं, रहने वाले नहीं हैं। ऐसे उड़ती कला की स्टेज पर स्थित हो जाओ तो कितने भी गहरे काले बादल बिखर जायेंगे और आप दृढ़ता के बल से सफल हुए ही पड़े हैं। घबराओ नहीं, यह कैसे होगा! अच्छा होगा, क्योंकि बापदादा जानते हैं जितना समय समीप आ रहा है उतना नई-नई बातें, संस्कार, हिसाब-किताब के काले बादल आयेंगे। यहाँ ही सब चुक्तू होना है। कई बच्चे कहते हैं कि दिन-प्रतिदिन और ही ऐसी बातें बढ़ती क्यों हैं? जिन बच्चों को धर्मराजपुरी में क्रास नहीं करना है, उन्हों के संगम के इस अन्तिम समय में स्वभाव-संस्कार के सब हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। धर्मराजपुरी में नहीं जाना है। आपके सामने यमदूत नहीं आयेंगे। यह बातें ही यमदूत हैं, जो यहाँ ही खत्म होनी हैं इसीलिए बीमारी बाहर निकलकर खत्म होने की निशानी है। ऐसे नहीं सोचो कि यह तो दिखाई नहीं देता है कि समय समीप है और ही व्यर्थ संकल्प बढ़ रहे हैं! लेकिन यह चुक्तू होने के लिए बाहर निकल रहे हैं। उन्हों का काम है आना और आपका काम है उड़ती कला द्वारा, सकाश द्वारा परिवर्तन करना। घबराओ नहीं। कई बच्चों की विशेषता है कि बाहर से घबराना दिखाई नहीं देता है लेकिन अन्दर मन घबराता है। बाहर से कहेंगे नहीं-नहीं, कुछ नहीं। यह तो होता ही है लेकिन अन्दर उसका सेक होगा। तो बापदादा पहले से ही सुना देता है कि घबराने वाली बातें आयेंगी लेकिन आप घबराना नहीं। अपने शस्त्र छोड़ नहीं दो।

जो घबराता है ना तो जो भी हाथ में चीज़ होती है वह गिर जाती है। तो जब यह मन में भी घबराते हैं ना तो शस्त्र व शक्तियां जो हैं वह गिर जाती हैं, मर्ज हो जाती हैं। इसीलिए घबराओ नहीं, पहले से ही पता है। त्रिकालदर्शी बनो, माया से निर्भय बनो।

14-12-97

कोई बच्चे ने बापदादा को यह उड़ीसा की रिजल्ट लिखकर दी, यह हुआ, यह हुआ...। तो वह प्रकृति का खेल तो देख लिया। लेकिन बापदादा पूछते हैं कि आप लोगों ने सिर्फ प्रकृति का खेल देखा या अपने उड़ती कला के खेल में बिजी रहे? या सिर्फ समाचार सुनते रहे? समाचार तो सब सुनना भी पड़ता है, परन्तु जितना समाचार सुनने में इन्ट्रेस्ट रहता है उतना अपनी उड़ती कला की बाजी में रहने का इन्ट्रेस्ट रहा? कई बच्चे गुप्त योगी भी हैं, ऐसे गुप्त योगी बच्चों को बापदादा की मदद भी बहुत मिली है और ऐसे बच्चे स्वयं भी अचल, साक्षी रहे और वायुमण्डल में भी समय पर सहयोग दिया। जैसे स्थूल सहयोग देने वाले, चाहे गवर्मेन्ट, चाहे आस-पास के लोग सहयोग देने के लिए तैयार हो जाते हैं, ऐसे ब्राह्मण आत्माओं ने भी अपना सहयोग - शक्ति, शान्ति देने का, सुख देने का जो ईश्वरीय श्रेष्ठ कार्य है, वह किया? जैसे वह गवर्मेन्ट ने यह किया, फलाने देश ने यह किया... फौरन ही अनाउन्समेंट करने लग जाते हैं, तो बापदादा पूछते हैं - आप ब्राह्मणों ने भी अपना यह कार्य किया? आपको भी अलर्ट होना चाहिए। स्थूल सहयोग देना यह भी आवश्यक होता है, इसमें बापदादा मना नहीं करते लेकिन जो ब्राह्मण आत्माओं का विशेष कार्य है, जो और कोई सहयोग नहीं दे सकता, ऐसा सहयोग अलर्ट होके आपने दिया? देना है ना! या सिर्फ उन्हों को वस्त्र चाहिए, अनाज चाहिए? लेकिन पहले तो मन में शान्ति चाहिए, सामना करने की शक्ति चाहिए। तो स्थूल के साथ सूक्ष्म सहयोग ब्राह्मण ही दे सकते हैं और कोई नहीं दे सकता है**। तो यह** कुछ भी नहीं है, यह तो रिहर्सल है। रीयल तो आने वाला है। उसकी रिहर्सल आपको भी बाप या समय करा रहा है। तो जो शक्तियां, जो खजाने आपके पास हैं, उसको समय पर यूज़ करना आता है?

15-11-99

समय की पुकार अब तीव्रगति और बेहद की है। छोटी सी रिहर्सल देखी, सुनी। एक ही साथ बेहद का नक्शा देखा ना! चिल्लाना भी बेहद, मरना भी बेहद, मरने वालों के साथ-साथ जीने वाले भी अपने जीवन में परेशानी से मर रहे हैं। ऐसे समय पर आप स्वराज्य अधिकारी आत्माओं का क्या कार्य है? चेक करो जैसे स्थूल साधनों के लिए बताते हैं भूकम्प आवे तो यह करना, तूफान आवे तो यह करना, आग लगे तो यह करना, वैसे आप श्रेष्ठ आत्माओं के पास जो साधन है - सर्व शक्तियाँ, योग का बल, स्नेह का चुम्बक, यह सब साधन समय के लिए तैयार है? सर्व शक्तियाँ है? किसको शान्ति की शक्ति चाहिए तो आप और कोई शक्ति दे दो तो वह सन्तुष्ट होगी? जैसे किसको पानी चाहिए और आप उसको 36 प्रकार के भोजन दे दो तो क्या वह सन्तुष्ट होगा? तो एवररेडी बनना सिर्फ अपने अशरीरी बनने के लिए नहीं। वह तो बनना ही है। लेकिन जो साधन स्वराज्य अधिकार से प्राप्त हुए हैं, परमात्म वर्से में मिले हैं वह सब अधिकार एवररेडी हैं? ऐसे तो नहीं जैसे समाचारों में सुनते हो कि जो मशीनरी इस समय चाहिए वह फारेन से आने के बाद कार्य में लगाया गया। तो साधन एवररेडी नहीं रहे ना! सर्व साधन समय पर कार्य में नहीं लगा सके। कितना नुकसान हो गया!

18.1.2001

बापदादा के पास दो ग्रुप बार-बार आते हैं, किसलिए आते हैं? दोनों ग्रुप बापदादा को कहते हैं - हम तैयार हैं। एक यह समय , प्रकृति और माया। माया समझ गई है अब हमारा राज्य जाने वाला है। और दूसरा ग्रुप है - एड़वांस पार्टी। दोनों ग्रुप ड़ेट पूछ रहे हैं। फॉरेन में तो एक साल पहले ड़ेट फिक्स करते हो ना? और यहाँ 6 मास पहले? भारत में फास्ट जाते हैं, 15 दिन में भी कोई प्रोग्राम की ड़ेट हो जाती है। तो समाप्ति, सम्पन्नता, बाप के समान बनने की ड़ेट कौन सी है? वह बापदादा से पूछते हैं। यह ड़ेट अभी आप ब्राह्मणों को फिक्स करनी है। हो सकती है? ड़ेट फिक्स हो सकती

है? पाण्ड़व बोलो, तीनों ही बोलो। (बापदादा निर्वैर भाई, रमेश भाई, बृजमोहन भाई से पूछ रहे हैं) ड़ेट फिक्स हो सकती है? बोलो - हो सकती है? कि अचानक होनी है? ड्रामा में फिक्स है लेकिन उसको प्रैक्टिकल में लाना है या नहीं? वह क्या? बताओ। होनी है? अचानक होगा? ड़ेट फिक्स नहीं होगी? होगी? पहली लाइन वाले बताओ होगी? जो कहते हैं ड्रामा को प्रैक्टिकल में लाने के लिए मन में ड़ेट का संकल्प करना पड़ेगा, वह हाथ उठाओ। करना पड़ेगा? यह नहीं उठा रहे हैं? अचानक होगी? ड़ेट फिक्स कर सकते हैं? पीछें वालों ने समझ लिया? अचानक होना है यह राइट है लेकिन अपने को तैयार करने के लिए लक्ष्य जरूर रखना पड़ेगा। बिना लक्ष्य के सम्पन्न बनने में अलबेलापन आ जाता है। आप देखो जब ड़ेट फिक्स करते हो तभी सफलता मिलती है। कोई भी प्रोग्राम की ड़ेट फिक्स करते हो ना? बनना ही है, यह संकल्प तो करना पड़ेगा ना! या नहीं आपेही हो जायेगा, ड्रामा में? क्या समझते हो? यह पहली लाइन बताओ। प्रेम (देहरादून) सुनाओ। करना पड़ेगा, करना पड़ेगा। जयन्ती बोलो, करना पड़ेगा। वह कब होगी? अन्त में होगी जब समय आ जायेगा! समय सम्पन्न बनायेगा या आप समय को समीप लायेंगे?

30-11-2004

अब ऐसी मीटिंग करो, कि कब तक सम्पन्न बनेंगे? और सब फंक्शन मनाते हो, ड़ेट फिक्स करते हो, फलाना प्रोग्राम फलानी ड़ेट, इसकी ड़ेट नहीं है? जितने साल चाहिए उतने बताओ। क्यों? बापदादा क्यों कहते हैं? क्योंकि बाप से प्रकृति पूछती है कि कब तक विनाश करें? तो बापदादा क्या जवाब दें। बापदादा बच्चों से ही पूछेंगे ना। कब तक?

21-10-05

मैं आत्मा हूँ। आत्मा का संसार बापदादा। आत्मा का संस्कार ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता। तो क्या करेंगे, यह मन की ड्रिल। आजकल

ड़ाक्टर्स भी कहते हैं ड्रिल करो, ड्रिल करो। एक्सरसाइज। तो यह एक्सरसाइज करो। मैं आत्मा। मेरा बाबा। क्योंकि समय की गति को ड्रामानुसार स्लो करना पड़ता है। होना चाहिए क्रियेटर को तीव्र, क्रियेशन को नहीं लेकिन अभी के प्रमाण समय तेज जा रहा है। प्रकृति एवररेड़ी है सिर्फ आड़र के लिए रूकी हुई है। ड्रामा का समय ही आड़र करेगा ना। स्थापना वाले अगर एवररेड़ी नहीं होंगे तो विनाश के बाद क्या प्रलय होगी? होनी है प्रलय? कि विनाश के बाद स्थापना होनी ही है? तो स्थापना के निमित्त बने हुए हैं।

21-10-05

सबको नज़र आयेंगे फरिश्ते ही फरिश्ते घूम रहे हैं। यह साक्षात्कार होना है। अनुभव करेंगे पता नहीं कहाँ फरिश्तों का झुण्ड सृष्टि पर आ गया है हमको उठाने के लिए। एक दो को देखो ही फरिश्ते स्वरूप में। यह फलाना है, फलाना है नहीं, फरिश्ता है। ठीक है।

31-12-06

आगे चलकर यह प्रकृति के खेल और भी बढ़ते जायेंगे क्योंकि प्रकृति में भी अभी आदि समय की शक्ति नहीं रही है। ऐसे समय पर अभी सोचो, अभी कौन सी सत्ता परिवर्तन कर सकती! यह साइलेन्स की शक्ति विश्व परिवर्तन करेगी। यह चारों ओर की हलचल मिटाने वाले कौन हैं? जानते हो ना! सिवाए परमात्म पालना के अधिकारी आत्मा के और कोई नहीं कर सकता।

18-02-08

समय नाज़ुक आना ही है। ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति द्वारा टचिंग पावर कैचिंग पावर बहुत आवश्यक होगी। ऐसा समय आयेगा जो यह साधन कुछ नहीं कर सकेंगे, सिर्फ आध्यात्मिक बल, बापदादा के डायरेक्शन्स की टचिंग कार्य करा सकेगी। तो अपने में चेक करो - बापदादा की ऐसे समय में मन और

बुद्धि में टचिंग आ सकेगी? इसमें बहुतकाल का अभ्यास चाहिए, इसका साधन है मन बुद्धि सदा ही कभी कभी नहीं, सदा क्लीन और क्लीयर चाहिए। अभी रिहर्सल बढ़ती जायेगी और सेकण्ड में रीयल हो जायेगी। जरा भी अगर मन में बुद्धि में किसी भी आत्मा के प्रति या किसी भी कार्य के प्रति, किसी भी साथी सहयोगी के प्रति जरा भी निगेटिव होगा तो उसको क्लीन और क्लीयर नहीं कहा जायेगा। इसलिए बापदादा यह अटेन्शन खिंचवा रहा है। सारे दिन में चेक करो - साइलेन्स पावर कितनी जमा की?

18-02-08

आगे चलकर समय परिवर्तन होने से आपकी सेवा सिर्फ वर्णन करने से नहीं, समय नाजुक होने से इतना समय कोई निकाल नहीं सकेगा लेकिन आपके खजाने सम्पन्न चेहरे से, चलन से आपकी अलौकिकता का दूर से ही साक्षात्कार होगा।

25-10-09

देख रहे हो दुनिया की हालतें बिगड़ने में शुरू जोर से हो रही है और बापदादा का यह महावाक्य कुछ समय से चल रहा है कि अचानक होना है। तो अचानक होना है और अगर बहुत समय का अभ्यास नहीं होगा तो बताओ अचानक के समय अभ्यास की आवश्यकता है ना! अभी-अभी देखो बापदादा ने होमवर्क र्दिया, 10 मिनट, टोटल 24 बारी 10-10 मिनट का होमवर्क दिया, तो कई बच्चों को मुश्किल हो रहा है। तो सोचो, अगर 10 मिनट का अभ्यास का नहीं हो सकता तो अचानक में उस समय क्या करेंगे? बापदादा जानते है कि 24 बारी में कईयों को समय थोड़ा कम मिलता है, लेकिन बापदादा ने ट्रायल की कि 10 मिनट एक ही स्मृति में जब चाहे, जैसे चाहे वैसे कर सकते है, बापदादा यह नहीं कहते अभी भी 10 मिनट करो, अच्छा नहीं हो सकता, जिसको हो सकता हैै वह करे, अगर नहीं हो सकता है तो 5 मिनट करो, 5 मिनट से 7 मिनट, 6 मिनट, जितना भी बढ़ा सको उतनी ट्रायल करो। बापदादा खुद ही कह रहा है इसमें ऐसी बात नहीं है अगर 10 मिनट

जयादा टाइम लगता है तो चलो 8 मिनट करो, 9 मिनट करो, जितना ज्यादा कर सको उतनी आदत डालो क्योंकि बहुतकाल का वरदान प्रैक्टिकल में अभी कर सकते हैं। अगर अभी बहुतकाल का अभ्यास नहीं होगा तो अभी के बहुतकाल का पुरुषार्थ की जो प्राप्ति है, आधाकल्प की उस बहुतकाल में फर्क पड़ जायेगा।

31-12-09

अभी समय प्रमाण सब अचानक होना है। बताके नहीं होना है। जैसे अभी प्रकृति का अचानक बातों का खेल चल रहा है, आरम्भ हुआ है अभी। नई-नई बातें अचानक अर्थक्वेक हुआ, थोड़े समय में लाखों आत्मायें चली गई, क्या उन्हों को पता था कि कल हम होंगे या नहीं? ऐसे कई एक्सीडेन्टें, भिन्न-भिन्न स्थान पर अचानक होना आरम्भ हो गया है। इकट्ठे के इकट्ठे एक समय अनेकों की टिकट कट रही है तो ऐसे समय में आप एवररेडी है? यह तो नहीं कहेंगे कि पुरुषार्थ कर रहा हूँ? एवररेडी अर्थात् कोई भी वरदान या स्वमान का संकल्प किया और स्वरूप बना इसलिए बापदादा आज इस बात पर अटेन्शन दिला रहे है कि किसी भी वरदान को फलीभूत कर वरदान या स्वमान के स्वरूप के अनुभवी बन सकते हो? बनना ही पड़ेगा। कोशिश कर रहा हूँ, अगर कोशिश भी करनी है तो अभी से क्योंकि बहुत समय का अभ्यास समय पर मदद देगा।

30-01-10

2.2 अन्तिम समय का अभ्यास

संजय की कलम से (बी.के. जगदीशचंद्र हसीजा).........

अन्तिम समय के लिए आध्यात्मिक तैयारियाँ

अन्तिम समय किसको कहेंगे? पहले यह समझना होगा, उसके बाद क्या तैयारी करनी है, उसके बारे में सोचना होगा। वह अन्तिम समय अपने जीवन का होगा या सृष्टि नाटक का होगा। वह इस सृष्टिनाटक में हमारे 84वें जन्म का अन्तिम समय होगा। इन दोनों को हम अन्तिम समय कहेंगे। अन्तिम समय की तैयारी करना अर्थात् अन्तिम परीक्षा के लिए तैयारी करना। हम सब विद्यार्थी हैं। विद्यार्थियों को एक दिन तो परीक्षा देनी ही पड़ेगी।

बाबा कहते हैं कि उनके पास बहुत बड़ी टी.वी. स्क्रीन है। उसमें सब कुछ देख सकते हैं। हर समय हमारी परीक्षा होती है और हमारा रिकार्ड बाबा की टी.वी. में रखा जाता है। इसलिए हम कभी न भूलें कि बाबा देख रहा है। ऐसे भी नहीं समझना चाहिए कि हमारी अन्तिम परीक्षा अन्त में ही होगी लेकिन समझना चाहिए कि हर समय हमारी परीक्षा होती है और हर वक्त हम परीक्षा हॉल में बैठे हैं।

जब पहली बार मैंने इस संस्था में कदम रखा तब एक बात मुझे बहुत अच्छी लगी। उस समय बहन ने मुझे ज्ञान की कई बातें सुनायीं, उसमें एक बात उसने खास बतायी कि गुस्सा नहीं करना है। मैंने सोचा, यह क्या बड़ी बात है? हर धर्म में कहा जाता है कि क्रोध करना बड़ा पाप है, क्रोध नहीं करना चाहिए। फिर उसने कहा कि न केवल हमें गुस्सा नहीं करना है बल्कि अन्दर भी गुस्सा नहीं रखना है और न दिखाना है। मैंने सोचा यह क्या नयी बात है? सब धार्मिक लोग भी

यही कहते हैं। लेकिन मुझे इनकी और बातें जानने की इच्छा थी इसलिए चुप बैठकर सुन रहा था। उस बहन ने आगे कहा कि हम सब ईश्वरीय विद्यार्थी हैं, हम सब यहाँ ईश्वरीय ज्ञान सुनते हैं। यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय है, ईश्वर यहाँ ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ाता है। जब पढ़ाई पढ़ाते हैं तो परीक्षायें भी होती हैं। आपकी भी परीक्षायें होंगी। मैंने सोचा कि यहाँ भी परीक्षा की कोई सिस्टम होगी। मुझे कोई प्रश्नपत्र दिया जायेगा, उसके उत्तर लिखने पड़ेंगे। मैंने सोचा, कोई बात नहीं, मैंने युनिवर्सिटी में इतनी परीक्षायें दी हैं, यह भी दे दूँगा। फिर वह आगे बोलने लगी कि यह सारा संसारी ही परीक्षा हॉल है। लौकिक स्कूल-कॉलेजों में परीक्षायें होती हैं तो विद्यार्थियों को सूचना दी जाती है कि फलानी तारीख, फलाने विषय पर, फलाने स्थान पर आपकी परीक्षा होगी। समय, स्थान, विषय और दिनाँक वहाँ निश्चित किया रहता है। लेकिन उन्होंने कहा कि यहाँ आपके लिए कोई स्थान, विषय, समय, दिनांक फिक्स नहीं होता। कभी भी, कहाँ भी, किसी रीति में भी, किसी समय भी आपकी परीक्षा हो सकती है। मैंने समझा, यह तो अच्छी बात है, यह एक नये तरीके की परीक्षा होगी। मुझे ध्यान रहेगा कि हर वक्त मेरी परीक्षा होगी। मुझे यह भी ध्यान रखना पड़ेगा कि हर घड़ी कोई मुझे देख रहा है। उस दिन से लेकर आज तक, अब की घड़ी तक मेरी परीक्षा चलती आ रही है। हम कोई भी कर्म करते हैं, उस समय भी हमारी परीक्षा होती रहती है। उस परीक्षा में मिलने वाले परिणाम से हमारे ऊपर प्रभाव होता रहता है।

हम हर वक्त बदल रहे हैं। लोग कहते हैं, हम परिवर्तन होना नहीं चाहते हैं लेकिन हर घड़ी हम परिवर्तन हो रहे हैं क्योंकि हर घड़ी परिवर्तन होता है, क्रिया-प्रतिक्रिया होती रहती है। परवर्तिन प्रकृति का अटल नियम है, इसको कोई रोक नहीं सकता। अन्तर यह है कि हम उसको स्व-इच्छा से स्वीकार करते हैं या समय आने पर मजबूरी से स्वीकार करते हैं। स्वीकार तो हरेक को करना ही होगा। कहते हैं ना, चाहे प्यार से या तो मार से। जीवन में हर समय हमारी परीक्षा होती है इसलिए हमें तैयारी करनी पड़ती है और तैयार रहना पड़ता है। साथ-साथ अन्तिम

घडियों की परीक्षा के लिए भी तैयारी करनी पड़ती है। चाहे वह अपने जीवन की अन्तिम घड़ियों की हो, चाहे सृष्टिचक्र की अन्तिम घड़ियों की हो। मान लो, कोई बीमार है। डॉक्टर कहते हैं कि इसको ऐसी बीमारी है जिसका कोई इलाज नहीं है। वह इतना समय ही जिन्दा रह सकता है, उसके बाद मर जायेगा। मान लीजिये कि कोई अहमदाबाद जा रहा था, रास्ते में एक्सिडेंट हो गया। उसने दादी जी से कहा था कि दादी जी मैं कल अहमदाबाद से वापस आऊँगा, आकर आपसे बात करूँगा। इतना बड़ा एक्सिडेंट हुआ है कि वह बचेगा या नहीं। इसलिए आगे का कुछ पता नहीं चलता। हमारी अन्तिम घड़ी भी कई बातों पर आधारित होती है। कोई एक्सिडेंट हो सकता है, कोई बीमारी हो सकती है, कोई प्राकृतिक आपदा हो सकती है। इनमें से कोई न कोई कारण से हमारा जीवन समाप्त हो सकता है। वही इस जीवन का अन्तिम समय है। जीवन समाप्त होने से पहले हमें सब तैयारी कर तैयार रहना है। कहा जाता है कि मौत किसी को बोलकर नहीं आती, उसका कोई समय नहीं होता। मौत का कोई कैलेण्डर नहीं है।

इसके बारे में महाभारत में एक कहानी है। यक्ष और युद्धिष्ठिर का संवाद है। यक्ष युद्धिष्ठिर से प्रश्न पूछता है कि सबसे आश्चर्यजनक बात क्या है? युद्धिष्ठिर उत्तर देता है कि संसार में हर व्यक्ति जानता है कि उसको एक दिन मरना ही है, शरीर छोड़ना ही है लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि वह भूल जाता है कि उसको मरना भी है। अतः धन कमाता है, सम्पत्ति का संग्रह करता है, सुख-सुविधा के साधनों को इकट्ठा करता है जैसे कि उसको यहाँ सदा के लिए रहना है। यही संसार में बहुत आश्चर्य की बात है।

यह बात सब क्यों भूल जाते हैं? क्योंकि हम भ्रमित हो जाते हैं। अगर हमें सदा याद रहे कि हमें शरीर छोड़ना है तो ऐसा कोई भी कर्म नहीं करेंगे जिससे पाप बन जाता है। एक आदमी था, उसने अपने गुरु से कहा, मुझे एक समस्या है, आप उसका समाधान करेंगे? गुरु ने पूछा, क्या समस्या है? उस पुजारी ने कहा कि मैं

बहुत बुरा आदमी हूँ, मैंने बहुत पाप किये हैं। मैं कभी अच्छा आदमी नहीं बन सकता, मेरे जैसा बड़ा पापी कोई नहीं है। बदलने की मैंने बहुत कोशिश की लेकिन बदल नहीं पाया। गुरु ने कहा कि तुम पूरी लगन से मेहनत करो, बदल जाओगे। उस व्यक्ति ने कहा, गुरुजी, मैंने बहुत प्रयत्न किया है, हो नहीं सका। मैं अपने आप तो नहीं बदल सकता क्योंकि मैं बहुत कमजोर हूँ। अगर आप अपनी शक्ति से मुझे बदल सकते हैं तो बदल लीजिये। गुरु ने कहा, अभी सब-कुछ भूल जाओ। यह भी भूल जाओ कि मुझे अच्छा आदमी बनना है। फिर आदमी ने पूछा कि तो अब मैं क्या करूँ? गुरु ने कहा, कुछ नहीं करो, जाओ, खाओ, पीओ और मौज करो। जो चाहे करो, जैसे चाहे करो, खुश रहो। आदमी हैरान हो गया कि गुरु क्या कह रहे हैं! वह सोचने लगा कि गुरु शायद मेरी बात समझ नहीं पा रहे हैं या वे मेरी परीक्षा लेने चाहते हैं। फिर गुरु ने कहा, तुम अभी चले जाओ, तुम्हारी आयु केवल एक हफ्ता बाकी है, इसलिए इस एक हफ्ते में जो चाहो, जितना चाहे खुशी मनाओ। वह आदमी हैरान हो गया, क्या मुझे एक हफ्ते में मरना है? पहले उसने सोचा कि गुरु ने उसको मौज-मस्ती करने के लिए खुशी से छुट्टी दे दी। फिर गुरु ने कहा कि तुम्हारा जीवन बाकी एक सप्ताह का है तो वह चिन्तित हो गया। जब उसको यह चिन्ता लग गयी कि मुझे एक हफ्ते में मरना है तो उस चिन्ता में वह खाना-पीना भूल गया, शराब पीना, पाप करना भूल गया। मन ही मन वह सोचने लगा कि बस मुझे मरना है, यहाँ से जाना है। एक दिन बीत गया, दो दिन बीत गयो। इस प्रकार वह दिन गिनती करने लगा। मन में सोचने लगा कि अगर मुझे जीवित रहना है तो भगवान ही मदद कर सकता है। जब सातवाँ दिन आया तो कुछ भी नहीं हुआ, वह मरा भी नहीं। उसने सोचा कि गुरु के पास जाकर पूछूँगा कि उन्होंने मुझे क्यों झूठ बोला, मेरा मजाक क्यों उड़ाया, मेरा अपमान क्यों किया? गुरु जी की बातों में आकर न ठीक से खाना खाया, न ठीक से सोया, यह चिन्ता लगी रही कि मुझे मरना है। गुरु ने मेरे जीवन से खिलवाड़ किया है।

वह गुरु के पास गया और कहा, गुरु जी, आपने कहा था कि मैं सात दिन

में मरने वाला हूँ लेकिन मैं अभी जिन्दा हूँ। तब गुरु ने उससे पूछा कि इन सात दिनों में तुमने कोई पाप, कोई गलती की, जो पहले किया करता था? उस व्यक्ति ने कहा, नहीं। गुरु ने कहा कि पाप कर्म करने से तुमको छुड़वाने के लिए यह युक्ति अपनानी पड़ी। अभी तुमको पता पड़ा कि हम पापों से कैसे बच सकते हैं? अगर तुम यह सदा याद रखोगे कि मुझे मरना है, तब भूलें नहीं करोगे। ऐसा नहीं समझो, मैं एक हफ्ते के बाद मरूँगा, नहीं, अभी इस घड़ी भी मर सकते हो। मृत्यु का कोई भरोसा नहीं होता, समय नहीं होता। वह कभी भी, किसी भी स्थान पर आ सकती है। तब उस व्यक्ति ने गुरु से क्षमा माँगी और कहा कि मैं आपकी बातों से नाराज़ हुआ था, आपकी इन बातों को मैं कभी नहीं भूलूँगा और पाप नहीं करूँगा।

देखिये, यह कितनी आश्चर्य की बात है कि जानते हुए भी मनुष्य भूल जाता है कि मुझे मरना है। इसलिए अन्तिम घड़ी के लिए इन्तजार करना, यह तो बहुत बड़ा भ्रम है, अपने आपको धोखा देना है क्योंकि हमारा श्वांस कब बन्द हो जायेगा क्या पता? आप जानते होंगे हमारी वायु सेना का एक एअर मार्शल जापान गया हुआ था। वहाँ एक होटल में रहा। वह भोजन कर रहा था, भोजन में मछली खा रहा था। मछली का टुकड़ा उसके गले में फँस गया, उसको श्वांस लेना नहीं हो रहा था और उस घड़ी डायनिंग टेबल पर बैठे-बैठे मर गया। उसके मन में देश के बारे में कितनी योजनायें थी! वह वहाँ भारत के प्रतिनिधि के रूप में गया था। वह अपना कार्य सम्पन्न नहीं कर सका और चला गया। क्या उसको मालूम था कि उसकी अन्तिम घड़ी जापान के एक होटल में आयेगी और वह भी भोजन करते-करते? जो खाना उसको बहुत पसन्द था, वही खाना खाते-खाते वह मर जायेगा, क्या यह उसको पता था? अन्तिम घड़ी कब भी आ सकती है, इसलिए हमें हमेशा तैयार रहना है। यह सोचना गलत हो जाता है कि जब अन्तिम समय आयेगा, तब तैयार हो जायेंगे। बाबा हमेशा कहते हैं कि सदा एवररेडी रहो।

वृद्धावस्था के लक्षण अथवा मृत्यु समीप आने के लक्षण पहले से दिखायी

पड़ते हैं, जेसे कान से सुनायी न पड़ना, आँखों से दिखायी न पड़ना, टाँगों से चल न पाना, हाथ काँपने लगना - इन सब लक्षणों से प्रकृति हमें चेतावनी देती है कि अभी तैयार रहो, यात्रा पूरी करने के लिए। कभी भी तुमको रथ छोड़ना पड़ेगा। सिर्फ बूढों के लिए नहीं है, जवानों के लिए भी, बड़े शक्तिशाली व्यक्तियों के लिए भी एक पल में मृत्यु आ सकती है। चाहे राजा हो, चाहे प्रजा, सबके शरीरों को एक दिन मिट्टी में मिलना ही पड़ता है। एक घड़ी आती है जब यह सब धन-दौलत, शान-शोहरत मिट्टी में मिल जाती है। इसलिए हमें उस अन्तिम घड़ी के लिए अभी से तैयारी करनी है। उसके लिए हमें क्या करना है? बाबा ने जो करने के लिए कहा है, हमें वही करना है। उसके लिए कुछ ईश्वरीय नियम हैं, उनका अनुसरण करना है। लौकिक में भी अगर कोई सरकार के नियमों का उल्लंघन करता है तो न्यायालय पैसे का जुर्माना लगाता है और जेल की सजा देता है। अगर वह जुर्माना नहीं दे सकता तो सजा के दिनों को और बढ़ाया जाता है। उसको कहा जाता है कि अगर यह नहीं कर सकते हो तो, यह करो, यह नहीं कर सकते हो तो, वह करो। अगर आप बाबा से कहेंगे कि मीठे बाबा, प्यारे बाबा, मैं तो बहुत कमजोर हूँ, इतने सारे मैं नहीं कर सकता हूँ, मैं बहुत पापी हूँ, कपटी हूँ, मैं देरी से ज्ञान में आया हूँ, पुरुषार्थ करने के लिए मुझे ज्यादा वक्त भी नहीं मिला है, आप कहते हैं यह करो, यह करो। बाबा, आप तो बुद्धिवानों के भी बुद्धिवान हो। आप ही समझो ना कि मैं इतनी जल्दी कैसे तैयार हो सकता हूँ? कैसे सम्पूर्ण बन सकता हूँ? इसलिए मुझे इससे भी सरल विधान बताओ। मिसाल के तौर पर, बाबा कहते हैं कि आठ घण्टा सेवा करो, आठ घण्टे विश्राम करो और आठ घण्टे योग करो। बच्चे कहते हैं कि बाबा, आठ घण्टे योग करना नहीं हो रहा है। तब बाबा कहते हैं, ठीक है, चार घण्टे तो करो। चार घंटे भी कैसे याद करें, यह भी युक्ति बताते हैं। बच्चे, अमृतवेले उठो, बाबा को याद करो। हर घंटे में दो मिनट या एक मिनट ट्राफिक कन्ट्रोल करो। कोई कार्य करने से पहले दो मिनट बाबा को याद करो। नाश्ता करते समय, भोजन करते समय, पानी-चाय-दूध पीते समय मुझे याद करो। बाथरूम में नहाते समय मुझे याद करो। बच्चे, यह नहीं कर सकते हो तो यह करो,

यह नहीं कर सकते हो तो वह करो। इस प्रकार, याद करने की अनेक युक्तियाँ बाबा हमें बताते हैं। हमें हर क्षण को अन्तिम घड़ी समझ कर तैयार रहना चाहिए क्योंकि अन्तिम क्षण कभी भी आ सकता है। मम्मा भी यही कहती थी कि हर घड़ी अन्तिम घड़ी समझ कर चलो। यह अन्तिम क्षण कहीं भी आ सकता है और किसी रूप में भी आ सकता है। आयेगा ही, यह निश्चित है।

ज्ञान सुधा भाग :-2, पेज नं:182

अन्तिम जो परीक्षा आयेगी वह मोह की होगी। इसलिए बाबा बार-बार कहते हैं कि नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनो। भले ही और विकार भी है जैसे काम, क्रोध, लोभ, अहंकार लेकिन बाकी ये सब विकार आते ही है 'मोह' के कारण। वह मोह अपने देह से हो या दूसरों की देह से हो। जितने ही विकार हैं वे मोह से उत्पन्न होते हैं। अगर इन सब विकारों को जितना चाहते हैं तो सबसे पहले मोह को जितना होगा। मोह ही सबसे पुराना दुश्मन है। अगर आप अपनी उन्नति करना चाहते हैं तो सबसे पहले 'मोह' पर जीत पाओ। मोह केवल व्यक्ति से नहीं है लेकिन वस्तु से अथवा किसी वैभव से या साधन से भी हो सकता है या खाने-पीने की चीज़ों से भी हो सकता है। बाबा कहते हैं कि किसी प्रकार का भी मोह न हो, उससे अविद्या हो जाओ, वह नष्ट हो जाये। नष्ट माना जड़ से खत्म। मोह यहाँ तक खत्म हो कि उसकी राख भी न रहे। यह हमारी अन्तिम परीक्षा होगी।

वह परीक्षा कल हो सकती है अथवा विनाश के समय हो सकती है या आज ही हो सकती है या इसी घड़ी भी हो सकती है। अगर हम मोह को नहीं छोड़ेंगे तो बाद में हमें बहुत तकलीफ होगी। जिसको अपने शरीर से मोह नहीं होता वही सहज रीति से देह का त्याग करेगा। कई लोग दूसरे देहधारियों से प्यार नहीं रखते लेकिन अपनी देह से बहुत प्यार रखते हैं। अगर अपने शरीर के प्रति भी थोड़ा-सा मोह होगा, तो शरीर छोड़ने में उनको बहुत तकलीफ होगी। कई लोग ऐसे भी होते हैं जिनको अपने शरीर से मोह नहीं है, दूसरों के देह से भी मोह नहीं है परन्तु अपने विचारों से मोह है। देखो, मैं कितने अच्छे विचार देता हूँ, कितनी

अच्छी बातें सुनाता हूँ लेकिन लोग मेरे विचार समझते नहीं है, पहचानते नहीं है। ऐसे लोग अपने विचार, अपनी योजना और तर्क पर बहुत मोहित रहते हैं। उन बातों में उनका मोह इसलिए होता है कि वे उनकी रचनायें हैं। बाबा का हमसे बहुत प्यार है क्योंकि हम उनकी रचना है। उसी प्रकार, बाबा से हमारा भी प्यार है क्योंकि वह हमारा रचयिता है। मेरापन और मैं-पन को भी भूलो, प्रभु-अर्पण कर दो। अगर आपको ये विचार आये हैं या प्लान सूझे हैं तो भी किससे? बाबा की टचिंग से ही ना! बाबा की टचिंग से आपको ये विचार आये हैं तो ये बाबा के हो गये, न कि आपके। जैसे पुजारी अपने इष्ट के ऊपर अपने फल आदि अर्पित करता है, वैसो ही आप भी अपने सब विचार या सलाहों को बाबा पर अर्पित कर दो कि बाबा, ये विचार मुझे आये हैं, मैं आपको अर्पित करता हूँ। उनको जिस प्रकार उपयोग करें, यह आपका काम है, मैं केवल निमित्त हूँ, मैंने अपना विचार व्यक्त कर दिया, बस। यह भाव हमारे मन में रहना चाहिए।

ज्ञान सुधा भाग :-3, पेज नं:193

अब तो घर जाना है? (कब जाना है?) समय कभी भी बता के नहीं आयेगा, अचानक ही आयेगा। जब समझेंगे समीप है तो नहीं आयेगा। जब समझने से थोड़े अलबेले होंगे तो अचानक आयेगा। आने की निशानी अलबेलपन वाले अलबेलेपन में आयेंगे, नहीं तो नम्बर कैसे बनेंगे? फिर तो सब कहें - हम भी अष्ट हैं, हम भी पास हैं। लेकिन थोड़ा बहुत अचानक होने से ही नम्बर होंगे। बाकी जो महारथी हैं उन्हों को टचिंग आयेगी। लेकिन बाप नहीं बतायेगा। टचिंग ऐसे ही आयेगी जैसे बाप ने सुनाया। लेकिन बाप कभी एनाउन्स नहीं करेंगे। एक सेकण्ड पहले भी नहीं कहेंगे कि एक सेकण्ड बाद होना है। यह भी नहीं कहेंगे। नम्बरवार बनने हैं, इसलिए यह हिसाब रखा हुआ है।

31.12.87

थोड़े समय में ही देखेंगे-जो संगम का सम्पूर्ण रूप आप सभी का है।

मालूम पड़ेगा-हमारे कौन से भक्त हैं, कौन सी प्रजा है। जो प्रजा होगी वह तो नज़दीक आयेंगे और जो भक्त होंगे वह आखरीन पिछाड़ी में चरणों पर झुकेंगे।

अब जल्दी परिवर्तन को लाना है। आप रचयिता हो ना! जैसा रचयिता होगा वैसी रचना होगी। रचयिता को अपने रचना का ध्यान रखना है।

16.7.69

क्या सिर्फ अपने लिए ही जमा करना है या औरों के लिए भी करना है? औरों को दान करने के लिये जमा नहीं करना है?

जो आज अपने को भरपूर समझते हैं वह भी भिखारी के रूप में आप सभी से भीख मागेंगे। तो भीख कैसे दे सकेंगे? जब जमा होगा ना। दाता के बच्चे तो सभी देने वाले ठहरे। आप सभी के एक सेकेण्ड की दृष्टि के, अमूल्य बोल के भी प्यासे रहेंगे। ऐसा अन्तिम दृश्य अपने सामने रख पुरुषार्थ करो।

भल कैसी भी आत्मा हो लेकिन सन्तुष्ट होकर जाये। तो ऐसी बातें सोचनी चाहिए। सिर्फ अपने लिए नहीं।

17.7.69

अब समय कम है। कार्य ज्यादा करना है। अभी समय जास्ती और काम कम करते हो। आगे चल करके तो समय ऐसा आने वाला है जो कि आप सभी की जीवन तो बहुत बिजी हो जायेगी। और समय कम देखने में आयेगा। यह दिन और रात दो घण्टे के समान महसूस करोगे। अब से ही यह प्रैक्टिस करो कि कम समय में काम बहुत करो। **समय को सफल करना भी बहुत बड़ी शक्ति है।** जैसे अपनी इनर्जी वेस्ट करना ठीक नहीं है, वैसे ही समय को भी वेस्ट करना ठीक नहीं है।

ऐसा समय आने वाला है जो कि आप अपनी कमाई नहीं कर सकेगे परन्तु दूसरों के लिये बहुत बिजी हो जाओगे। अभी अपनी कमाई का बहुत थोड़ा समय है। फिर दूसरों की सर्विस करने में अपनी कमाई होगी। **अभी यह जो**

थोड़ा समय मिला है उसका पूरा-पूरा लाभ उठाओ। नहीं तो, फिर यह समय ही याद आयेगा। इसलिए जैसे भी हो,जहाँ पर भी हो-परिस्थितियाँ नहीं बदलेंगी। यह नहीं सोचना कि-मुसीबतें हल्की होंगी, फिर कमाई करेंगे। यह तो दिन प्रति दिन और विशाल रूप धारण करेंगी। परन्तु इनमें रहते हुए भी अपनी स्थिति की परिपक्वता चाहिए। इसलिए ही समय का ध्यान और अपने स्वरूप की स्मृति और इसके बाद फिर स्थिति- इसका ध्यान रखना है।

23.7.69

अभी वर्तमान समय कौनसा है? अभी है बहुत नाज़ुक समय । अभी नाज़ से चलने का समय नहीं है। वह नाज बचपन के थे। अगर नाज़ुक समय में भी कोई नाजों से चलेंगे तो रिजल्ट में नुकसान ही होगा। इसलिए अभी संहारीमुर्त बनना है। विकरालरूप धारी बनना है। तो अब दिन प्रतिदिन नाजुक समय होने के कारण संहारीमूर्त बनना है। संहार भी किसका? अपने संस्कारों का। अपने विकर्मो पर और विकर्मी आत्मायें जो इस समय हैं उन्हों के ऊपर अब विकराल रूप धारण कर एक सेकेण्ड में भस्म करने का है।

अब स्नेहीमूर्त भी नहीं, अब तो काली रूप चाहिए। विकराल संहारी रूप चाहिए। अब लास्ट समय है। अब तक अगर विकराल रुपधारी नहीं बनेंगे तो अपने विकर्मों और विकर्मियों का सामना नहीं कर सकेंगें। अभी समाने की बात नहीं। विकर्मों को, व्यर्थ संकल्पों को वा विकर्मियों के विकर्मी चलन को अब समाना नहीं है लेकिन संहार करना है।

11.7.70

अब समय बीत चुका। अब कारण नहीं सुनेंगे। बहुत समय कारण सुने। लेकिन अब प्रत्यक्ष कार्य देखना है न कि कारण। अभी थोड़े समय के अन्दर धर्मराज का रूप प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे। क्योंकि अब अन्तिम समय है। अनुभव

करेंगे कि इतना समय बाप के रूप में कारण भी सुने, स्नेह भी दिया, रहम भी किया, रियायत भी बहुत की लेकिन अभी यह दिन बहुत थोड़े रह गये हैं। फिर अनुभव करेंगे कि एक संकल्प के भूल के एक का सौगुणा दण्ड कैसे मिलता है। अभी-अभी किया और अभी-अभी इसका फल वा दण्ड प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करेंगे अभी वह समय बहुत जल्दी आने वाला है।

ऐसे नहीं समझो बापदादा तो अव्यक्त हैं। हम व्यक्त में क्या भी करें। लेकिन नहीं। हरेक के एक-एक सेकेण्ड के संकल्प का चित्र अव्यक्त वतन में स्पष्ट होता रहता है। इसलिए बेपरवाह नहीं बनना है। ईश्वरीय मर्यादाओं में बेपरवाह नहीं बनना है। आसुरी मर्यादाओं वा माया से बेपरवाह बनना है न कि ईश्वरीय मर्यादाओं से बेपरवाह बनना है। बेपरवाही का कुछ-कुछ प्रवाह वतन तक पहुंचता है। इसलिए आज बापदादा फिर से याद दिला रहे हैं। सम्पूर्णता को समीप लाना है। समस्याओं को दूर भगाना है और सम्पूर्णता को समीप लाना है।

22.10.70

जब इस विनाश की आग चारों ओर लगेगी, उस समय आप श्रेष्ठ आत्माओं का पहला-पहला कर्तव्य कौन-सा है? शान्ति का दान अर्थात् शीतलता का जल देना। पानी डालने के बाद फिर क्या-क्या करते हैं? जिसको जो-कुछ आवश्यकता होती है वह उनकी आवश्यकताएँ पूर्ण करते हैं। किसी को आराम चाहिए, किसी को ठिकाना चाहिए, मतलब जिसकी जैसी आवश्यकता होती है वही पूरी करते हैं। आप लोगों को कौन-सी आवश्यकताएँ पूर्ण करनी पड़ेंगी, वह जानते हो? उस समय हरेक को अलग-अलग शक्ति की आवश्यकता होगी। किसी को सहनशक्ति की आवश्यकता, किसी को समेटने की शक्ति की आवश्यकता, किसी को निर्णय करने की शक्ति की आवश्यकता और किसी को अपने-आप को परखने की शक्ति की आवश्यकता होगी। किसी को मुक्ति के ठिकाने की आवश्यकता होगी। भिन्न-भिन्न शक्तियों की उन आत्माओं को उस समय आवश्यकता होगी। बाप के परिचय द्वारा एक सेकेण्ड में अशान्त

आत्माओं को शान्त कराने की शक्ति भी उस समय आवश्यक है। वह अभी से ही इक्ट्ठी करनी होगी। नहीं तो उस समय लगी हुई आग से कैसे बचा सकेंगे? जी-दान कैसे दे सकेंगे? यह अपने-आप को पहले से ही तैयारी करने के लिए देखना पड़ेगा। **इतना स्टॉक जमा किया है जो स्वयं भी अपने को शक्ति के आधार से चला सकें और दूसरों को भी शक्ति दे सकें ताकि कोई भी वंचित न रहे। अगर अपने पास शक्तियाँ जमा नहीं हैं और एक भी आत्मा वंचित रह गई तो इसका बोझा किस पर होगा? जो निमित्त बनी हुई हैं।** सदैव अपनी हर शक्ति का स्टॉक चैक करो। जिसके पास सर्व-शक्तियों का स्टॉक जमा है वही मुख्य गाये जाते हैं। **महारथियों का हर संकल्प पर पहले से ही अटेन्शन रहता है। महारथियों के चैक करने की रूप-रेखा ही न्यारी है। योग की शक्ति होने के कारण ऑटोमेटिकली युक्ति-युक्त संकल्प, बोल और कर्म होंगे।**

1.6.73

अभी तो फिर भी रात और दिन में आराम करने का टाइम मिलता है, लेकिन फिर तो यह रेस्ट लेना, यह भी समाप्त हो जावेगा। लेकिन जितना अव्यक्त लाइट रुप में स्थित होंगे, उतना ही शरीर से परे का अभ्यास होने के कारण यदि दो-चार मिनट भी जैसे कि अशरीरी बन जावेंगे, तो मानों जैसे कि चार घण्टे का आराम कर लिया। ऐसा समय आवेगा जो कि नींद के बजाए चार-पाँच मिनट अशरीरी बन जावेंगे, जैसे कि नींद से शरीर को खुराक मिल जाती है, वैसे ही यह भी खुराक मिल जावेगी। शरीर तो पुराने ही रहेंगे। हिसाब-किताब पुराना तो होगा ही। सिर्फ उसमें यह एडीशन (बढ़ोतरी) होगी। लाइट-स्वरुप के स्मृति को मजबूत करने से हिसाब-किताब चुक्त करने में भी लाइट रुप हो जावेंगे। जैसे इन्जेक्शन लगाने से पाँच मिनट में ही फर्क पड़ जाता है, वैसे ही नींद की गोली लेने से भी परेशानी समाप्त हो जाती है। आप भी ऐसे ही समझो कि यह हम नींद की खुराक लेते हैं। ऐसी स्टेज लाने के लिये ही यह अभ्यास है।

15.9.74

वर्तमान समय हलचल बढ़ने का समय है। लेकिनि प्रकृति की हलचल और प्रकृतिपति का अचल होना। अब तो प्रकृति भी छोटे-छोटे पेपर ले रही है लेकिन फाइनल पेपर में पाँचों तत्वों का विकराल रूप होगा। एक तरफ प्रकृति का विकाराल रूप, दूसरी तरफ पाँचों ही विकारों का अन्त होने के कारण अति विकराल रूप होगा। अपना लास्ट वार आज़माने वाले होंगे। तीसरी तरफ सर्व आत्माओं के भिन्न-भिन्न रूप होंगे। एक तरफ तमोगुणी आत्माओं का वार, दूसरी तरफ भक्त आत्माओं की भिन्न-भिन्न पुकार। चौथी तरफ क्या होगा? पुराने संस्कार। लास्ट समय वह भी अपना चान्स लेंगे। एक बार आकर फिर सदा के लिए विदाई लेंगे। संस्कार का स्वरूप क्या होगा? किसी के पास कर्मभोग के रूप में आयेंगे, किसी के पास कर्म सम्बन्ध के बन्धन के रूप में आयेंगे। किसी के पास व्यर्थ संकल्प के रूप में आयेंगे। किसी के पास विशेष अलबेलेपन और आलस्य के रूप में आयेंगे। ऐसे चारों ओर का हलचल का वातावरण होगा। राज्य सत्ता, धर्म सत्ता, विज्ञान सत्ता और अनेक प्रकार के बाहुबल सब अपनी सत्ताओं की हलचल में होंगे। ऐसे समय पर फुलस्टॉप लगाना आयेगा या क्वेश्चन मार्क सामने आयेगा? क्या होगा? इतनी समेटने की शक्ति अनुभव करते हो। देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो। प्रकृति की हलचल देख प्रकृतिपति बन प्रकृति को शान्त करो। अपने फुलस्टाप की स्टेज से प्रकृति की हलचल को स्टाप करो। तमोगुणी से सतोगुणी स्टेज में परिवर्तन करो। ऐसा अभ्यास है?

इसके लिए विशेष अभ्यास चाहिए। अभी-अभी साकारी, अभी-अभी आकारी, अभी-अभी निराकारी।

समय की गति कितनी विकराल रूप लेने वाली है। ऐसे समय के लिए एवररेडी हो ना? या डेट बतायेंगे। तब तैयार होंगे। डेट का मालूम होने से सोल कान्शंस के बजाए डेट कान्शंस हो जायेंगे। फिर फुल पास हो नहीं सकेंगे। इसलिए डेट बताई नहीं जायेगी लेकिन डेट

स्वयं ही आप सबको टच होगी।

24.12.79

जिसकी अभी से राज्य दरबार ठीक है वह धर्मराज की दरबार में नहीं जायेगे। धर्मराज भी उनकी स्वागत करेगा। स्वागत करानी है या बार-बार सौगन्ध खानी है। अभी नहीं करेंगे, अभी नहीं करेंगे - यह बार-बार कहना पड़ेगा। अपना फाइनल फैसला कर लिया है कि अभी फाइलों के भण्डार भरे हुए हैं? खाता क्लियर हो गया है या मस्तक के टेबल पर यह नहीं किया है, यह नहीं किया है - ये फाइलें रही हुई है? यह करना चाहिए, यह चाहिए की फाइलें तो नहीं भरी पड़ी हैं?

जितना पुराना खाता चलाते रहेंगे उतना ही चिल्लाना पड़ेगा। यह चिल्लाना बड़ा दर्दनाक है। एक-एक सेकेण्ड एक वर्ष के समान अनुभव होगा। इसलिए अभी भी - 'शिव-मन्त्र' द्वारा समाप्ति कर दो। अभी कईयों के खाते भस्म नहीं हुए हैं।

बाप ने खजाने दिये हैं, स्व-कल्याण और विश्व-कल्याण के प्रति, लेकिन व्यर्थ तरफ लगाना, अकल्याण के कार्य में लगाना - यह अमानत में ख्यानत हो रही है। श्रीमत के साथ परमत और जनमत की मिलावट हो रही है। मिलावट करने में होशियार भी बहुत हैं। रूप ऐसा ही रखते हैं जैसे कि श्रीमत है। शब्द मुरली के ही लेंगे लेकिन अन्तर इतना होगा जैसे शिव और शव। शिव बाप के बजाए शब में अटकेंगे। उनकी भाषा बड़ी रायल रूप की होती है। सदैव अपने को बचाने के लिए, किसने किया है, कौन देखता है, ऐसे दिलासे से स्वयं को चलाते रहते हैं। समझते हैं दूसरों को धोखा देते हैं, लेकिन स्वयं का दु:ख जमा कर रहे हैं। एक का सौ गुणा होकर जमा होता रहता है। इसलिए ख्यानत और मिलावट को समाप्त करो। रूहानियत और रहम को धारण करो। अपने ऊपर और सर्व के ऊपर रहमदिल बनो। स्व को देखो। बाप को देखो औरों को नहीं देखो। 'हे अर्जुन' बनो। जो ओटे सो अर्जुन। सदा यह स्लोगन याद रखो - **'कहकर नहीं सिखाना है,**

करके सिखाना है’। श्रेष्ठ कर्म करके सिखाना है।

7.2.80

किसी भी आत्मा को बेहद के वर्से से वंचित नहीं करना। नहीं तो वो ही आत्मायें आगे चल मेरे बनाने वालों को उल्हनें देंगी कि हमें वंचित क्यों बनाया? उन्हों के विलाप उस समय सहन नहीं कर सकेंगे। इतने दु:खमय दिल के विलाप होंगे।

30-4-82

जब समय आयेगा सभी को टिकेट कैन्सिल कराके यहाँ बिठा देंगे। ऐसे समय पर कोई सैलवेशन भी नहीं लेंगे। सभी को याद है - जब ब्रह्मा बाप अव्यक्त हुए तो वह 4 दिन कैसे बिताये? मकान बड़ा था? खाना बनाया था? फिर 4 दिन कैसे बीता था! विनाश के दिन भी ऐसे ही बीत जायेंगे। उस समय लवलीन थे ना। ऐसे ही लवलीन स्थिति में समाप्ति होगी। फिर यहाँ की पहाड़ियों पर रहकर तपस्या करेंगे। तीसरी ऑख से सारा विनाश देखेंगे। ऐसे निश्चिंत हो ना। कोई चिंता नहीं। न मकान की, न परिवार की, न काम की। सदा निश्चिंत क्या होगा यह क्वेश्चन नहीं। जो होगा अच्छा होगा। इसको कहा जाता है ‘निश्चिंत’। सेन्टर का मकान याद आ जाए, बैंक बैलन्स याद आ जाए... कुछ भी याद न आये। क्योंकि आपका सच्चा धन है ना। चाहे मकान में लगा है, चाहे बैंक में रहा हुआ है। लेकिन आपका तो पदमगुणा होकर आपको मिलेगा। आपने तो इनश्योर कर लिया ना। मिट्टी, मिट्टी हो जायेगी और आपका हक आपको पदमगुणा होकर मिल जायेगा और क्या चाहिए! सच्चा धन कभी भी वेस्ट नहीं जा सकता! समझा! ऐसे सदा निश्चिंत रहो।

20-1-84

देखते हुए न देखो। सुनते हुए न सुनो। ऐसा अभ्यास हो। इसी को ही ‘स्वीट साइलेन्स’ स्वरूप की स्थिति कहा जाता है। फिर भी बापदादा

समय दे रहा है। अगर कोई भी कमी है तो अब भी भर सकते हो। क्योंकि बहुतकाल का हिसाब सुनाया। तो अभी थोड़ा चांस है। इसलिए इस प्रैक्टिस की तरफ फुल अटेन्शन रखो। पास विद आनर बनना या पास होना इसका आधार इसी अभ्यास पर है। ऐसा अभ्यास है? समय की घण्टी बजे तो तैयार होंगे या अभी सोचते हो तैयार होना है। इसी अभ्यास के कारण 'अष्ट रत्नों की माला' विशेष छोटी बनी है। बहुत थोड़े टाइम की है। जैसे आप लोग कहते हो ना सेकण्ड में मुक्ति वा जीवनमुक्ति का वर्सा लेना सभी का अधिकार है। तो समाप्ति के समय भी नम्बर मिलना थोड़े समय की बात है। लेकिन जरा भी हलचल न हो। बस बिन्दी कहा और बिन्दी में टिक जायें। बिन्दी हिले नहीं। ऐसे नहीं कि उस समय अभ्यास करना शुरू करो - मैं आत्मा हूँ...मैं आत्मा हूँ.. यह नहीं चलेगा। क्योंकि सुनाया - वार भी चारों ओर का होगा। लास्ट ट्रायल सब करेंगे। प्रकृति में भी जितनी शक्ति होगी, माया में भी जितनी शक्ति होगी, ट्रायल करेगी। उनकी भी लास्ट ट्रायल और आपकी लास्ट कर्मातीत, कर्मबन्धन मुक्त स्थिति होगी। दोनों तरफ की बहुत पावरफुल सीन होगी। वह भी फुलफोर्स, यह भी फुलफोर्स। लेकिन सेकण्ड की विजय, विजय के नगाड़े बजायेगी। समझा लास्ट पेपर क्या है!

16.3.86

अभी भी विश्व में हलचल है और यह हलचल तो समय प्रति समय बढ़नी ही है। आप आत्माओं का फर्ज है-ऐसे समय पर आत्माओं में विशेष शान्ति की, सहन शक्ति की हिम्मत भरना, लाइट-हाउस बन सर्व को शान्ति की लाइट देना। समझा

यह फर्ज-अदाई कर सकते हो? दूर से भी कर सकते या जब सामने आयेंगे तब करेंगे? कर तो रहे हो लेकिन अभी और जैसे हलचल तेज होती जाती है, तो आपकी सेवा भी और तेज हो। समझा, पूर्वजों की पालना क्या है? ऐसे नहीं

कि पूर्वज हैं लेकिन पालना नहीं कर सकते। पूर्वज का काम ही है-पालना द्वारा शक्ति देना।

10.12.92

अशान्ति के समय पर मास्टर शान्ति-दाता बन औरों को भी शान्ति दो, घबराओ नहीं। क्योंकि जानते हो कि—जो हो रहा है वो भी अच्छा और जो होना है वह और अच्छा! विकारों के वशीभूत मनुष्य तो लड़ते ही रहेंगे। उनका काम ही यह है। लेकिन आपका काम है—ऐसी आत्माओं को शान्ति देना। क्योंकि विश्व-कल्याणकारी हो ना!

9.1.93

समय देखो प्रकृति कितना दु:ख देती है। थोड़ा सा भी तूफ़ान आया, थोड़ा सा धरनी हलचल में आई कितनों को दु:ख मिलता है। तो आपके लिये सुखदायी प्रकृति है और लोगों के लिये दु:खदायी। कोई भी दु:ख की घटना देखते हो, सुनते हो तो दु:ख की लहर आती है? कभी पोत्रा, धोत्रा दु:खी होता हो तो दु:ख की लहर आती है? दु:खधाम से न्यारे हो गये। संगम पर हो या कलियुग में हो? तो दु:खधाम से किनारा कर लिया या कि थोड़ा-थोड़ा दु:खधाम से लगाव है? बिल्कुल न्यारे हो गये? या हो रहे हो? तो सदा समय और स्वयं को याद रखो। स्वयं भी कल्याणकारी और समय भी कल्याणकारी। तो इस स्मृति से सदा ही मायाजीत और प्रकृतिजीत रहेंगे। ज़रा भी हलचल नहीं हो। तो अचल भी हो, अडोल भी हो, अटल भी हो। कोई इस निश्चय से टाल नहीं सकता।

25-11-93

दिन प्रतिदिन अचानक यह प्रकृति अपनी हलचल बढ़ाती जाती है। यह कम नहीं होनी है, बढ़नी ही है। अचानक आपदा आ जाती है। तो ऐसे समय पर समाने वा समेटने के शक्ति की आवश्यकता है। और कहाँ भी बुद्धि नहीं जाये,

बस बाप और मैं, बुद्धि को जहाँ लगाना चाहें वहाँ लग जाये। क्यों-क्या में नहीं जाये, ये क्या हुआ, ये कैसे होगा, होना तो नहीं चाहिये, हो कैसे गया-इसको ब्रेक कहेंगे?

समय है एक सेकण्ड का और आप पांच सेकण्ड में करो तो क्या होगा? तो अटेन्शन इस परिवर्तन शक्ति का चाहिये। पहले स्वयं को परिवर्तन करो तब विश्व को परिवर्तन कर सकते हो। तो स्व-परिवर्तक बने हो? पहले है स्व-परिवर्तक उसके बाद है विश्व परिवर्तक। क्योंकि अनुभव होगा कि व्यर्थ संकल्प की गति बहुत फ़ास्ट होती है। एक सेकण्ड में कितने व्यर्थ संकल्प चलते हैं, अनुभव है ना। फ़ास्ट चलते हैं ना। तो ऐसे फ़ास्ट गति के समय पॉवरफुल ब्रेक लगाकर परिवर्तन करने का अभ्यास चाहिये।

18-1-94

अभी जब समय समीप आ रहा है तो कोई भी वर्ग वाले उल्हना नहीं दें कि हमारा वर्ग रह गया। एक-एक वर्ग में विशेष एक-एक क्वालिटी का हो जो माइक का काम कर सके, क्योंकि जैसे समय समीप आ रहा है तो सर्व वर्ग वाले, सर्व धर्म वाले सबके मुख से एक आवाज निकले कि बाप आ गया, क्योंकि इस संगमयुग में ही सभी धर्म स्थापक आत्माओं वा सर्व वर्ग की आत्माओं में बीज पड़ना है। वह इतनी पावर अपने में ले जायेंगे जो फिर अपने-अपने समय पर वर्ग वा धर्म के इन्वेन्टर बनेंगे। तो सब बीज आपको तैयार करने हैं।

31-12-97

समय समीप आ रहा है और लास्ट समय आप सभी को स्वयं अपना परिचय नहीं देना है, आपकी तरफ से वह स्पीच करे, वह स्पीकर हो और आप सर्चलाइट हो। तो हर एक को अपनी एरिया से ऐसा माइक निकालना है।

30.3.99

बहुत अच्छे समय पर आ गये। आप देखो अभी भी इतनी संख्या है, आगे चलकर इतना भी नहीं मिल सकेगा। बैठना भी मिले, यह भी मुश्किल होगा।

30.3.99

ड्रिल तो याद है ना। भूल तो नहीं गये हैं क्योंकि बापदादा जानते हैं आगे का समय अति हाहाकार का होगा। आप सबको सकाश देनी पड़ेगी और सकाश देने में ही आपका अपना तीव्र पुरुषार्थ हो जायेगा। थोड़े समय में सकाश द्वारा सर्व शक्तियाँ देनी पड़ेगी और जो ऐसे नाजुक समय में सकाश देंगे, जितनों को देंगे, चाहे बहुतों को, चाहे थोड़ों को उतने ही द्वापर और कलियुग के भक्त उनके बनेंगे। तो संगम पर हर एक भक्त भी बना रहे हैं क्योंकि दिया हुआ सुख और शान्ति उनके दिल में समा जायेगा और भक्ति के रूप में आपको रिटर्न करेंगे।

20.10.2008

यह बाप समान बनना ही है, कुछ भी तूफान आये, है ही कलियुग का समाप्ति का समय, तो तूफान तो आयेंगे, परिवर्तन का समय है ना, लेकिन आप बच्चों के लिए तूफान क्या है! तूफान, तूफान नहीं लेकिन तोहफा है क्योंकि बापदादा के वरदान का हाथ सभी पुरुषार्थी बच्चों के माथे पर है।

18.01.2009

104

समय

3

संगम समय का महत्व

3. संगम समय का महत्व

संजय की कलम से (बी.के. जगदीशचंद्र हसीजा)............

संगमयुग की हमारी घडियाँ बहुत अनमोल घडियाँ हैं, इनका मूल्य कोई लगा नहीं सकता। वे ऐसे ही बीतती चली जा रही हैं। हम गफ़लत में सोये पड़े हैं। जब बेटा एक साल का हो गया तो माँ समझती है मेरा बेटा एक साल बड़ा हो गया। लेकिन उसका दूसरा पहलू यह भी है कि उसकी एक साल उम्र कम हो गयी। ऐसे ही संगमयुग के एक-एक साल बीतते चले जा रहे हैं और हम समझते हैं कि हम ज्ञान में इतने साल से चल रहे हैं। लेकिन यह भी हम नहीं समझते हैं कि संगमयुग का एक-एक साल कम होता जा रहा है। अगर इतने साल गफलता में रहकर भगवान के साथ का अनुभव करे बगैर बिता दिये तो हमने कितने अनमोल समय को बर्बाद किया? कहते हैं ना, बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। आता है तो अगले कल्प में ही। अगले कल्प में भी ऐसे ही बिताओगे जैसे इस कल्प में बिताया। इसलिए ध्यान रहे कि समय बीतता जा रहा है, अगर हम अभी अनुभव नहीं करेंगे तो कभी नहीं अनुभव कर पायेंगे।

ज्ञान सुधा भाग :-1, पेज नं: 128

समय को व्यर्थ जाने से कैसे बचायें?

संगमयुग का यह अनमोल समय है। सारे कल्प में यह वही समय है जब हम भगवान से पूरा वर्सा लेने का पुरुषार्थ करके ऊँचे से ऊँचा भविष्य बना सकते हैं। इसका एक-एक क्षण कितना मूल्यवान है! अगर हम उसका सही रीति से उपयोग करें, प्रयोग करें तो मालामाल हो जायें। अगर हम उसका उपयोग ठीक रीति से नहीं करें, गँवा दें तो कितना बड़ा नुकसान है! व्यक्ति आमतौर से कोई कार्य करता है तो देखता है कि इसके लाभ और हानि क्या हैं, जिसको हम निर्णय

कहते हैं। निर्णय माइनस और प्लस प्वाइण्ट सोचा जाता है। संगम का एक सेकण्ड, एक मिनट व्यर्थ गँवाने से कितना भारी नुकसान है! और फिर यह रिपीट (पुनरावृत्त) भी होता है। यह नुकसान ऐसा है जो फिर-फिर होगा। एक दफ़ा गँवा बैठे और आगे चलकर ठीक कर देंगे, ऐसा नहीं। गँवाया सो गँवाया हर कल्प, कल्प-कल्पान्तर गँवाना पड़ेगा। भगवान का संग मिला, वह टीचर के रूप में मिला, सद्‌गुरु के रूप में मिला। वह पारलौकिक बाप हमें पारलौकिक वर्सा देने के लिए आया है। इतना प्यार से वह हमें मार्गदर्शन करता है, फिर हम उस समय को गँवा दें तो क्या कहेंगे? किन-किन बातों में हम अपना समय व्यर्थ गँवाते हैं - यह चर्चा करेंगे।

ज्ञान सुधा भाग :-2, पेज नं:13

अभी समय ही कहाँ है। समय के पहले अपने को बदलने से एक का लाख गुणा मिलेगा बदलना ही है, तो ऐसे बदलना चाहिए। याद आता है कि अगले कल्प भी वर्सा लिया था। अपने को पुराना समझने से वह कल्प पहले की स्मृति आने से पुरुषार्थ सहज हो जाता है। क्योंकि निश्चय रहता है कल्प पहले भी मैंने लिया था, अब भी लेकर छोड़ेंगे। कल्प पहले की स्मृति शक्ति दिलाने वाली होती है। अपने को नये समझेंगे तो कमजोरी के संकल्प आयेंगे। पा सकेंगे वा नहीं। लेकिन मैं हूँ ही कल्प पहले वाला इस स्मृति से शक्ति आयेगी

24.1.70

इस समय का बड़े-से-बड़ा स्वमान यही हुआ कि 'बाप के भी अभी तुम मालिक बनते हो'। विश्व के मालिक बनने से पहले विश्व के रचयिता के भी मालिक बनते हो। शिव बाबा के भी मालिक हो। इसलिए 'वालेकम सलाम' कहते हैं। सुपात्र बच्चा बाप का भी मालिक है। इस समय बाप को भी अपना बना लिया है। सारे कल्प में बाप को ऐसे अपना नहीं बना सकते हो। अभी तो जब चाहो, जिस रुप में चाहो, उस रुप से बाप को अपना बना सकते हो।

8.5.73

महारथी की यह निशानी है कि जब सर्वस्व-अर्पण कर दिया तो उसमें तन-मन-धन, सम्पत्ति, समय , सम्बन्ध और सम्पर्क भी सब अर्पण किया ना? अगर समय भी अपने प्रति लगाया और बाप की याद या बाप के कर्तव्य में नहीं लगाया, तो जितना समय अपने प्रति लगाया, तो उतना समय कट हो गया।

6-2-74

सभी समय के प्रमाण स्वयं को चढ़ती कला में हर सेकेण्ड वा संकल्प में अनुभव करते हो? क्योंकि यह तो सब जानते हो कि यह छोटा सा संगमयुग चढ़ती कला का है। इस युग को वा समय को ड्रामानुसार वरदान मिला हुआ है -

‘चढ़ती कला सर्व का भला’ - और कोई भी युग को ऐसा वरदान प्राप्त नहीं है।

यह विशेषता धर्माऊयुग भी है अर्थात् यथार्थ धर्म और यथार्थ कर्म करने वाली श्रेष्ठ आत्माएं इस धर्माऊयुग में पार्ट बजाती हैं। धर्म सत्ता, राज्य सत्ता, विज्ञान की सत्ता, सर्व सत्ताएं इस युग में ही अपना विशेष पार्ट दिखाती हैं अर्थात् इस समय ही यह तीनों सत्ताएं आत्माओं को प्राप्त होती हैं। ऐसे श्रेष्ठ समय के विशेष पार्टधारी कौन हैं? स्वयं को ऐसे समय पर श्रेष्ठ पार्टधारी समझते हो?

चढ़ती कला का आधार आप विशेष आत्माओं के ऊपर है। आपकी चढ़ती कला से ही सर्व आत्माओं का भला अर्थात् कल्याण होता है। सर्व आत्माओं की बहुत समय की आशाएं - मुक्ति को प्राप्त करने की, आपकी चढ़ती कला के आधार से ही पूर्ण होती हैं। सर्व आत्माओं की मुक्ति प्राप्ति का आधार, आप आत्माओं के जीवन मुक्ति की प्राप्ति है। ऐसे अपने को आधार मूर्त्त समझ चलते हो? देने वाला दाता बाप है - लेकिन निमित्त किसको बनाया है? वर्सा बाप द्वारा प्राप्त होता है, लेकिन बाप भी निमित्त बच्चों को बनाते हैं। इतना अटेंशन हर कदम अपने ऊपर रहता है? कि हम विशेष आत्माओं के आधार से सर्व आत्माओं का भला है। यह स्मृति रखने से अलबेलापन और आलस्य समाप्त हो जाएगा, जो वर्तमान समय किसी न किसी रूप में मैजारिटी में दिखाई देता है।

7-6-77

समय पर याद आना ही तीव्र पुरुषार्थ है।

21.1.69

वतन में होते भी टीचर का कनेक्शन होने कारण देखते हैं-कोई-कोई बहुत अलौकिकपन से पढ़ाई को रिवाइज कर रहे हैं, कोई समय गंवा रहे हैं, कोई समय सफल कर रहे हैं। जब देखते हैं समय को गँवा रहे हैं; तो मालूम क्या होता है? तरस तो आता है लेकिन तरस के साथ-साथ जो सम्बन्ध है, वह सम्बन्ध भी खिंचता है। फिर दिल होती है कि अभी-अभी बाबा से छुट्टी लेकर साकार रूप में

उन्हों का ध्यान खिचवायें। लेकिन साकार रूप का पार्ट तो पूरा ही हुआ। इसलिए दूर से ही सकाश देते हैं। बाबा जैसे साकार रूप में लाल झण्डी दिखाते थे ना, वैसे ही वतन में भी। लेकिन देखने में आता है कि अव्यक्ति रस को, अव्यक्ति मदद को बहुत थोड़े ले पाते हैं।

26.6.69

संकल्प और समय दोनों ही संगम युग के विशेष खजाने हैं। जिससे बहुत कमाई कर सकते हो। जैसे स्थूल धन को सोच समझकर प्रयोग करते हैं कि एक पैसा भी व्यर्थ न जाए। वैसे ही यह संगम का समय और संकल्प व्यर्थ न जायें। अगर संकल्प पावरफुल हैं तो अपने ही संकल्प के आधार पर अपने लिये सतयुगी सृष्टि लायेंगे। अपने ही संकल्प कमजोर हैं तो अपने लिये त्रेतायुगी सृष्टि लाते हैं। यह खजाना सारे कल्प में फिर नहीं मिलेगा। तो जो मुश्किल से एक ही समय पर मिलने वाली चीज है, उसका कितना मूल्य रखना चाहिए। अभी जो बना सो बना। फिर बने हुए को देखना पड़ेगा। बना नहीं सकेंगे। अभी बना सकते हो। उसका अब थोड़ा समय है।

अपने आप से दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि आज से फिर यह बातें कभी नहीं रहेंगी। यह संस्कार अपने में फिर इमर्ज नहीं होने देंगे। यह व्यर्थ संकल्प कभी भी उत्पन्न नहीं होने देंगे। जब ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा करेंगे तब ही प्रत्यक्ष फल मिलेगा। **अब दिन बदलते जाते हैं। तो खुद को भी बदलना है। अब ढीले पुरुषार्थ के दिन चले गये, अब है तीव्र पुरुषार्थ करने का समय । तीव्र पुरुषार्थ के समय अगर कोई ढीला पुरुषार्थ करे तो क्या कहेंगे? इसीलिए अब जोश में आओ। बार-बार बेहोश न हो।**

26.1.70

संगमयुग है सर्व बातों का बीज डालने का समय । जैसे बीज बोने का समय होता है ना। वैसे हर दैवी रस्म का बीज डालने का यह संगमयुग है। बीजरूप

द्वारा सर्व बातों का बीज पड़ता है। उस बीजरूप के साथ-साथ आप सभी भी बीज डालने की मदद करना।

कितना बड़ा कार्य करने के निमित्त हो (विश्व को पलटाने के) कितने समय में विश्व को पलटेंगे? अपने को कितने समय में तैयार करेंगे? एवररेडी हो?

14.5.70

इस संगम के युग का एक-एक संकल्प एक-एक कर्म 21 जन्म के बैंक में जमा होता है। इतना अटेन्शन रखकर फिर संकल्प भी करना। जो करूंगा वह जमा होगा। तो कितना जमा होगा। एक संकल्प भी व्यर्थ न हो। एक संकल्प भी व्यर्थ हुआ तो जमा में कट जाता है। तो जमा जब करना होता है तो एक भी व्यर्थ न हो। कितना पुरुषार्थ करना है! संकल्प भी व्यर्थ न जाये। समय तो छोड़ो।

19.6.70

संगमयुग का आप के पास अभी खज़ाना कौन-सा है? ज्ञान खज़ाना तो बाप ने दिया लेकिन अपना-अपना खज़ाना कौन-सा है? यह समय और संकल्प। जैसे बाप ने पूरा ही अपने को विल किया, वैसे आप लोगों की जो स्मृति है उसको भी पूरा विल करना है। जैसे स्थूल खज़ाने से जो चाहें वह प्राप्त कर सकते हैं। वैसे ही इस समय का यह खज़ाना 'समय और संकल्प' - इससे भी आप जो प्राप्त करना चाहो वह इन्हीं द्वारा प्राप्त कर सकते हो। सारी प्राप्ति का आधार संगमयुग का समय और श्रेष्ठ स्मृति अर्थात् याद है।

29.4.71

यह संगमयुग का सुहावना समय जितना ज्यादा हो उतना अच्छा है। क्योंकि समझते हो सारे - कल्प में यह बाप और बच्चों का मिलन फिर नहीं होगा। इसलिए समझते हो यह संगम का समय लम्बा हो जाये, न कि आपकी वीकनेस के

कारण। सदैव यही लक्ष्य रखो कि एवररेडी रहें। बाकी यह अतीन्द्रिय सुख का वर्सा निरन्तर अनुभव करने के लिए रहे हुए हैं, न कि अपनी कमजोरियों के लिये।

28.7.71

अभी जो प्राप्ति है वह फिर कभी भी प्राप्त नहीं हो सकती। तो डबल प्राप्ति है बाप और वर्सा। बाप की प्राप्ति भी सारे कल्प में नहीं कर सकते। और बाप द्वारा अभी जो वर्सा मिलता है वह भी सारे कल्प के अन्दर अभी ही मिलता है। फिर कभी भी नहीं मिलेगा।

20.8.71

इस संगमयुग को पुरूषोत्तम संगमयुग व सर्वश्रेष्ठ युग क्यों कहते हो? क्योंकि आत्मा के हर प्रकार के धर्म की, राज्य की, श्रेष्ठ संस्कारों की, श्रेष्ठ सम्बन्धों की और श्रेष्ठ गुणों की सर्व-श्रेष्ठता अभी रिकार्ड के समान भरता जाता है। **चौरासी जन्मों की चढ़ती कला और उतरती कला उन दोनों के संस्कार इस समय आत्मा में भरते हो। रिकार्ड भरने का समय अभी चल रहा है।**

जब हद के रिकार्ड भरते हैं तो भी कितना अटेन्शन रखते हैं। हद का रिकार्ड भरने वाले भी तीन बातों का ध्यान रखते हैं। वह कौन-सी है? वह लोग वायुमण्डल, अपनी वृत्ति और वाणी इन तीनों के ऊपर अटेन्शन देते हैं। अगर वृत्ति चंचल होती है और वह एकाग्र नहीं होती है तो भी वाणी में आकर्षण करने का रस नहीं करता।

आप बेहद का रिकार्ड भरने वाले, सारे कल्प का रिकार्ड भरने वाले क्या हर समय इन सभी बातों के ऊपर अटेन्शन देते हो? यह अटेन्शन रहता है कि हर सेकेण्ड रिकार्ड भर रहा हूँ? क्या इतना अटेन्शन रहता है? रिकार्ड भरते-भरते अगर उल्लास के बजाय आलस्य आ जाय तो रिकार्ड कैसे भरेगा रिकार्ड भरने के समय क्या कोई आलस्य करता है?

30.5.73

इस समय विश्व रचयिता की डायरेक्ट रचना, पहली रचना, सर्वश्रेष्ठ रचना और रचयिता के बालक सो मालिक, जो बाप-दादा के नूरे रत्न हो, दिल तख्त नशीन हो, मस्तक की मणियाँ हो और बाप-दादा के कर्तव्य में मददगार हो और जो विश्व-कल्याणकारी, विश्व के आधारमूर्त, विश्व के आगे श्रेष्ठ उदाहरण रूप में हो, क्या ऐसे बच्चे स्वमान स्मृति में रहते हैं?

पहली रचना में रचयिता के समान सर्व-शक्तियाँ स्वरूप में दिखाई देती है? पहली रचना कि विशेषता जो इस समय है क्या उसको जानते हो? जिस विशेषता के कारण विश्व रचयिता के भी मालिक बनते हो, बाप से भी विशेष पूज्य योग्य बनते हो, बाप भी ऐसी रचना का गुणगान करते हैं, और वन्दना करते हैं, वह कौन-सी विशेषता है? बाप का गायन आत्मायें ही करती हैं लेकिन ऐसी सर्वश्रेष्ठ आत्माओं का गायन स्वयं सर्वशक्तिवान् करते हैं अर्थात् परमात्मा द्वारा आत्माओं का गायन होता है। स्वयं बाप ऐसी आत्माओं का हर रोज बार-बार स्मरण करते हैं।

18.6.73

किसी भी लौकिक अथवा अलौकिक कार्य की डेट फिक्स होने के बाद फिर ऑटोमेटिकली कर्म में भी बल आ जाता है। मालूम है फलानी डेट तक यह कार्य सम्पन्न करना है। डेट को स्मृति में रखने से कर्म की स्पीड भी ऐसे चलती है। कल पूरा करना है तो स्पीड ऐसे रहेगी? इस ज्ञान का मुख्य स्लोगन ही है कि अभी नहीं तो कभी नहीं। इसकी डेट कल या परसों नहीं होती - इसकी डेट होती है अभी। घण्टे के बाद भी नहीं। इसलिये जितना निश्चय रखेंगे कि ये करना ही है - करेंगे नहीं - करना ही है यह है दृढ़ संकल्प। दृढ़ संकल्प के बिना दृढ़ता नहीं आती। और **पुरुषार्थ का समय बाकी कितना कम है? जास्ती समय दिखाई देता है क्या? समय का ख्याल तो रखना चाहिए ना। यह भी सोचो कि प्रालब्ध कितने समय की है? दो युग की प्रालब्ध है ना। इस**

पुरुषार्थ की प्रालब्ध का समय कितना कम रहा? यह सदा स्मृति में होना चाहिए।

बहुत काल की प्रालब्ध पानी है, तो पुरुषार्थ भी बहुत काल का चाहिए ना। अगर लास्ट टाइम पुरुषार्थ करेंगे तो प्रालब्ध भी लास्ट की ही मिलेगी। पुरुषार्थ फर्स्ट नहीं और प्रालब्ध फर्स्ट वाली चाहिए? लास्ट में बचा-खुचा मिलने से क्या होगा? जैसे प्राप्ति का लक्ष्य फर्स्ट का है, वैसे पुरुषार्थ भी ऐसा करो! कोई भी बात सामने आये उसको एक साईट और सीन समझो जैसे रास्ते चलते अनेक प्रकार की साईट्स और सीन्स आती है, लेकिन जो मंजिल को पाने वाला होता है, वह उसको देखता नहीं है, उसकी बुद्धि में मंजिल की प्राप्ति ही रहती है। तो यहाँ भी बुद्धि में मंजिल रखनी है, न कि वह बातें। अगर छोटी-सी बात को देखने में ही समय गंवा देंगे तो मंजिल पर समय पर पहुँच नहीं सकेंगे। तो अब दृढ़ता लाने का समय है। नहीं तो कुछ समय के बाद इस समय को भी याद करना पड़ेगा कि समय पर जो करना था, वह नहीं किया।

9.2.75

जिन सम्बन्धों के सुखों का अनुभव नहीं किया है उन सम्बन्धों में बुद्धि का लगाव जाता है और वह आत्मा का लगाव व बुद्धि की लगन, विघ्न-रूप बन जाती है। तो सारे दिन में भिन्न-भिन्न सम्बन्धों का अनुभव करो। अगर इस समय बाप से सर्व-सम्बन्धों का सुख नहीं लिया है तो सर्व-सुखों की प्राप्ति में, सर्व-सम्बन्धों की रसना लेने में कमी रह जायेगी। अभी अगर यह सुख नहीं लिया तो कब लेंगे? आत्माओं से सर्व-सम्बन्ध तो सारा कल्प अनुभव करेंगे लेकिन बाप से सर्व-सम्बन्धों का अनुभव अभी नहीं किया तो कभी भी नहीं करेंगे। तो इन सर्व-सम्बन्धों के सुखों में सारा दिन-रात अपने को बिजी रखो। इन सुखों में निरन्तर रहने से और सर्व-सम्बन्ध असार और नीरस अनुभव होंगे।

12.10.75

मुख्य संस्कार भरने का समय अभी है। आत्मा में हर जन्म के संस्कारों का रिकार्ड इस समय भर रहे हो। तो रिकार्ड भरने के समय सेकेण्ड-सेकेण्ड का अटेंशन रखा जाता है। किसी भी प्रकार के टेंशन (तनाव) का अटेंशन; टेंशन में अटेंशन रहे। अगर किसी भी प्रकार का टेंशन होता है, तो रिकार्ड ठीक नहीं भर सकेगा। सदा काल के लिए श्रेष्ठ नाम के बजाए, यही गायन होता रहेगा कि जितना अच्छा भरना चाहिए, उतना नहीं भरा है। इसलिए हर प्रकार के टेंशन से परे, स्वयं और समय का, बाप के साथ का अटेंशन रखते हुए सेकेण्ड-सेकेण्ड का, पार्ट बजाओ। मास्टर सर्वशक्तिवान, आलमाइटी अथार्टी की सन्तान - ऐसी नालेजफुल (ज्ञान सागर) आत्माओं में टेंशन का आधार दो शब्द हैं। कौन से दो शब्द? 'क्यों और क्या?' किसी भी बात में, यह क्यों हुआ? यह क्या हुआ? जब यह दो शब्द बुद्धि में आ जाते हैं, तब किसी भी प्रकार का टेंशन पैदा होता है। लेकिन संगमयुगी श्रेष्ठ पार्टधारी आत्माएं क्यों, क्या का टेंशन नहीं रख सकती हैं, क्योंकि सब जानते हैं। 'साक्षी और साथीपन' की विशेषता से, ड्रामा के हर पार्ट को बजाते हुए कभी टेंशन नहीं आ सकता। तो अपने इस विशेष कल्याणकारी समय को समझते हुए हर सेकेण्ड के संस्कारों का रिकार्ड नम्बरवन स्टेज में भरते जाओ।

9-5-77

अमृतवेले का अनुभव सभी करते हो? अगर किसी को घर बैठे लॉटरी मिले और फिर भी उसको वह छोड़ दे तो उसको क्या कहेंगे? वह भी घर बैठे लॉटरी मिलती है, अगर अभी इस लॉटरी को न लेंगे तो यह दिन भी याद करेंगे। **अभी यह प्राप्ति के दिन हैं, थोड़े समय के बाद यही दिन पश्चात्ताप के हो जाएंगे! तो जितना चाहो उतना लो। स्पीड तेज करो। सदैव याद रखो - 'अब नहीं तो कभी नहीं'। आज भी नहीं, लेकिन अभी - उसको कहा जाता है 'तीव्र पुरुषार्थी'।**

11-5-77

एक-एक सेकेण्ड की वैल्यू क्या है - उसको जानते हो? 5000 वर्ष की श्रेष्ठ प्रालब्ध का आधार यह थोड़ी सी घड़ियाँ हैं, तो ऐसे अमूल्य घड़ियों को अमूल्य रीति से यूज़ करना चाहिए ना। रतन को अगर पत्थर समान यूज़ करेंगे तो रिजल्ट क्या होगी? साधारण रीति से व्यतीत करना अर्थात् रतन की वैल्यू पत्थर के समान करना। अगर समय को व्यर्थ गँवाते हैं तो रतन को पत्थर के समान यूज़ करते हैं। समय का मूल्य रखना अर्थात् अपना मूल्य रखना। समय की पहचान है ही, लेकिन पहचान स्वरूप होकर चलना - यह है अटेन्शन की बात। इस संगम का एक सेकेण्ड भी क्या नहीं कर सकता। एक सेकेण्ड में यहाँ से चारों धाम का अनुभव करके आ सकते हो। ऐसे अनुभवी हो?

उठो तो भी याद और सेवा, सोओ तो भी याद और सेवा - इसी को कहा जाता है वानप्रस्थ। अभी तक भी अगर बचपन की बातें वा बचपन के संस्कार रह गये हों तो समाप्त करो। बन्धन है, क्या करुँ, कैसे करुँ यह सब बचपन के नाज़ नखरे हैं, अब यह दिन समाप्त हो गये, हैं क्या?

21-12-78

संगम पर ही पदमों की कमाई की खान मिलती है। फिर सारे कल्प में यह चान्स नहीं मिलता। संगमयुग है जमा करने का युग, सतयुग को भी प्रालब्ध का युग कहेंगे, जमा करने का नहीं। अभी जमा करने का युग है, जितना जमा करना चाहो उतना जमा कर सकते हो।

4.1.79

संगमयुग का सेकेण्ड अनेक पदमों की वैल्यू का है - सेंकेण्ड का भी स्वयं के प्रति वा सर्व के प्रति पदमों के मूल्य समान यूज़ नहीं किया यह भी वेस्ट किया अर्थात् जैसा मूल्य है वैसे जमा नहीं किया। हर सेकेण्ड में पदमों की कमाई का वरदान ड्रामा में संगम के समय को ही मिला हुआ है - ऐसे वरदान को स्वयं प्रति भी जमा नहीं किया, औरों के

प्रति भी दान न किया तो इसको भी व्यर्थ कहा जावेगा। ऐसे नहीं समझो कि कोई पाप तो किया नहीं वा कोई भूल तो की नहीं, लेकिन समय का लाभ न लेना भी व्यर्थ है।

10-1-79

संगमयुग के महत्त्व को जानते हुए हर संकल्प और सेकेण्ड जमा करते हो? व्यर्थ तो नहीं जाता है? सेकेण्ड भी व्यर्थ गया तो सेकेण्ड की वैल्यू बहुत बड़ी है। जैसे एक का लाख गुना बनता है वैसे एक सेकेण्ड भी व्यर्थ जाता तो लाख गुना व्यर्थ गया। इतना अटेन्शन रहता है। अलबेलापन तो नहीं आता। अभी वह समय नहीं है। अभी तो चल जाता है, कोई हिसाब लेने वाला ही नहीं है लेकिन थोड़े समय के बाद अपने आपको ही पश्चाताप होगा। समय की वैल्यू है समय के वरदान से ही अमूल्य रतन बनते हो। अमूल्य रतन समय भी अमूल्य रीति से व्यतीत करते हैं। अमूल्य रतन समझने से सेकेण्ड और संकल्प भी अमूल्य हो जायेंगे।

18-1-79

जो बाप-दादा का वायदा है - एक दो और लाख लो, यह वायदा भविष्य के लिए है। लेकिन नहीं। यह वायदा संगमयुग का ही है। जैसे सर्व श्रेष्ठ समय , सर्व श्रेष्ठ जन्म, सर्व श्रेष्ठ टाइटिल इस समय के हैं, वैसे सर्व प्राप्तियों का अनुभव, **सब वायदों की प्राप्ति इस समय होती है। भविष्य तो है ही लेकिन भविष्य से भी वर्तमान श्रेष्ठ है। इस समय ही एक कदम अर्थात् एक संकल्प बच्चे करते हैं कि बाबा हम आपके हैं और रिटर्न में बाप हर संकल्प, बोल और कर्म में अनुभव कराते हैं मैं आपका हूँ। अर्थात् बाप आपका है।** एक संकल्प का रिटर्न सारे संगमयुग की जीवन में बाप आपका ही हो जाता है। एक का सिर्फ लाख गुणा नहीं मिलता! जब चाहो, जैसे चाहो, जो चाहो, बाप सर्वेन्ट रूप में बाँधे हुए हैं। तो एक का लाख गुणा तो क्या लेकिन अनगिनत बार का रिटर्न मिलता है। वर्तमान समय का महत्त्व चलते-चलते भूल जाते हो। इस

संगमयुग को वरदान है - कौन सा? स्वयं वरदाता ही आपका है। जब वरदाता ही आपका है, तो बाकी क्या रहा? बीज आपके हाथ में हैं, जिस बीज द्वारा सेकेण्ड में जो चाहो वह ले सकते हो। सिर्फ संकल्प करने की बात है। शक्ति चाहिए, सुख चाहिए, आनन्द चाहिए।

14-11-79

अभी वेस्ट करने का समय नहीं है। संगम युग की दो घड़ी अर्थात दो सेकेण्ड भी वेस्ट की तो अनेक वर्ष वेस्ट कर दिये। संगम की वैल्यू को जानते हो ना! संगम का एक सेकेण्ड कितने वर्षो के बराबर है। तो एक दो सेकेण्ड नहीं गँवाया लेकिन अनेक वर्ष गँवा दिये। इसलिए अब फुलस्टॉप लगाओ। जो फुलस्टॉप लगाना जानता है वह सदा फुल रहेगा।

21.1.80

इस संगम समय के भाग्य का वर्णन विशेष अमृतवेले के रूप में गाया जाता है। अमृतवेला अर्थात अमृत द्वारा अमर बनने की वेला। साथ-साथ धर्माऊ युग पुरूषोत्तम युग। नुमाशाम का समय भी श्रेष्ठ भाग्य का मानते हैं। यह सब समय का गायन आपके इस समय का गायन है। तो समझा, अपने श्रेष्ठ भाग्य को।

4.2.80

प्रश्न-कौन सी पहचान बुद्धि मे स्पष्ट है तो समर्थ आत्मा बन जायेंगे?

उत्तर- समय की और स्वयं की पहचान अगर बुद्धि मे स्पष्ट है तो समर्थ आत्मा बन जायेंगें, क्योंकि यह संगम का समय ही है श्रेष्ठ तकदीर बनाने का। सारे कल्प के श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ तकदीर अभी ही बना सकते हो। संगम पर ही बाप द्वारा सर्व अधिकार प्राप्त होते हैं। तो अधिकारी आत्मा हो, श्रेष्ठ आत्मा हो, श्रेष्ठ प्रालब्ध पाने वाले हो। सदा यह स्मृति में रखो तो समर्थ हो जायेंगे। समर्थ होने से मायाजीत बन जायेंगे। समर्थ आत्मा विघ्न-विनाशक होती है। संकल्प में भी विघ्न

आ नहीं सकता। मास्टर सर्वशक्तिवान सदा विघ्न विनाशक होंगे।

11-11-81

संगमयुग की सब घड़ियाँ गुडमार्निंग ही हैं। क्योंकि संगमयुग पूरा ही अमृतवेला है। चक्र के हिसाब से संगमयुग अमृतवेला हुआ ना। तो संगमयुग का हर समय गुडमार्निंग ही है। तो बापदादा आते भी गुडमार्निंग में हैं, जाते भी गुडमार्निंग में हैं। क्योंकि बाप आता है तो रात से अमृतवेला बन गया। तो आते भी अमृतवेले में हैं और जब जाते हैं तो दिन निकल आता है लेकिन रहता अमृतवेले में ही है, दिन निकलता तो चला जाता है। और आप लोग सवेरा अर्थात् सतयुग का दिन ब्रह्मा का दिन, उसमें राज्य करते हो। बाप तो न्यारे हो जायेंगे ना। तो पुरानी दुनिया के हिसाब से सदा ही गुडमार्निंग है। सदा ही शुभ है और सदा शुभ रहेगा। इसलिए शुभ सवेरा कहें, शुभ रात्रि कहें, शुभ दिन कहें, सब शुभ ही शुभ है। तो सभी को कलियुग के हिसाब से गुडमार्निंग और संगमयुग के हिसाब से गुडमार्निंग तो डबल गुडमार्निंग।

30-4-83

संगमयुग ही मौजों का युग है। इसलिए सदा मौज में रहो। स्वप्न और संकल्प में भी व्यर्थ न हो। आधाकल्प सब व्यर्थ गंवाया, अब गंवाने का समय पूरा हुआ। कमाई का समय है। जितने समर्थ होंगे उतना कमाई कर जमा कर सकेंगे।

12.12.84

वर्तमान भाग्यवान युग में भगवान भाग्य देता है। भाग्य के श्रेष्ठ लकीर खींचने की विधि ‘श्रेष्ठ कर्म रूपी कलम’ आप बच्चों को दे देते हैं, जिससे जितनी श्रेष्ठ स्पष्ट, जन्म जन्मान्तर के भाग्य की लकीर खींचने चाहो उतनी खींच सकते हो। और **कोई समय को यह वरदान नहीं है। इसी समय को यह वरदान है जो चाहो जितना चाहो उतना पा सकते हो। क्यों ? भगवान भाग्य का**

भण्डारा बच्चों के लिए फराखदिली से, बिना मेहनत के दे रहा है। खुला भण्डार है, ताला चाबी नहीं है। और इतना भरपूर, अखुट है जो जितने चाहें, जितना चाहें ले सकते हैं।

इस समय अविनाशी बाप द्वारा सर्व प्राप्ति का समय है, यह भूल जाते हैं। बापदादा फिर भी बच्चों को स्मृति दिलाते, समर्थ बनो। अब भी टूलेट नहीं हुआ है। लेट आये हो लेकिन टूलेट का समय अभी नहीं है। इसलिए अभी भी दोनों रूप से बाप रूप से वर्सा, सतगुरु के रूप से वरदान मिलने का समय है।

अभी वरदान है जो चाहो वह बाप के खजाने से अधिकार के रूप से ले सकते हो! कमजोर हो तो भी बाप की मदद से, हिम्मते बच्चे मददे बाप, वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ बना सकते हो। बाकी थोड़ा समय है - बाप के सहयोग और बाप के भाग्य के खुले भण्डार मिलने का। अभी स्नेह के कारण बाप के रूप में हर समय हर परिस्थिति में साथी है लेकिन इस थोड़े समय के बाद साथी के बजाए साक्षी हो देखने का पार्ट चलेगा। चाहे सर्वशक्ति सम्पन्न बनो, चाहे यथाशक्ति बनो - दोनों को साक्षी हो देखेंगे। इसलिए इस श्रेष्ठ समय में बापदादा द्वारा वर्सा, वरदान, सहयोग, साथ इस भाग्य की जो प्राप्ति हो रही है उसको प्राप्त कर लो। प्राप्ति में कभी भी अलबेले नहीं बनना। अभी इतने वर्ष पड़े हैं, सृष्टि परिवर्तन के समय और प्राप्ति के समय दोनों को मिलाओ मत।

16.1.85

यह तो सभी जानते ही हो कि सारे कल्प में श्रेष्ठ खाता जमा करने का समय सिर्फ यही 'संगमयुग' है। छोटा-सा युग, छोटी-सी जीवन है। लेकिन इस युग, इस जीवन की विशेषता है जो अब ही जितना जमा करने चाहें वह कर सकते हैं। इस समय के श्रेष्ठ खाते के प्रमाण पूज्य पद भी पाते हो और फिर पूज्य सो पुजारी भी बनते हो। इस समय के श्रेष्ठ कर्मों का, श्रेष्ठ नालेज का, श्रेष्ठ सम्बन्ध का, श्रेष्ठ शक्तियों का, श्रेष्ठ गुणों का सब श्रेष्ठ खाते अभी जमा करते हो। द्वापर

से भक्ति का खाता अल्पकाल का अभी-अभी किया, अभी-अभी फल पाया और खत्म हुआ। भक्ति का खाता अल्पकाल का इसलिए है - क्योंकि अभी कमाया और अभी खाया। जमा करने का अविनाशी खाता जो जन्म-जन्म चलता रहे वह अविनाशी खाते जमा करने का अभी समय है इसलिए इस श्रेष्ठ समय को 'पुरुषोत्तम युग या धर्माऊ युग' कहा जाता है। 'परमात्म अवतरण युग' कहा जाता है। डायरेक्ट बाप द्वारा प्राप्त शक्तियों का युग कहा जाता है। इसी युग में ही बाप विधाता और वरदाता का पार्ट बजाते हैं। इसलिए इस युग को 'वरदानी युग' भी कहा जाता है। इस युग में स्नेह के कारण बाप भोले भण्डारी बन जाते हैं। जो एक का पद्मगुणा फल देता है। एक का पद्मगुणा जमा होने का विशेष भाग्य अभी ही प्राप्त होता है। और युगों में जितना और उतना का हिसाब है।

सेकण्ड में कितना कमा सकते हो और सेकण्ड में कितना गँवाते हो, यह अच्छी तरह से हिसाब जानते हो? वा साधारण रीति से कुछ कमाया कुछ गँवाया? ऐसा अमूल्य समय समाप्त तो नहीं कर रहे हो? ब्रह्माकुमार- ब्रह्माकुमारी तो बने लेकिन अविनाशी वर्से और विशेष वरदानों के अधिकारी बने? क्योंकि इस समय के अधिकारी जन्म-जन्म के अधिकारी बनते हैं। इस समय के किसी न किसी स्वभाव वा संस्कार वा किसी सम्बन्ध के अधीन रहने वाली आत्मा, जन्म-जन्म अधिकारी बनने के बजाए प्रजा पद के अधिकारी बनते हैं। राज्य अधिकारी नहीं। प्रजा पद अधिकारी बनते हैं।

6-1-86

समाप्ति का समय समीप आ रहा है। अब तक किसी न किसी बात की मेहनत में लगे रहेंगे तो प्राप्ति का समय तो समाप्त हो जायेगा। फिर प्राप्तिस्वरूप का अनुभव कब करेंगे? संगमयुग को, ब्राह्मण आत्माओं को वरदान है 'सर्व प्राप्ति भव'। 'सदा पुरूषार्थी भव' का वरदान नहीं है, 'प्राप्ति भव' का वरदान है। 'प्राप्ति भव' की वरदानी आत्मा कभी भी

अलबेलेपन में आ नहीं सकती।

9.10.87

तन का भाग्य – तन का हिसाब-किताब कभी प्राप्ति वा पुरुषार्थ के मार्ग में विघ्न अनुभव नहीं होगा, तन कभी भी सेवा से वंचित होने नहीं देगा। कर्मभोग के समय भी ऐसे भाग्यवान किसी-न-किसी प्रकार से सेवा के निमित्त बनेंगे। कर्मभोग को चलायेगा लेकिन कर्मभोग के वश चिल्लायेगा नहीं। चिल्लाना अर्थात् कर्मभोग का बार-बार वर्णन करना वा बार-बार कर्मभोग की तरफ़ बुद्धि और समय लगाते रहना। छोटी-सी बात को बड़ा विस्तार करना – इसको कहते हैं 'चिल्लाना' और बड़ी बात को ज्ञान के सार से समाप्त करना – इसको कहते हैं 'चलाना'। तो सदा यह बात याद रखो – योगी जीवन के लिए चाहे छोटा कर्मभोग हो, चाहे बड़ा हो लेकिन उसका वर्णन नहीं करो, कर्मभोग की कहानी का विस्तार नहीं करो।

19-11-89

सारे कल्प में और कोई युग नहीं है जिसमें जमा कर सको। फिर तो खर्च करना पड़ेगा, जमा नहीं कर सकेंगे। तो जमा के समय अगर जमा नहीं किया तो अन्त में क्या कहना पड़ेगा - 'अब नहीं तो कब नहीं' फिर टू लेट का बोर्ड लग जायेगा। अभी तो लेट का बोर्ड है, टू लेट का नहीं।

14.1.90

भाग्य बनाने का समय कितना है और भाग्य प्राप्त करने का समय कितना है–यह स्मृति में रहता है वा मर्ज रहता है? क्योंकि जितना समय इमर्ज रहेगा उतना समय खुशी रहेगी और मर्ज होगा तो खुशी नहीं रहेगी। पाण्डवों को काम-काज में जाने से याद रहता है या काम करने के समय काम का ही नशा रहता है कि मैं फलाना हूँ? चाहे क्लर्क हो, चाहे बिजनेसमैन हो, चाहे कुछ भी हो–वो याद रहता

है या यह याद रहता है कि मैं कल्प-कल्प का भाग्यवान हूँ? क्योंकि आपका असली आक्यूपेशन है—विश्व-कल्याणकारी। यह याद रहता है वा हद का काम याद रहता है?

18.1.93

संगमयुग पर बाप ने कितने खजाने दिये हैं? सबसे बड़ा खजाना है श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना। संगम का समय – यह भी बड़े ते बड़ा खजाना है। सर्व शक्तियां—यह भी खजाना है; सर्व गुण—यह भी खजाना है। तो सभी खजानों को सफल करना—यह है समर्थ आत्मा की निशानी।

संगमयुग के पुरुषार्थ के आधार पर सारे कल्प की प्रालब्ध है! तो एक सेकेण्ड, एक श्वॉस, एक गुण की कितनी वैल्यु है! अगर एक भी संकल्प वा सेकेण्ड व्यर्थ जाता है तो सारा कल्प उसका नुकसान होता है। तो इतना याद रहता है? एक सेकेण्ड कितना बड़ा हुआ! तो कभी भी ऐसे नहीं समझना कि सिर्फ एक सेकेण्ड ही तो व्यर्थ हुआ! लेकिन एक सेकेण्ड अनेक जन्मों की कमाई या नुकसान का आधार है। गाया हुआ है ना—कदम में पद्मों की कमाई है। एक कदम उठाने में कितना टाइम लगता है? सेकेण्ड ही लगता है ना। सेकेण्ड गँवाना अर्थात् पद्मापद्म गँवाना। इस वैल्यु को सदा सामने रखते हुए सफल करते जाओ। चाहे स्वयं के प्रति, चाहे औरों के प्रति—सफल करते जाओ तो सफल करने से सफलतामूर्त अनुभव करेंगे।

18.2.93

अब अन्त में आओ। अब संगमयुग पर भी ऊंचे ते ऊंचे ब्राह्मण आत्मायें 'ब्राह्मण सो फरिश्ता' आत्मायें बनते हो। तो अनादि, आदि, मध्य और अन्त—हाइएस्ट हो गये ना। है इतना नशा? रूहानी नशा है ना! अभिमान नहीं लेकिन स्वमान है, स्वमान का नशा है। स्व अर्थात् आत्मा का, श्रेष्ठ आत्मा का रूहानी नशा है। तो सारे चक्र में हाइएस्ट भी हो और साथ-साथ होलीएस्ट भी हो। चाहे और आत्मायें

भी होली अर्थात् पवित्र बनती हैं लेकिन आपकी वर्तमान समय की पवित्रता और फिर देवता जीवन की पवित्रता सभी से श्रेष्ठ और न्यारी है। इस समय भी सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् होली बनते हो।

7.3.93

संगमयुग का सेकेण्ड और युगों के एक वर्ष से भी ज्यादा है। तो इतना महत्व सदा याद रहता है या कभी-कभी याद रहता है? सदा याद रहे तो हर सेकेण्ड परमात्म दुआयें प्राप्त करते रहेंगे। भक्त लोग तो दुआ लेने के लिये कितना पुरुषार्थ करते हैं। कितनी तकलीफ लेते हैं। और आपको बाप की दुआयें हर समय मिलती रहती हैं। तो दुआयें जमा करते हो या खर्च हो जाती हैं? जिसकी झोली परमात्म दुआओं से सदा भरपूर है उसके पास कभी माया आ नहीं सकती।

ऐसे सर्वशक्तियों की लाइट सदा आपके साथ है तो माया दूर से ही भाग जायेगी।

18-11-93

इस समय अर्थात् संगमयुग को कल्याणकारी युग कहा जाता है। यह कल्याणकारी युग है और कल्याणकारी आप आत्मायें हो। तो सदा ये अपना स्वमान याद रहता है कि मैं कल्याणकारी आत्मा हूँ ?

कैसा भी तमोगुणी वायुमण्डल हो लेकिन आप सर्वशक्तिमान् बाप के साथी हो। जहाँ भगवान् है वहाँ विजय है। तो वायुमण्डल को बदलने वाले हो। चैलेन्ज की है ना कि हम विश्व परिवर्तक हैं। तो कल्याणकारी युग है, कल्याणकारी आप आत्मायें हो और कल्याणकारी बाप है। तो कितनी शक्ति हो गई। समय की भी शक्ति, स्वयं की भी शक्ति और बाप की भी शक्ति। तो यह याद रखो–दुनिया के लिये अकल्याण का समय है, आपके लिये कल्याण का समय है। दुनिया वालों को सिर्फ़ विनाश दिखाई देता है और आपको विनाश के साथ स्थापना सामने है।

तो सदा दिल में यह श्रेष्ठ संकल्प इमर्ज करो कि स्थापना हुई कि हुई।

25-11-93

जमा करने का समय अब है। सतयुग में जमा नहीं होगा। कर्म वहाँ भी होंगे लेकिन अकर्म होंगे। क्योंकि वहाँ के कर्म का सम्बन्ध भी यहाँ के कर्मों के फल के हिसाब में है। तो यहाँ है करने का समय और वहाँ है खाने का समय। तो इतना अटेन्शन रहता है? कितने जन्मों के लिये जमा करना है? (84) जमा करने में खुशी होती है ना? मेहनत तो नहीं लगती?

23-12-93

देवता रूप में बाप का ज्ञान इमर्ज नहीं होगा। परमात्म मिलन का अनुभव इस ब्राह्मण जीवन में करते हो, देवताई जीवन में नहीं। ब्राह्मण ही देवता बनते हैं लेकिन इस समय देवताई जीवन से भी ऊंच हो, तो इतना नशा सदा रहे, कभी-कभी नहीं। क्योंकि बाप अविनाशी है और अविनाशी बाप जो ज्ञान देते हैं वह भी अविनाशी है, जो स्मृति दिलाते हैं वह भी अविनाशी है, कभी-कभी नहीं।

10-1-94

सारे कल्प में कितना भी पुरुषार्थ करो तो भी साथ का अनुभव कर सकेंगे? (नहीं) तो इसका स्लोगन क्या है? (अभी नहीं तो कभी नहीं) यह याद रहता है? समय का भी महत्त्व याद रहे और स्वयं का भी महत्त्व याद रहे। दोनों महत्त्व वाले हैं ना! इस संगमयुग के समय को, जीवन को-दोनों को हीरे तुल्य कहा जाता है। हीरे का मूल्य कितना होता है! तो **इतना महत्त्व जानते हुए एक सेकण्ड भी संगमयुग के साथ को छोड़ना नहीं है।** सेकण्ड गया, तो सेकण्ड नहीं लेकिन बहुत कुछ गया। ऐसी स्मृति रहती है? सारे कल्प की प्रालब्ध जमा करने का समय अब है। अगर सीज़न पर सीज़न को महत्त्व नहीं देते तो सदा के लिये वंचित रह जाते हैं। तो इस समय का महत्त्व है, जमा करने का समय है।

अगर राज्य अधिकारी भी बनते हो तो भी अभी के जमा के हिसाब से और पूज्य भी बनते हो तो इस समय के जमा के हिसाब से। एक छोटे से जन्म में अनेक जन्मों की प्रालब्ध जमा करना है।

18-2-94

इस समय का जमा किया हुआ ख़ज़ाना सारा कल्प साथ में चलता है। सारे कल्प में ऐसा कोई भी नहीं मिलेगा जो ये सोचे कि इस जन्म में तो रिचेस्ट हूँ लेकिन भविष्य में भी अनेक जन्म साहूकार से साहूकार रहेंगे। और आप सभी निश्चय और नशे से कहते हो कि हमारा ये ख़ज़ाना अनेक जन्म साथ रहेगा। गैरेन्टी है ना? तो ऐसा रिचेस्ट सारे कल्प में देखा? तो आज बापदादा अपने शाहन के भी शाह, राजाओं के भी राजा बच्चों को देख रहे हैं। एक-एक दिन में कितनी कमाई जमा करते हो? हिसाब निकालो, जमा का खाता कितना तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है? और बढ़ाने का साधन कितना सहज है! इसमें मेहनत है क्या? आपकी कमाई वा जमा खाता बढ़ने का सबसे सहज साधन है - बिन्दी लगाते जाओ और बढ़ाते जाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में भी बीती को बिन्दी लगाना। तो कमाई का आधार है बिन्दी लगाना।

14.12.94

बाबा कहते हैं विकर्म विनाश करो, मेरे से तो होता नहीं है। विकर्म विनाश नहीं होता तो सुकर्म तो बनाओ ना, व्यर्थ में टाइम नहीं गंवाओ। तो जितना-जितना श्रेष्ठ कर्मों का खाता बढ़ता जायेगा तो भी विकर्मों का खाता खत्म होता जायेगा। इसीलिये समय को नहीं गँवाओ। सबसे बड़े ते बड़ा मूल्य है समय का। क्योंकि इस समय का गायन है-अब नहीं तो कब नहीं। एक-एक सेकण्ड-अब नहीं तो कब नहीं। चलते-फिरते, रास्ते चलते दो बातें सुन ली, दो बातें कर ली-ये भी समय जाता है। और जितना समय गँवाते हैं ना तो व्यर्थ के संस्कार

पक्के होते जाते हैं।

16. 3. 95

संगम का एक सेकण्ड व्यर्थ जाना अर्थात् एक वर्ष गँवाना है, सेकण्ड नहीं। आप सोचो संगमयुग कितना छोटा है। अभी तो डायमण्ड जुबली मना रहे हो और इस थोड़े से समय में जो बनना है, जो जमा करना है वो अभी बन सकते हैं। तो बापदादा देख रहे थे कि बनने का समय कितना थोड़ा है और बनते हो सारा कल्प। तो कहाँ 5 हज़ार और कहाँ अभी 60 वर्ष, चलो आगे कितना भी समय होगा लेकिन हज़ारों के गिनती में तो नहीं होगा ना!

13.12.95

सारे दिन में **एक समय और दूसरा संकल्प-इन दो खजानों पर अटेन्शन रखना।** वैसे खजाने तो बहुत हैं लेकिन विशेष इन दो खजानों के ऊपर अटेन्शन देना है। हर दिन संकल्प श्रेष्ठ, शुभ कितना जमा किया? क्योंकि पूरे कल्प के लिये जमा करने की बैंक अभी खुलती है।

16-2-96

बापदादा ने पहले भी समझाया है कि ब्राह्मण जीवन के मुख्य खजाने हैं - संकल्प, समय और श्वांस।

जमा का खाता इस संगम पर ही जमा करना है। चाहे सतयुग, त्रेता में श्रेष्ठ पद प्राप्त करना है, चाहे द्वापर, कलियुग में पूज्य पद पाना है लेकिन दोनों का जमा इस संगम पर करना है। इस हिसाब से सोचो कि संगम समय की जीवन के, छोटे से जन्म के संकल्प, समय , श्वांस कितने अमूल्य हैं? इसमें अलबेले नहीं बनना। जैसा आया वैसे दिन बीत गया, दिन बीता नहीं लेकिन एक दिन में बहुत-बहुत गंवाया। जब भी कोई फालतू संकल्प, फालतू समय जाता है तो ऐसे नहीं समझो - चलो 5 मिनट गया। बचाओ। समय अनुसार देखो प्रकृति अपने कार्य में

कितनी तीव्र है। कुछ न कुछ खेल दिखाती रहती है। कहाँ-न-कहाँ खेल दिखाती रहती है। लेकिन प्रकृतिपति ब्राह्मण बच्चों का खेल एक ही है - उड़ती कला का। तो प्रकृति तो खेल दिखाती लेकिन ब्राह्मण अपने उड़ती कला का खेल दिखा रहे हो?

15-11-99

आप सभी बच्चों को भी संगम पर ही जीवनमुक्ति का अनुभव करना ही है। बापदादा से मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा इस समय ही प्राप्त होता है। इस समय ही मास्टर मुक्ति जीवनमुक्ति दाता बनना है। बने हैं और बनना है। मुक्ति जीवनमुक्ति के मास्टर दाता बनने की विधि है - सेकण्ड़ में देह-भान मुक्त बन जायें। इस अभ्यास की अभी आवश्यकता है।

18-01-2005

आप तो सृस्टि ड्रामा के, आजकल के वी.वी.आई.पी. जो हैं, वह तो एक जन्म के हैं। वह भी थोड़े समय के लिए हैं। और आप ब्राह्मण सो फरिश्ते कितने भी वी.वी. लगा दो, इतने हो। देखो, आप अपने आगे वी.वी.वी. लगाते जाओ, आपने अपने चित्र तो देखे हैं ना जो पूजे जा रहे हैं, वह देखे है ना।

21-10-05

अभी पीछे आने वाले भी ऐसा लक्ष्य रखो समय कम है इसलिए तीव्र पुरुषार्थ द्वारा नम्बर आगे ले सकते हो। अभी भी टूलेट का बोर्ड नहीं लगा है, लेट का लगा है।

15-12-05

बापदादा जानते हैं कि बच्चे स्वमान कभी-कभी होने के कारण समय के महत्व को भी स्मृति में कम रखते हैं। एक स्वयं का स्वमान, दूसरा है समय का महत्व। आप साधारण नहीं हो, पूर्वज हो, आप एक-एक के पीछे विश्व की

आत्माओं का आधार है। सोचो, अगर आप हलचल में आयेंगे तो विश्व की आत्माओं का क्या हाल होगा! ऐसे नहीं समझो कि जो महारथी कहलाये जाते हैं, उनके पीछे विश्व का आधार है।

16-11-06

अभी तीव्र गति का समय है, तीव्र पुरुषार्थ का समय है, साधारण पुरुषार्थ का समय नहीं है, सेकण्ड में परिवर्तन का अर्थ है - स्मृति स्वरूप द्वारा एक सेकण्ड में निर्विकल्प, व्यर्थ संकल्प निवृत्त हो जाए, क्यों? समय को, समाप्ति को समीप लाने वाले निमित्त हो। तो अभी के समय के महत्व प्रमाण जब जानते भी हो कि हर कदम में पदम समाया हुआ है, तो बढ़ाने का तो बुद्धि में रखते हो लेकिन गंवाने का भी तो बुद्धि में रखो। अगर कदम में पदम बनता भी है तो कदम में पदम गंवाते भी तो हो, या नहीं? तो अभी मिनट की बात भी गई, दूसरों के लिए कहते हो वन मिनट साइलेन्स में रहो लेकिन आप लोगों के लिए सेकण्ड की बात होनी चाहिए। जैसे हाँ और ना सोचने में कितना टाइम लगता है? सेकण्ड। तो परिवर्तन शक्ति इतनी फास्ट चाहिए। समझा।

15-12-06

बापदादा सभी बच्चों को समय की सूचना भी देते रहते हैं। यह वर्तमान संगम का समय सारे कल्प में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ समय है क्योंकि यह संगम ही श्रेष्ठ कर्मों के बीज बोने का समय है। प्रत्यक्ष फल प्राप्त करने का समय है। इस संगम समय में एक एक सेकण्ड श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ है।

02-02-07

कई बापदादा को क्या कहते हैं बाबा हम बहुत अच्छे चल रहे हैं। तो बापदादा कहते हैं चल रहे हो या उड़ रहे हो? अभी चलने का समय नहीं है, उड़ने का समय है। उमंग-उत्साह के, हिम्मत के पंख हर एक को लगे हुए हैं। तो पंखों से

उड़ना होता है। तो रोज़ चेक करो, उड़ती कला में उड़ रहे हैं? अच्छा है, रिजल्ट में बापदादा ने देखा है कि सेन्टर्स विदेश में भी बढ़ रहे हैं। और बढ़ते जाने ही हैं। जैसे डबल विदेशी हैं वैसे डबल सेवा मंसा भी, वाचा भी साथ-साथ करते चलो। मन्सा शक्ति द्वारा आत्माओं की आत्मिक वृत्ति बनाओ। वायुमण्डल बनाओ। अभी दुःख बढ़ता हुआ देख रहम नहीं आता है? आपके जड़ चित्र के आगे चिल्लाते रहते हैं, मर्सी दो, मर्सी दो, अब दयालु कृपालु रहमदिल बनो। अपने ऊपर भी रहम और आत्माओं के ऊपर भी रहम। अच्छा है

02-02-07

संस्कार का सामना तो करना ही है, संस्कार का सामना नहीं, यह पेपर है। एक जन्म की पढ़ाई और सारे कल्प की प्राप्ति, आधाकल्प राज्य भाग्य, आधाकल्प पूज्य, सारे कल्प की एक जन्म में प्राप्ति, वह भी छोटा जन्म, फुल जन्म नहीं है, छोटा जन्म।

15/02/2007

जिस समय संकल्प करते हो। लेकिन है क्या, 70 वर्ष तो हल्का छोड़ा लेकिन बापदादा देख रहे हैं कि समय का कोई भरोसा नहीं और इस ज्ञान के आधार पर हर पुरुषार्थ की बात में बहुतकाल का हिसाब है। अच्छा अभी अभी कर लेंगे, बहुतकाल का हिसाब है। क्योंकि प्राप्ति हर एक क्या चाहता है?

बापदादा ने पहले भी कहा है कि वर्तमान समय के प्रमाण एक समय पर मन्सा-वाचा और कर्मणा अर्थात चलन और चेहरे द्वारा तीनों ही प्रकार की सेवा, मन्सा द्वारा अनुभव कराना, वाणी द्वारा ज्ञान के खजाने का परिचय कराना और चलन द्वारा सम्पूर्ण योगी जीवन का प्रैक्टिकल रूप का अनुभव कराना, तीनों ही सेवा एक समय करनी है। अलग-अलग नहीं, समय कम है और सेवा अभी भी बहुत करनी है।

17/03/2007

अभी समय प्रमाण तीव्र पुरुषार्थ है वृत्ति से वायुमण्डल बनाने का। तो वृत्ति में अगर ज़रा भी किचड़ा होगा, तो वृत्ति से वायुमण्डल कैसे बनायेंगे? प्रकृति तक आपका वायब्रेशन जायेगा, वाणी तो नहीं जायेगी। वायब्रेशन जायेगा। और वायब्रेशन बनता है वृत्ति से, और वायब्रेशन से वायुमण्डल बनता है। मधुबन में भी सब एक जैसे तो नहीं हैं। लेकिन ब्रह्मा बाप और अनन्य बच्चों के वृत्ति द्वारा, तीव्र पुरुषार्थ द्वारा वायुमण्डल बना है।

17/03/2007

बापदादा ने कितने समय से दो शब्द बार-बार रिवाइज कराये हैं, वह दो शब्द कौन से हैं? अचानक और एवररेडी। याद है ना! याद है? आपकी बहुत अच्छी दादी चन्द्रमणि, अचानक गई थी, याद है? तभी से, कितना टाइम हो गया, (10 साल) और उसके बाद कितने अचानक के हुए हैं? आपकी दादी कैसे गई? अचानक गई ना। अच्छा दादी से प्यार है, तो यह अचानक का पाठ दादी को याद करके याद करो। जैसे दादी अपने लक्ष्य को पूरा करके गई, ऐसे नहीं गई। उसको सर्टीफिकेट मिला, कर्मातीत, कर्मेन्द्रियों ने भी अपनी आकर्षण में नहीं बांधा, साक्षी होके कर्मेन्द्रियां शीतल होती रही, होती रही। आकर्षण ने नहीं खींचा, न कर्मेन्द्रियों ने खींचा, न किसी आत्मा के मोह ने खींचा, निर्मोही, नष्टोमोहा, नहीं तो कई लोग जाते जाते याद में बोल पड़ते हैं, फलाना, फलाना, फलाना... लेकिन दादी नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप में गई, कर्मेन्द्रियां जीत बनके गई। कोई कर्मेन्द्रिय ने अपने तरफ दु:ख की लहर में नहीं खींचा। तो दादी कहते हो, याद आती है ना, आनी ही चाहिए क्योंकि नम्बरवन थी ना। तो वन नम्बर ने विन तो किया ना। लेकिन जब भी दादी की याद आवे तो सिर्फ चित्र नहीं देखना लेकिन यह याद करो कि मैं भी एवररेडी हूँ। मुझे भी अचानक का पाठ याद है? अभी-अभी मैं भी अचानक चली जाऊं, तो नष्टोमोहा, प्रकृतिजीत हूँ? यही दादी की सौगात सब अपने पास रखो।

15-10-07

आजकल के समय प्रमाण सबसे अमूल्य श्रेष्ठ खजाना है - पुरुषोत्तम संगम का समय क्योंकि इस संगम पर ही सारे कल्प की प्रालब्ध बना सकते हो। इस छोटे से युग का एक सेकण्ड प्राप्तियों और प्रालब्ध के प्रमाण एक सेकण्ड की वैल्यु एक वर्ष के समान है। इतना यह अमूल्य समय है। इस समय के लिए ही गायन है - अब नहीं तो कब नहीं क्योंकि इस समय ही परमात्म पार्ट नूंधा हुआ है। इसलिए इस समय को हीरे तुल्य कहा जाता है। सतयुग को गोल्डन एज कहा जाता है लेकिन इस समय, समय भी हीरे तुल्य है और आप सब बच्चे भी हीरे तुल्य जीवन के अनुभवी आत्मायें हो। इस समय ही बहुतकाल की बिछुड़ी हुई आत्मायें परमात्म मिलन, परमात्म प्यार, परमात्म नॉलेज, परमात्म खजानों के प्राप्ति के अधिकारी बनते हैं। सारे कल्प में देव आत्मायें, महान आत्मायें हैं लेकिन इस समय परमात्म ईश्वरीय परिवार है। इसलिए जितना इस वर्तमान समय का महत्व है, इस महत्व को जान, जितना अपने को श्रेष्ठ बनाने चाहे उतना बना सकते हैं। आप सभी भी इस महान युग के परमात्म भाग्य को प्राप्त करने वाले पदमापदम भागयवान हो ना! ऐसे अपने श्रेष्ठ भाग्य के रूहानी नशे और भाग्य को जानते, अनुभव कर रहे हो ना! खुशी होती है ना! दिल में क्या गीत गाते हो? वाह मेरा भाग्य वाह! क्योंकि इस समय के श्रेष्ठ भाग्य के आगे और कोई भी युग में ऐसा श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त नहीं हो सकता।

15/12/2007

विशेष समय का खजाना कभी भी व्यर्थ न जाये। एक सेकण्ड भी व्यर्थ को कार्य में लगाओ। समय को सफल करो, हर श्वांस को सफल करो, हर संकल्प को सफल करो, हर शक्ति को सफल करो, हर गुण को सफल करो। सफलतामूर्त बनने का यह विशेष वर्ष मनाओ।

31-12-07

समय प्रकृति द्वारा अपनी चैलेन्ज कर रहा है।

समय की समीपता को कामन बात नहीं समझो। अचानक और एवररेडी शब्द को अपने कर्मयोगी जीवन में हर समय स्मृति में रखो।

02-02-08

वैसे लोग भी कहते हैं जो करना है वह अब कर लो। जो सोचना है अब सोच लो। अभी जो भी सोचेंगे वह सोच, सोच रहेगा और कुछ समय के बाद जब समय की सीमा नजदीक आयेगी तो सोच पश्चाताप के रूप में बदल जायेगा। यह करते थे, यह करना था... तो सोच नहीं रहेगा, पश्चाताप में बदल जायेगा। इसीलिए बापदादा पहले से ही इशारा दे रहा है। साइलेन्स की शक्ति, एक सेकण्ड में कुछ भी हो, साइलेन्स में खो जाओ। यह नहीं पुरुषार्थ कर रहे हैं! जमा का पुरुषार्थ अभी कर सकते हो।

05-03-08

बापदादा को संकल्प है कि सब बच्चों के जमा खाते को देखें। देखा भी है, आगे भी देखेंगे क्योंकि बापदादा ने यह पहले ही बच्चों को सूचना दे दी है कि जमा के खाते जमा करने का समय अब संगमयुग है। इस संगमयुग पर अब जितना जमा करने चाहो, सारे कल्प का खाता अब जमा कर सकते हो। फिर जमा के खाते की बैंक ही बन्द हो जायेगी। फिर क्या करेंगे? इसलिए बापदादा को बच्चों से प्यार है ना। तो बापदादा जानते हैं कि बच्चे अलबेलेपन में कभी भूल जाते हैं, हो जायेगा, देख लेंगे, कर तो रहे हैं, चल तो रहे हैं ना। बड़े मजे से कहते, आप देख नहीं रहे हो, हम कर रहे हैं, हाँ चल तो रहे हैं और क्या करें? लेकिन चलना और उड़ना कितना फर्क है? चल रहे हो मुबारक है। लेकिन अभी चलने का समय समाप्त हो रहा है। अभी उड़ने का समय है। तभी मंजिल पर पहुंच सकेंगे। साधारण प्रजा में आना, **भगवान का बच्चा और साधारण प्रजा! शोभता है?**

18-03-08

सारे ड्रामा की नॉलेज है, इसीलिए नॉलेजफुल बच्चे अभी समय किसमें लगाना हैं, दो खजाने बहुत जमा करने हैं। कौन से दो खजाने? एक संकल्प और दूसरा समय । दोनों खजाने महान हैं और आप सब जातने हो क्योंकि नॉलेजफुल बाप के नॉलेजफुल बच्चे हो।

22.02.2009

समय अनुसार अगर अब से बहुतकाल का चार्ट तीव्र पुरुषार्थ का जमा का नहीं किया तो तीन शब्द बापदादा समय प्रति समय याद दिलाता है एक अचानक, दूसरा एवररेडी और तीसरा बहुत समय का खाता जमा क्योंकि बापदादा चाहते हैं कि अपने राज्य में, अभी तो खुशी है ना अपना राज्य आया कि आया।

संगम के समय का एक एक संकल्प वा एक एक घड़ी बहुत अमूल्य है क्योंकि संगम समय पर ही बापदादा और बच्चों का मधुर मिलन होता है और कोई भी युग में परमात्म बाप और परमात्म बच्चों का मिलन नहीं होता। साथ-साथ संगम समय ही है जिसमें बापदादा द्वारा सर्व खजाने प्राप्त होते हैं। खजाना जमा होने का समय संगमयुग ही है और कोई भी युग में जमा का खाता, जमा करने की बैंक ही नहीं है। सिर्फ एक संगमयुग है जिसमें जितने खजाने जमा करने चाहो उतना कर सकते हो और इस संगम समय का जो महत्व है वह यही है कि एक जन्म में अनेक जन्मों के लिए खजाना जमा कर सकते हैं। इसलिए यह छोटे से युग का बहुत महत्व है और खजाने भी बापदादा द्वारा प्राप्त सभी बच्चों को होता है। बाप सभी को देते हैं लेकिन खजाने को जमा करने में हर एक बच्चा अपने पुरुषार्थ अनुसार करता है। बाप देने वाला भी एक है और एक जैसा सबको देता है, एक ही समय पर देता है लेकिन धारण करने में क्या देखा कि बाप ने एक जैसा दिया लेकिन धारण करने में हर एक का अपना अपना पुरुषार्थ रहा क्योंकि खजाने को धारण करने के लिए एक तो अपने पुरुषार्थ से प्रालब्ध बना सकते हैं, दूसरा सदा स्वयं संतुष्ट रहना और सर्व को संतुष्ट करना, संतुष्टता की विशेषता से खजाना जमा कर सकते हो और तीसरा सेवा से क्योंकि सेवा से सर्व आत्माओं को खुशी प्राप्त

होती है तो खुशी का खजाना प्राप्त कर सकते हो। अपना पुरुषार्थ और सर्व को सन्तुष्ट करने का पुरुषार्थ और तीसरा सेवा का पुरुषार्थ। इन तीनों प्रकार से खजाने जमा कर सकते हो।

24.03.2009

सर्व खजानों के साथ जो विशेष खजाना है वह है संगम के समय का खजाना। जिस आत्मा को समय के खजाने का महत्व है वह सदा अनेक प्राप्तियों के मालिक बन जाते हैं क्योंकि संगमयुग का समय है बहुत छोटा लेकिन समय से प्राप्तियाँ ज्यादा है। सबसे ज्यादा संगमयुग की श्रेष्ठ से श्रेष्ठ प्राप्ति है स्वयं भगवान बाप रूप में, शिक्षक रूप में, सतगुरू के रूप में प्राप्त होता है। संगमयुग में छोटे से जन्म में 21 जन्म की प्राप्ति, जिसमें तन, मन, धन, जन सर्व प्राप्ति है और गैरन्टी है 21 जन्म फुल, आधा नहीं, पौना नहीं लेकिन फुल 21 जन्म की गैरन्टी है। तो सबसे ज्यादा जो महत्व है वह है संगमयुग का एक-एक सेकण्ड अनेक वर्षों के समान है। तो बोलो, सर्व खजानों से सम्पन्न तो हैं? सम्पन्न है ना? इसलिए बापदादा सदा समय की स्मृति दिला रहे हैं। कई बच्चे समझते हैं कि एक दो मिनट अगर और कुछ सोच लिया, तो 2 मिनट ही तो हैं। लेकिन जितना समय का महत्व है उस अनुसार तो 2 मिनट नहीं, 2 मास भी नहीं, दो वर्ष के समान हैं। इतना महत्व है संगम के समय का। सर्व शक्तियों की, सर्व गुणों की, परमात्म प्यार की, ब्राह्मण परिवार के प्यार की और कल्प पहले वाले ईश्वरीय हक की। सर्व प्राप्ति इस छोटे से युग में हैं और कोई भी युग में यह सर्व प्राप्ति नहीं। राज्य भाग्य होगा, आप सबका राज्य होगा, सुख शान्ति सब होगा लेकिन परमात्म मिलन का, अतीन्द्रिय सुख का, सर्व ब्राह्मण परिवार का, आदि मध्य अन्त की नॉलेज का वह अब संगम पर ही मिला है, हर कल्प मिलता रहेगा।

25-10-09

बापदादा ने कह दिया है कि अचानक किसी भी समय आपका फाइनल पेपर होगा। बापदादा भी बतायेगा नहीं इसलिए इस समय का अटेन्शन सम्पूर्ण और सम्पन्न बनाना है। बापदादा ने जो सर्व खजाने दिये हैं उस एक एक खजाने को समय पर कार्य में लगाना है। खजानों के मालिक हो, मालिक की विशेषता यह है कि जिस समय जिस खजाने की आवश्यकता है उस समय वह खजाना कार्य में लगता है? आप आर्डर करो समाने की शक्ति को तो समाने की शक्ति कार्य में लगती है? क्योंकि मालिक उसको कहा जाता है जो समय पर अपने खजाने कार्य में लगा सके। तो अभी सभी को इतना स्व पर अटेन्शन देना है।

15-11-09

इस समय ही परमात्म प्यार का अनुभव कर सकते, सारे कल्प में आत्माओं का प्यार, महात्माओं का, धर्मात्माओं का प्यार अनुभव किया लेकिन परमात्म प्यार सिर्फ अब संगमयुग पर होता है, जो आप सभी बच्चे अनुभव कर रहे हैं। कोई आपसे पूछे परमात्मा कहाँ है? तो क्या जवाब देंगे? मेरे साथ है। मेरे साथ ही रहते हैं। मेरे दिल में ही रहते हैं। ऐसा अनुभव कर रहे हो ना! आप ही जानते हो और आपको ही इस प्यार का अनुभव है कि हमारे दिल में बाप रहते और बाप के दिल में हम रहते। जानते हो कि यह परमात्म प्यार का नशा हमें ही अनुभव करने का भाग्य प्राप्त हुआ है।

15-3-10

बापदादा हर बच्चे का भाग्य देख हर बच्चे को मुबारक दे रहे हैं – वाह बच्चे वाह! और यह भाग्य इस संगम पर ही मिलता है और चलता है। संगमयुग का सुख सब युगों से श्रेष्ठ है। सतयुग का भाग्य भी संगम के पुरुषार्थ की प्रालब्ध है इसलिए संगमयुग की प्राप्ति सतयुग की प्रालब्ध से भी ज्यादा है। अपने भाग्य में खो जाओ। कुछ भी होता रहे, अपना भाग्य स्मृति में लाओ तो क्या निकलता है? वाह मेरा भाग्य! क्योंकि स्वयं भाग्य दाता आपका बाप है। तो भाग्य दाता द्वारा हर एक

को अपना भाग्य मिला है। जानते हो कि हम इतने भाग्यवान हैं कि कभी-कभी जानते हो, सदा नशा रहता है? दुनिया वाले तो देखकर पूछते हैं आपको क्या मिला है? और आप लोग उत्तर क्या देते हो? जो पाना था वह पा लिया। पा लिया है, हाथ उठओ। पा लिया है, अच्छा। पा लिया है? फलक से कहते हो, कोई अप्राप्त वस्तु ही नहीं, है ना फखुर? और मिला कैसे? सिर्फ बाप को जाना, माना, अपना बनाया तो भाग्य मिल गया। इस भाग्य को जितना स्मृति में लाते रहेंगे उतना हर्षित होते रहेंगे।

02-02-11

बीती को याद करने से व्यर्थ संकल्प बहुत चलते हैं। समय भी व्यर्थ जाता है। जो बहुत समय के संस्कार हैं वह न चाहते भी जब चलते हैं तो इस संगमयुग का एक-एक मिनट जो एक जन्म में 21 जन्म की प्रालब्ध बनाता है वह एक-एक संकल्प एक-एक मिनट कितना वैल्युएबुल है। एक सेकण्ड नहीं गया लेकिन अनेक जन्म की प्रालब्ध में फर्क पड़ जाता है। बापदादा ने पहले भी कहा है कि संगम समय का समय और संकल्प कभी भी व्यर्थ नहीं गंवाना है। अगर सदा प्रभु रंग में रंगे हुए हो अर्थात् बाप को सदा का साथी बनाके रहते हो तो संगमयुग के एक-एक संकल्प और समय माना एक-एक मिनट को सफल कर सकते हो। तो चेक करो अपने को कि एक- एक मिनट एक-एक संकल्प सफल होता है? या व्यर्थ भी जाता है? क्योंकि एक मिनट नहीं 21 जन्म का कनेक्शन हर मिनट और हर संकल्प का है। इतनी वैल्यु है। तो अपनी दिल में सोचो कि इतनी वैल्यु सदा रहती है! इस संगम के समय के लिए कहा हुआ है - अब नहीं तो कब नहीं। इतनी वैल्यु सदा स्मृति में रहे।

16-03-11

4

समय का अटेन्शन एवं अभ्यास

4.1 अटेन्शन एवं अभ्यास

अभी थोड़े समय में आप एक-एक श्रेष्ठ आत्मा को विश्व चैतन्य भण्डार अनुभव करेगा। भिखारी बन आयेंगे। यह आवाज़ निकलेगा कि आप ही भरपूर भण्डार हो। अभी तक ढूँढ रहे हैं कि कोई हैं, लेकिन वह कहाँ हैं, कौन हैं यह स्पष्ट समझ नहीं सकते। लेकिन अभी समय का 'ऐरो' लगेगा। जैसे रास्ते दिखाने के चिह्न होते हैं ना। ऐरो दिखाता है कि यहाँ जाओ। ऐसे सभी को यह अनुभूति होगी कि यहाँ जाओ। ऐसे भरपूर भण्डार बने हो? समय भी आपका सहयोगी बनेगा। शिक्षक नहीं, सहयोगी बनेगा। बापदादा समय के पहले सब बच्चों को सम्पन्न स्वरूप में भरपूर भण्डार के रूप में, इच्छा मात्रम् अविद्या, तृप्त स्वरूप में देखना चाहता है।

5.12.84

जो भी सामने हैं वैसी ही हालतों, में इस ही शरीर में हमको सम्पूर्ण बनना है - यह लक्ष्य रखना है। अभी कुछ आधार होने के कारण अधीन बन जाते हैं। बातों के अधीन हैं। हरेक अपनी-अपनी कहानी अमृतवेले सुनाते हैं। कोई कहते हैं - शरीर का रोग ना हो तो हम बहुत पुरुषार्थ करें; कोई कहते - बन्धन हटा दो। लेकिन यह तो एक बन्धन हटेगा, दूसरा आयेगा। तन का बन्धन हटेगा, मन का आयेगा, धन का आयेगा, सम्बन्ध का आयेगा -फिर क्या करेंगे? यह खुद नहीं हटेंगे, अपनी ही शक्ति से हटाने हैं। कई समझते हैं - बापदादा हटायेंगे या समय प्रमाण हटेंगे। परन्तु यह नहीं समझना है। **अभी तो समय नजदीक पहुंच गया है, जिसमें अगर ढीला पुरुषार्थ रहा तो यह पुरुषार्थ का समय हाथ से खो देंगे। अभी तो एक-एक सैकेण्ड, एक-एक श्वाँस; मालूम है कितने श्वाँस चलते हैं? अनगिनत हैं ना। तो एक-एक श्वाँस, एक-एक सैकेण्ड सफल होना चाहिए - अभी ऐसा समय है।** अगर कुछ भी अलबेलापन रहा तो जैसे कई बच्चों ने साकार मधुर मिलन का सौभाग्य गंवा दिया, वैसे ही यह पुरुषार्थ के

सौभाग्य का समय भी हाथ से चला जायेगा। इसलिए पहले से ही सुना रहे हैं।

17.4.69

रिकार्ड में जरा भी नीचे-ऊपर हो जाता है तो वह रिकार्ड हमेशा के लिये रद्दी हो जाता है। तुम्हारा भी 21 जन्मों के लिये सतयुगी राज़धानी का जो रिकार्ड भरता है-तो वह रद्द न हो जाये। रद्द हुआ तो फिर दूर हो जाते हैं। तो यह सोचना चाहिए - हमारे हर कर्म के ऊपर सभी की आंख हैं। एक्टर्स जब देखते हैं कि हमको सभी देख रहे हैं -तो खास अटेन्शन रहता है। कोई देखने वाला नहीं होता है तो अलबेलापन रहता है। तो हमेशा समझना चाहिए-हम भले अकेलेपन में कुछ करते, तो भी सृष्टि के सामने हैं, सारी सृष्टि की आत्माएं चारों ओर से हमें देख रही हैं।

18.5.69

शूरवीर की निशानी क्या होती है? उनको कोई भी बात में पार करना मुश्किल नहीं लगता है और समय भी नहीं लगता है। उनका समय सिवाय सर्विस के अपने विघ्नों आदि को हटाने में नही जाता है। इसको कहा जाता है शूरवीर। अपना समय अपने विघ्नों में नहीं, लेकिन सर्विस में लगाना चाहिए। अब तो समय बहुत आगे बढ़ गया है।

25.1.70

समय बाकी कितना है और पुरुषार्थ क्या किया है? दोनों की परख है? समय कम है और पुरुषार्थ बहुत करना है। जब कोई स्टूडेन्ट लास्ट टाइम पर आकर दाखिल होते हैं तो वह थोड़े समय में कितनी मेहनत करते हैं। **जितना समय तेज जा रहा है इतना तेज पुरुषार्थ है? कब शब्द निकाल ही देना चाहिए। जो तीव्र पुरुषार्थी होते हैं वह कब शब्द नहीं बोलते, अब बोलेंगे। अब से करेंगे। यह संगम समय का एक सेकेण्ड भी कितना**

बड़ा मूल्यवान है। एक सेकेण्ड भी व्यर्थ गया तो कितनी कमाई व्यर्थ हो जायेगी। पूरे कल्प की तकदीर बनाने का यह थोड़ा समय है। एक सेकेण्ड पदमों की कमाई करने वाला भी है और एक सेकेण्ड पदमों की कमाई गंवाता है। ऐसे समय को परख करके फिर पांव को तेज करो।

स्थिति परिस्थिति को बदल सकती है क्योंकि सर्वशक्तिमान के संतान हो तो क्या ईश्वरीय शक्ति परिस्थिति को नहीं बदल सकती! रचयिता के बच्चे रचना को नहीं बदल सकते हैं! रचना पावरफुल होती है वा रचयिता? रचयिता के बच्चे रचना के अधीन कैसे होंगे। अधिकार रखना है न कि अधीन होना है। जितना अधिकार रखेंगे उतना परिस्थितियाँ भी बदल जायेंगी। अगर उनके पीछे पड़ते रहेंगे तो और ही सामना करेंगी। परिस्थितियों के पीछे पड़ना ऐसे है जैसे कोई अपनी परछाई को पकड़ने से वह हाथ आती है? और ही आगे बढ़ती है तो उसको छोड़ दो। वायुमण्डल को बदलना, यह तो बहुत सहज है। इतनी छोटी सी अगरबत्ती, खुशबू की चीज भी वायुमण्डल को बदल सकती है। तो ज्ञान की शक्ति से वायुमंडल को नहीं बदल सकते? यह ध्यान रखना है, वायुमण्डल को सदैव शुद्ध रखना है। लोग क्या भी बोलें। जिस बात में अपनी लगन नहीं होती है तो वह बात सुनते हुए जैसे नहीं सुनते। तन भल वहाँ हो लेकिन मन नहीं। ऐसे तो कई बार होता है। मन कोई और तरफ होता है और वहाँ बैठे भी जैसे नहीं बैठते हैं। तन से साथ देना पड़ता है लेकिन मन से नहीं। उसके लिए सिर्फ अटेन्शन देना है। जब तक हिम्मत न रख पांव नहीं रखा है तो ऊंची मंजिल लगेगी। अगर पांव रखेंगे तो फिर लिफ्ट की तरह झट पहुंच जायेंगे। हिम्मत रखो तो चढ़ाई भी लिफ्ट बन जायेगी। तो हिम्मत का पांव रखो, कर सकते हो, सिर्फ लोक लाज का त्याग और हिम्मत की धारणा चाहिए। एक दो का सहयोग भी बड़ी लिफ्ट है। परिस्थितियाँ तो आयेंगी लेकिन अपनी स्थिति पावरफुल चाहिए। फिर जैसा समय वैसा तरीका भी टच होगा। **अगर समय प्रमाण युक्ति नहीं आती है तो समझना चाहिए योगबल नहीं है। योगयुक्त है तो मदद भी जरूर मिलती है। जो यथार्थ पुरुषार्थी है उनके पुरुषार्थ में इतनी पावर रहती है। ज्यादा सोचना भी नहीं चाहिए।**

अनेक तरफ लगाव है, फिर माया की अग्नि भी लग जाती है। परन्तु लगाव नहीं होना चाहिए। फर्ज तो निभाना है लेकिन उसमें लगाव न हो। ऐसा पावरफुल रहना है जो औरों के आगे इग्जाम्पुल हो।

26.1.70

अभी अभी आधार लिया, अभी अभी न्यारे हो गये। यह अभ्यास बढ़ाना अर्थात् सम्पूर्णता और समय को समीप लाना है। तो अब क्या प्रयत्न करना है? समय और सम्पूर्णता को समीप लाओ। और एक बात विशेष ध्यान में यह रखनी है कि अपने रिकार्ड को ठीक रखने के लिए सर्व को रिगार्ड दो। जितना जो सर्व को रिगार्ड देता है उतना ही अपना रिकार्ड ठीक रख सकता है। दूसरे का रिगार्ड रखना अपना रिकार्ड बनाना है। अगर रिगार्ड कम देते हैं तो अपने रिकार्ड में कमी करते हैं। इसलिए इस मुख्य बात की आवश्यकता है।

6.8.70

फोटो निकालते समय अगर कोई भी हलचल होती है तो फोटो ठीक निकलेगा। ऐसे ही सदैव हर सेकेण्ड ऐसे ही समझो कि हमारा फोटो निकल रहा है। फोटो निकालते समय सभी प्रकार का ध्यान दिया जाता है वैसे अपने ऊपर सदैव ध्यान रखना है। **एक-एक सेकेण्ड़ इस सर्वोत्तम वा पुरुषोत्तम संगमयुग का ड्रामा रूपी कैमरे में आप सभी का फोटो निकलता जाता है। जो यही चित्र फिर चरित्र के रूप में गायन होता आयेगा।** और अभी के भिन्न-भिन्न स्टेज के चित्र, भिन्न-भिन्न रूप में पूजे जायेंगे। हर समय यह स्मृति रखो कि अपना चित्र ड्रामा रूपी कैमरे के सामने निकाल रहा हूँ। अब के एक-एक चित्र एक-एक चरित्र गायन और पूजन योग्य बनने वाले हैं। जैसे यहाँ भी जब आप लोग कोई ड्रामा स्टेज पर करते हो और साक्षात्कार करते हो तो कितना ध्यान रखते हो। ऐसे ही समझो बेहद की स्टेज के बीच पार्ट बजा रही हूँ वा बजा रहा हूँ। सारे विश्व की

आत्माओं की नज़र मेरी तरफ है। ऐसे समझने से सम्पूर्णता को जल्दी धारण कर सकेंगे। समझा।

5.11.70

जितना-जितना अब ताज व तख्त धारण करने के अनुभवी वा अभ्यासी बनेंगे उतना ही वहाँ भी इतना समय ताज व तख्त धारण करेंगे। अगर अभी अल्प समय ताज व तख्तनशीन बनते हो तो वहाँ भी बहुत थोड़ा समय ताज व तख्त प्राप्त कर सकेंगे। अभी का अभ्यास हरेक को अपना भविष्य साक्षात्कार करा रहा है। अभी भी सिर्फ दूसरों को ताज व तख्त-नशीन देखते हुए खुश होते रहेंगे तो वहाँ भी देखते रहना पड़ेगा। इसलिए सदाकाल के लिए ताज व तख्तनशीन बनो। ऐसा ताज व तख्त फिर कब मिलेगा? अभी ही मिलेगा। कल्प के बाद भी अभी ही मिलेगा। अभी नहीं तो कभी नहीं।

1.2.71

चेक करना है। अभी समय है। जैसे पेपर हाल में जाने से पहले दो घंटे आगे भी तैयारी कर के जाते हैं। आप को भी पेपर हाल में जाने के पहले अपने को तैयार करने के लिए अभी समय है।

29.4.71

अन्तर्मुखी होकर के कार्य करने से एक तो विघ्नों से बचाव; दूसरा समय का बचाव; तीसरा-संकल्पों का बचाव वा बचत हो जायेगी। प्रैक्टिस तो है ना। कभी-कभी अनुभव भी करते हो। अन्तर्मुखी हो बोलते भी हो लेकिन बाहरमुखता में आते भी अन्तर्मुख, हर्षितमुख, आकर्षण मूर्त भी रहेंगे-कर्म करते हुए यह प्रैक्टिस करनी है। जैसे स्थूल कारोबार का प्रोग्राम बनाते हो, वैसे अपनी बुद्धि की क्या-क्या कारोबार वा क्या कार्य बुद्धि द्वारा करना है। **जो प्रोग्राम बनाने के अभ्यासी होते हैं उनका हर कार्य समय पर सफल होता**

है। इस रीति अपनी भी सूक्ष्म कारोबार है। बुद्धि एक सेकेण्ड में कहाँ से कहाँ जाकर आ भी सकती है। कार्य भी बहुत विस्तार के हैं तो जब प्रोग्राम सेट करेंगे तब ही समय की बचत और सफलता अधिक हो सकेगी। यह पोग्राम बीच-बीच में बनाते रहो लेकिन सदाकाल के लिए। जैसे स्थूल कारोबार सेट करते-करते अभ्यासी हो गये हैं, वैसे ही यह भी अभ्यास करते-करते अभ्यासी हो जायेंगे। इसके लिए खास समय निकालने की भी आवश्यकता नहीं। कोई भी स्थूल कार्य जो भले अधिक बुद्धि वाला हो, उसको करते हुए भी यह अपना प्रोग्राम सेट कर सकते हो। प्रोग्राम सेट करने में कितना समय लगता है? एक-दो मिनट भी ज्यादा है। यह भी अभ्यास डालना है। अमृतवेले अपनी बुद्धि के कारोबार का प्रोग्राम भी पहले से ही सेट कर देना है। जैसे प्रोग्राम बनाया जाता है फिर उसको चेक किया जाता है कि यह यह कार्य किया और कहां तक हुआ और कहां तक न हुआ। इसी रीति से यह भी प्रोग्राम बनाकर फिर बीच-बीच में चेक करो। जितने बड़े आदमी होते हैं वह बिना प्रोग्राम के नहीं जाते हैं। जैसे आया वैसे कर लिया, ऐसे नहीं चलते। उन्हों का एक-एक सेकेण्ड प्रोग्राम से बुक होता है। आप भी श्रेष्ठ आत्मायें हो, तो प्रोग्राम सेट होना चाहिए।

24-6-71

आप लोग हद की बातों में समय व्यर्थ कर और फिर बेहद में टिकने चाहते हो, लेकिन अब वह समय गया। अभी तो बेहद की सर्विस में सदा तत्पर रहो तो हद की बातें आपेही छूट जायेंगी। जैसे अन्य आत्माओं को कहते हो कि अब भक्ति में समय बरबाद करना गोया गुड्डियों के खेल में समय बरबाद करना है, क्योंकि अब भक्तिकाल समाप्त हो रहा है, ऐसे कहते हो ना? तो फिर आप इन हद की बातों रूपी गुड्डीयों के खेल में समय क्यों बरबाद करते हो?

24.10.71

चलते-फिरते अपनी तीनों रुपों की स्मृति रहे कि हम मास्टर त्रिमूर्ति हैं। तीनों कर्तव्य इक्कठे साथ-साथ चलनी चाहिए। ऐसे नहीं-स्थापना का कर्तव्य करने का समय अलग है, विनाश का कर्तव्य का समय अलग है, फिर और आना है। नहीं। नई रचना रचते जाते हैं और पुरानी का विनाश। आसुरी संस्कार वा जो भी कमजोरियाँ हैं उनका विनाश भी साथ-साथ करते जाना है। नये संस्कार ला रहे हैं, पुराने संस्कार खत्म कर रहे हैं। तो सम्पूर्ण और शक्ति रुप विनाशकारी रुप न होने कारण सफलता न हो पाती है।

अभी-अभी ब्राह्मण रुप अभी-अभी शक्ति रुप। जिस समय जिस रुप की आवश्यकता है उस समय वैसा ही रुप धारण कर कर्तव्य में लग जाये-ऐसी प्रैक्टीस चाहिए। वह प्रैक्टिस तब हो सकेंगी जब एक सेकेण्ड में देही - अभिमानी बनने का अभ्यास होगा। **अपनी बुद्धि को जहाँ चाहें वहाँ लगा सके-यह प्रैक्टिस बहुत जरुरी है। ऐसे अभ्यासी सभी कार्य में सफल होते हैं।**

28.2.72

यह भी बेहद का कैमरा है। जिसमें एक -एक सेकेण्ड की फोटो निकलते रहते हैं। फोटो निकल जाने बाद अगर अपने आपको ठीक करे तो वह व्यर्थ है ना। इसी प्रमाण पहले अपने आप को शक्ति स्वरुप की स्टेज पर स्थित करने के बाद कोई कार्य शुरु करना है। स्टेज से उतर कर अगर कोई एक्ट करे, भले कितनी भी बढ़ियां एक्ट करे लेकिन देखने वाले कैसे देखेंगे। यह भी ऐसे होता है। पहले स्टेज पर स्थित हो, फिर हर एक्ट करे तब एक्युरेट और 'वाह वाह करने योग्य' एक्ट हो सकेंगी।

ऐसे नहीं संकल्प बहुत ऊंच हो, प्लैन्स बनाते रहे, मुख से वर्णन भी करते रहे, लेकिन करते समय कर न पावे तो मास्टर सर्व शक्तिवान हुआ?

12.3.72

सर्व को सन्तुष्ट करने के लिए वा अपने सम्पर्क को सन्तुष्ट करने के लिए वा अपने सम्पर्क को श्रेष्ठ बनाने के लिए मुख्य बात अपने में सहन करने की वा समाने की शक्ति होनी चाहिए। असन्तुष्टता का कारण यह होता है जो कोई की वाणी वा संस्कार वा कर्म देखते हो वो अपने विवेक से यथार्थ नहीं लगता है, इसी कारण ऐसा बोल वा कर्म हो जाता है जिससे दूसरी आत्मा असन्तुष्ट हो जाती है। कोई का भी कोई संस्कार वा शब्द वा कर्म देख आप समझते हो - यह यथार्थ नहीं है वा नहीं होना चाहिए; फिर भी अगर उस समय समाने की वा सहन करने की शक्तियां धारण करो तो आपकी सहन शक्ति वा समाने की शक्ति आटोमेटिकली उसको अपने अयथार्थ चलन का साक्षात्कार करायेगी। लेकिन होता क्या है- वाणी द्वारा वा नैन-चैन द्वारा उसको महसूस कराने वा साक्षात्कार कराने लिए आप लोग भी अपने संस्कारों के वश हो जाते हो। इस कारण न स्वयं सन्तुष्ट, न दूसरा सन्तुष्ट होता है। उसी समय अगर समाने की शक्ति हो तो उसके आधार से वा सहन करने की शक्ति के आधार से उनके कर्म वा संस्कार को थोडे समय के लिए अवायड कर लो तो आपकी सहनशक्ति वा समाने की शक्ति उस आत्मा के ऊपर सन्तुष्टता का बाण लगा सकती है। यह न होने के कारण असन्तुष्टता होती है। तो सभी के सम्पर्क में सर्व को सन्तुष्ट करने वा सन्तुष्ट रहने के लिए यह दो गुण वा दो शक्तियां बहुत आवश्यक हैं। इससे ही आपके गुण गायन होंगे। भले उसी समय विजय नहीं दिखाई देगी, हार दिखाई देगी। लेकिन उसी समय की हार अनेक जन्मों के लिए आपके गले में हार डालेगी। इसलिए इसी हार को भी जीत मानना चाहिए।

2.4.72

सम्पूर्ण पवित्र वा निर्विकारी अपने को बना रहे हो वा बन गये हो? जिस समय लास्ट बिगुल बजेगा उस समय बनेगें? अगर कोई बहुत समय से ऐसी स्थिति में स्थित नहीं रहता है तो ऐसी आत्माओं का फिर गायन भी अल्पकाल का ही होता है। ऐसे नहीं समझना कि लास्ट में फास्ट जाकर इसी स्थिति को पालेंगे।

लेकिन नहीं। बहुत समय जो गायन है-उसको भी स्मृति में रखते हुए अपनी स्थिति को होलीएस्ट और हाईएस्ट बनाओ। कोई भी संकल्प वा कर्म करते हो तो पहले चेक करो कि जैसा ऊंचा नाम है वैसा ऊंचा काम है? अगर नाम ऊंचा और काम नीचा तो क्या होगा? अपने नाम को बदनाम करते हो? तो ऐसे कोई भी काम नहीं हो?

9.5.72

अभी आप स्वयं ही विस्तार में ज्यादा जाते हो। जो स्वयं ही विस्तार में जाने वाले हैं वह और कोई को सार - रुप में कैसे स्थित कर सकते? **कोई भी बात देखते वा सुनते हो तो बुद्धि को बहुत समय की आदत होने के कारण विस्तार में जाने की कोशिश करते हो। जो भी देखा वा सुना उसके सार को जानकर और सेकेण्ड में समा देने का वा परिवर्तन करने का अभ्यास कम है।** 'क्यों, क्या' के विस्तार में ना चाहते भी चले जाते हो। इसलिए जैसे बीज में शक्ति अधिक होती है, वृक्ष में कम होती है, वृक्ष अर्थात् विस्तार। कोई भी चीज का विस्तार होगा तो शक्ति का भी विस्तार हो जाता। जैसे सेक्रीन(कोलतार की चीनी) और वैसे मिठास में फर्क होता है ना। वह अधिक क्वान्टिटी यूज करनी पड़ेगी। सेक्रीन कम अन्दाज में मिठास ज्यादा देगी। इस रीति से कोई भी बात के विस्तार में जाने से समय और संकल्प की शक्ति दोनों ही व्यर्थ चली जाती है।

20.5.72

स्नेह के समय शक्ति मर्ज हो जाती है, शक्ति के समय स्नेह मर्ज हो जाता है। तो बैलेन्स ठीक नहीं रहा ना। दोनों का बैलेन्स ठीक रहे, इसको कहा जाता है कमाल। एक समय एक ज़ोर है; दूसरे समय पर दूसरा ज़ोर है तो भी दूसरी बात। लेकिन एक ही समय पर दोनों बैलेन्स ठीक रहें, इसको कहा जाता है सम्पूर्ण।

8.6.72

समय और संकल्प वा अपनी जो भी सर्वशक्तियां हैं, उन सर्वशक्तियों के खजाने को ज्यादा काम में नहीं लगाना है। कम खर्च बालानशीन। संकल्प वही उत्पन्न होगा जिससे सिद्धि प्राप्त हो ही जावेंगी। समय भी वही निश्चित होगा जिसमें सफलता हुई पड़ी है। इसको कहते ही हैं सिद्धि-स्वरुप। समय और संकल्प वा अपनी जो भी सर्वशक्तियां हैं, उन सर्वशक्तियों के खजाने को ज्यादा काम में नहीं लगाना है। कम खर्च बालानशीन। संकल्प वही उत्पन्न होगा जिससे सिद्धि प्राप्त हो ही जावेंगी। समय भी वही निश्चित होगा जिसमें सफलता हुई पड़ी है। इसको कहते ही हैं सिद्धि-स्वरुप।

2.8.72

समय की सूचना देने लिये बीच-बीच में घंटी बजा कर जगाते हैं। इसलिए आपके जड़ चित्रों के आगे घंटी बजाते हैं। उठाते भी हैं घंटी बजा कर, फिर सुलाते भी हैं घंटी बजा कर। यह भी समय की सूचना - घंटियां बजती हैं। क्योंकि जैसे शास्त्रवादियों ने लम्बा-चौड़ा टाइम बता कर सभी को सुला दिया है। खूब अज्ञान नींद में सभी सो गये हैं क्योंकि समझते हैं अभी बहुत समय पड़ा है। तो यहां फिर जो दैवी परिवार की आत्माएं हैं उन्हों को चलते-चलते माया कई प्रकार के रूप-रंग, रीति-रस्म के द्वारा अलबेला बना कर समय की पहचान से दूर, पुरुषार्थ के ढीलेपन में सुला देती है।

अभी बहुत कड़े पेपर तो आने वाले हैं। पेपर को बहुत समय हो जाता है तो पढ़ाई में अलबेलापन हो जाता है। फिर जब इम्तहान के दिन नजदीक होते हैं तो फिर अटेंशन देते हैं। तो यह अभी तो कुछ नहीं देखा। पहले के पेपर कुछ अलग हैं। लेकिन अभी तो ऐसे पेपर्स आने वाले हैं जो स्वप्न में, संकल्प में भी नहीं होगा। प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जैसे हद का ड्रामा साक्षी हो देखा जाता है। फिर चाहे दर्दनाक हो वा हंसी का हो, दोनों पार्ट को साक्षी हो देखते हैं, अन्तर नहीं होता है क्योंकि ड्रामा समझते हैं। तो ऐसी एकरस अवस्था होनी चाहिए। चाहे रमणीक पार्ट हो, चाहे कोई स्नेही आत्मा का गम्भीर पार्ट भी हो तो भी साक्षी होकर देखो। साक्षी दृष्टा की अवस्था होनी चाहिए। घबराई हुई या युद्ध करती हुई अवस्था ना हो।

कोई घबराते भी नहीं हैं, युद्ध में लग जाते हैं। जरुर कुछ कल्याण होगा। लेकिन साक्षी दृष्टा की स्टेज बिल्कुल अलग है। इसको ही एकरस अवस्था कहा जाता है।

19.9.72

लास्ट पेपर का समय क्या मिलेगा? एक सेकेण्ड। लास्ट पेपर का टाइम भी फिक्स है और पेपर भी फिक्स है। पेपर सुनाया था ना-नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप। एक सेकेण्ड में ऑर्डर हुआ-नष्टोमोहा बन जाओ तो एक सेकेण्ड में अगर नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप न बने, अपने को स्वरूप बनाने अर्थात् युद्ध करने में ही समय गंवा दिया और बुद्धि को ठिकाने लगाने में समय लगा दिया तो क्या हो जावेंगे?-फेल । तो समय भी एक सेकेण्ड का मिलना है। यह भी पहले से ही सुन रहे हैं। पेपर भी पहले सुन रहे हैं तो कितने पास होने चाहिये? फास्ट पुरुषार्थ की विधि प्रतिज्ञा से अपने को प्रख्यात करो। बाप को प्रख्यात करो अर्थात् प्रतिज्ञा से प्रत्यक्षता करो।

23.6.73

अभी के समय प्रमाण मास्टर रचयिता को कौन-सा पोतामेल देखना है? क्या-क्या गलती की यह तो बचपन का पोतामेल है लेकिन मास्टर रचयिता को अपना कौन-सा चार्ट चेक करना है? आप हर शक्ति को सामने रखते हुये यह पोतामेल देखो कि आज के दिन सर्व-शक्तियों में से कौन-सी शक्ति और कितनी परसेन्टेज में शक्ति जमा की। अभी जमा के खाते का पोतामेल देखना है। खर्चे को फुल स्टॉप देना है।

पहले यह चैक करो कि - अमृतवेले का आदिकाल ठीक है? अगर आदिकाल ठीक न होगा तो मध्य और अन्त भी ठीक न होगा। आदिकाल में अनुभव करने का अभ्यास नहीं है तो सृष्टि के आदि अथवा आदि काल में सर्व सुखों का अनुभव नहीं कर सकेगा। जैसे सारे दिन का यह आदि

काल है, उस आदि काल को अगर छोड़ कुछ समय के बाद व कुछ घण्टों के बाद जागते व बैठते हो व कनेक्शन जोड़ते हो तो जितना यहाँ लेट, उतना वहाँ लेट। क्योंकि बाप-दादा से बच्चों के मिलन का, अपॉइन्टमेन्ट का समय जो है उसमें पहला चान्स बच्चों का है। फिर है भक्तों का टाईम। अगर भक्तों के टाईम में भी कनेक्शन जोड़ा तो बच्चों जैसा वरदान नहीं पा सकेंगे। इसलिये इस काल का उस काल से कनेक्शन है।

8.7.73

जो एक ही समय तीनों रुप से सर्विस नहीं करते हो। तीनों रुपों और तीनों रीति से एक ही समय करना है। नॉलेज़फुल, पॉवरफुल और लवफुल, इसमें लव और लॉ ये दोनों साथ-साथ आ जाते हैं। इन तीनों रुप से तो सर्विस करनी ही है लेकिन इन तीनों रीति से भी करनी है। अर्थात् मन्सा, वाचा और कर्मणा इन तीनों ही रीति से और एक ही समय इन तीनों रुपों से करनी है। जब वाणी द्वारा सर्विस करते हो, तो मन्सा भी पॉवरफुल हो। पॉवरफुल स्टेज से तो उसकी मन्सा को भी चेन्ज कर देंगे और वाणी द्वारा उनको नॉलेजफुल बना देंगे और फिर कर्मणा द्वारा अर्थात् जो भी उनके सम्पर्क में आते हैं तो उसके सम्पर्क ऐसा लवफुल हो कि जो ऑटोमेटिकली वह स्वयं महसूस करे कि यह कोई अपने ईश्वरीय परिवार (गॉडली फेमिली) में ही पहुंच गया है। और अपनी चलन ही ऐसी हो कि जिससे वह स्वयं महसूस करे कि वास्तव में यह ही मेरा असली परिवार है।

2.8.73

बच्चे तुम युद्ध-स्थल पर उपस्थित रुहानी योद्धा हो, फिर कहीं योद्धापन भूल अपनी सहज-सुखाली जीवन बिताते हुए अपने जीवन के प्रति साधन और सम्पत्ति लगाते हुए समय व्यतीत तो नहीं कर रहे हो? जैसे वारियर को धुन लगी ही रहती है विजय प्राप्त करने की, क्या ऐसी मायाजीत बनने की लगन, अग्नि की तरह

प्रज्जवलित है? बच्चे! अब आपके सामने सेवा का फल साधनों के रुप में और महिमा के रुप में प्राप्त होने का समय है। इसी समय अगर यह फल स्वीकार कर लिया तो फिर कर्मातीत स्टेज का फल, सम्पूर्ण तपस्वीपन का फल और अतिइन्द्रिय सुख की प्राप्ति का फल प्राप्त न हो सकेगा।

कोई भी आधार पर जीवन का आधार नहीं होना चाहिए, अथवा पुरुषार्थ भी कोई भी आधार पर नहीं होना चाहिए। इससे योगबल की शक्ति के प्रयोग में कमी हो जाती है और जितना ही योगबल की शक्ति का प्रयोग नहीं करते, उतनी ही वह शक्ति बढ़ती नहीं।योगबल अभ्यास से बढ़ता जरुर है। जैसे कोई भी बात सामने आती है, तो स्थूल साधन फौरन ध्यान में आ जाते हैं। लेकिन स्थूल साधन होते हुए भी ट्रायल (प्रयत्न)योगबल की ही करनी है।

28.1.74

जो महारथी हैं अर्थात् 'पास विद ऑनर' होने वाले हैं, तो उनकी नींद का टाइम भी योग-युक्त स्थिति में गिना जाता है। उनकी स्टेज ऐसी होगी, जैसे कि पार्ट समाप्त कर वह स्वयं परमधाम में हैं। और उनको योग की ही महसूसता होगी। जैसे गायन है ना कि ब्रह्मा से ब्राह्मण बने। यहाँ तो ब्राह्मण से देवता बनते हैं। लेकिन **यह ब्रह्म से ब्राह्मण अर्थात् रात को सोते समय बस यही संकल्प होगा, कि अब मैं अपना पार्ट पूरा कर कर्मइन्द्रियों से अलग होकर जाता हूँ अपने पारब्रह्म में और जब अमृतवेले उठेगे, तो महसूस करेंगे कि मैंने यह आधार लिया है, पार्ट बजाने के लिए, तो गोया ब्रह्म से ब्राह्मण बनकर आये हैं। यहाँ से तो जाकर वे सीधे देवता बनेंगे। लेकिन यह इस समय के ही अष्ट रत्नों का गायन है। जैसे साकार में बाप और माँ सरस्वती को देखा-उन्हें फर्स्ट, सेकेण्ड नम्बर किस आधार पर मिला? उनकी ज्यादा समय की कमाई तो नींद की ही जमा हुई ना? भले वे सोते भी थे, लेकिन ऐसा अनुभव करते थे कि नींद में नहीं हैं बल्कि हम तो**

जाग रहे हैं और फिर उनकी थकावट भी दूर हो जाती थी क्योंकि जब आत्मा कमाई में जागृत होती है, तो उसे थकावट भी नहीं होती। तो जैसे मां-बाप ने नींद को योग में बदला तो आप भी फर्स्ट ग्रेड के महारथियों को ऐसा ही फॉलो करना है। अब ऐसा अनुभव तो करते हो कि नींद कम होती जाती है, लेकिन ऐसी अवस्था बनानी है। नींद को योग में बदलो और फॉलो फादर करो। सारा दिन तो वे आपके समान ही साधारण थे ना? यह है फर्स्ट ग्रेड की निशानी- अष्ट रत्नों में आने वालों की। दूसरे हैं सौ वाले और फिर तीसरे हैं 16108 में आने वाले। लेकिन यहाँ महारथी तो सभी हैं, घोड़े सवार कोई नहीं है। लेकिन फर्स्ट, सेकेण्ड और थर्ड नम्बर होते हैं।

24.6.74

अपना एक फोटो निकाल रखो। जैसे कोई गन्दगी उठाने वाला हो और टोकरे पर टोकरा गन्द का उठाया हो। ऐसा चित्र निकाल बुद्धि में रखो। जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है, उस समय वह फोटो देखो। जैसे बाप-दादा ने भविष्य प्रारब्ध की फोटो निकलवाई क्योंकि चित्र को देख चरित्र स्मरण आवेगा। ऐसा चित्र जब सामने आवेगा तो क्या शर्म व लज्जा नहीं आवेगी? एक तरफ मास्टर सर्वशक्तिवान् का चित्र, दूसरी तरफ वह चित्र रखो तो अपने आप ही मालूम पड़ जावेगा कि हम क्या बन गये। मास्टर सर्वशक्तिवान् के आगे अभी तक भी वृत्ति और दृष्टि का चंचल होना शोभता नहीं है।

11.7.74

अभी तो समय की समाप्ति की समीपता है, तो अपने भी सब हिसाब चेक करो और समाप्त करो। हिसाब-किताब आता है ना? मास्टर नॉलेजफुल हो ना? **पुराने खाते का कर्ज या तो व्यर्थ संकल्प-विकल्प के रूप में होगा या कोई संस्कार व स्वभाव के रूप में होगा।** इन बातों से चेक करो कि संकल्प एक है?

4.2.75

जैसा समय वैसे अपने कदम को बढ़ाना चाहिए। जब अन्तिम समय समझते हो तो अपनी स्थिति भी अन्तिम सम्पूर्ण स्टेज वाली समझते हो? **समय अन्तिम और पुरुषार्थ की रफ्तार व स्थिति मध्यम होगी तो रिजल्ट क्या होगी?** स्वर्ग के सुखों की प्रालब्ध मध्यम पुरुषार्थ वाले सतयुग के मध्य में प्राप्त करेंगे - ऐसा लक्ष्य तो नहीं है ना? लक्ष्य फर्स्ट जन्म में आने का है तो लक्षण भी फर्स्ट क्लास चाहिए। समय प्रमाण और लक्ष्य प्रमाण पुरुषार्थ को चेक करो।

9.9.75

जैसे कल्प पहले पाण्डवों का गायन है कि सेकेण्ड में जहाँ तीर लगाया वहाँ गंगा प्रगट हुई अर्थात् सेकेण्ड में असम्भव भी सम्भव प्रत्यक्ष फल के रूप में दिखाई दिया। इसको ही सिद्धि कहा जाता है। यह नहीं होता, क्योंकि प्रत्यक्ष-फल की प्राप्ति के लिए हर सेकेण्ड अपनी सम्पूर्ण सर्व शक्ति सम्पन्न स्वरूप की स्मृति प्रत्यक्ष संकल्प रूप में नहीं रहती। मैं पुरुषार्थी हूँ, सम्पन्न हो ही जाऊंगा, होना तो ज़रूर है-नम्बरवार होना ही है। हमारा काम है मेहनत करना, वह तो यथाशक्ति कर ही रहे हैं - यह हर सेकेण्ड का संकल्प रूपी बीज सर्व शक्ति सम्पन्न नहीं होता है। उस समय के संकल्प में हो ही जायेगा अर्थात् भविष्य का संकल्प भरा हुआ होता है। दृढ़ निश्चय व प्रत्यक्ष फल के रस का बल भरा हुआ न होने के कारण सिद्धि भी प्रत्यक्ष नहीं। लेकिन दो घड़ी बाद, घण्टे बाद या कुछ दिनों बाद भविष्य प्राप्ति हो जाती है - तो इसका कारण समझा? आपके संकल्प रूपी बीज के कारण ही प्रत्यक्ष सिद्धि नहीं होती। अनेक प्रकार के साधारण संकल्प होते हैं। **जैसे कि समय प्रमाण होना ही है, अभी सारे तैयार कहाँ हुये है? अभी तो आगे के नम्बर ही तैयार नहीं हुए हैं। फाइनल तो आठ ही होने हैं। ऐसे-ऐसे भविष्य नॉलेज के साधारण संकल्प आपके बीज को कमजोर कर देते हैं और यही भविष्य संकल्प जो उस समय यूज नहीं करना चाहिए,**

लेकिन उस समय न सोचते हुए भी यूज कर लेते हो - जिस कारण प्रत्यक्ष फल भी भविष्य फल के स्वरूप में परिवर्तन हो जाता है।

1.10.75

तीव्र पुरुषार्थ का स्लोगन है - 'जैसा संकल्प मैं करुँगा मेरे संकल्प का वैसा ही वातावरण बनेगा'। संकल्प का भी आधार वातावरण पर और वातावरण का आधार पुरुषार्थ पर है।

जैसे वाणी में हुई भूल महसूस होती है, वैसे व्यर्थ संकल्प की भी भूल महसूस होनी चाहिए। जब ऐसी चैकिंग करेंगे तब ही आप आगे बढ़ सकेंगे।

अब वानप्रस्थी का पुरुषार्थ होना चाहिए। अब भी अगर बचपन का पुरुषार्थ करते रहे तो लक्क अर्थात् भाग्य की लॉटरी को गँवा देंगे।

8.10.75

पहले नम्बर के चात्रकों की स्थिति सदा यही रही जो पाना था, वह पा लिया। अब समय भी बाकी थोड़ा रहा है। दूसरे नम्बर वाले जो सर्विसएबल, नॉलेजफुल ज्यादा, पॉवरफुल कम थे उनकी स्थिति यह रहती है कि पा लिया है, मिल रहा है और निश्चय है कि पा ही लेंगे। खुशी के झूले में झूलते हैं लेकिन बीच-बीच में झूले को तेज झुलाने के लिए कोई आधार की आवश्यकता है। वह आधार क्या है? कोई अन्य द्वारा की हुई सर्विस प्रति हिम्मत, उल्लास दिलाने वाला हो अर्थात् 'बहुत अच्छा' और 'बहुत अच्छा' करने वाला हो। नहीं तो खुशी का झूला झूलते-झूलते रुक जाता है। तो रुके हुए को चलाना चाहिए। पहली स्टेज वालों का ऑटोमेटिक झूला है।

8.12.75

अब इतना समय पुरुषार्थ का नहीं रहा है जो पहले स्वयं के प्रति समय दो, फिर अन्य की सेवा के प्रति समय दो। फास्ट पुरुषार्थ अर्थात्

स्वयं और अन्य आत्माओं की साथ-साथ सेवा हो। हर सेकेण्ड, हर संकल्प में स्वयं के कल्याण की और विश्व के कल्याण की साथ-साथ भावना हो। एक ही सेकेण्ड में डबल कार्य हो, तब ही डबल ताज-धारी बनेंगे। अगर **एक समय में एक ही कार्य करेंगे तो स्वयं का व विश्व का; एक समय भी एक कार्य करने की प्रालब्ध नई दुनिया में एक लाइट का क्राउन अर्थात् पवित्र जीवन, सुख-सम्पत्ति वाला जीवन प्राप्त होगा।**

बच्चों के बचपन का समय स्वयं के प्रति होता है और ज़िम्मेवार आत्माओं का समय सेवा प्रति होता है। तो घोड़ेसवार और प्यादों का समय स्वयं प्रति ज्यादा जायेगा। स्वयं ही कभी बिगड़ेंगे, कभी धारणा करेंगे, कभी धारणा में फेल होते रहेंगे। कभी तीव्र पुरुषार्थ में, कभी साधारण पुरुषार्थ में होंगे। कभी किसी संस्कार से युद्ध तो कभी किसी संस्कार से युद्ध। वे स्वयं के प्रति ज्यादा समय गँवायेंगे। लेकिन महारथी ऐसे नहीं करेंगे। जैसे बच्चे होते हैं - खिलौने से खेलेंगे भी, बनायेंगे भी और बिगाड़ेंगे भी। यह भी अपने संस्कार रूपी खिलौने से कभी खेलते, कभी बिगाड़ते, कभी बनाते हैं, कभी वशीभूत हो जाते हैं और कभी उसको वशीभूत कर लेते हैं। लेकिन यह बचपन की निशानी है, महारथी की नहीं।

22.1.76

सारी जिन्दगी को अगर 5000 वर्ष की प्रालब्ध के हिसाब से देखो तो सेकेण्ड की बात है वा सारी जिन्दगी है? बेहद के हिसाब से देखो तो सेकेण्ड की बात है। विशाल बुद्धि बेहद के हिसाब से देखेंगे। वह कब थकेंगे नहीं। सारे कल्प के अन्दर पौना भाग प्राप्ति है, यह तो लास्ट में गिरावट का अनुभव होता है। इस थोड़े से समय के आधार पर कल्प का पौना भाग प्राप्ति है, उस हिसाब से देखो, तो यह कुछ भी नहीं हैं। बेहद का बाप है, बेहद का वर्सा है तो बुद्धि भी बेहद में रखो, हद की बातें समाप्त करो।

महावीर वा महाविरनी की मुख्य निशानी क्या होगीं? **वर्तमान समय के प्रमाण महावीर की निशानी हर सेकेण्ड, हर संकल्प में चढ़ती कला का**

अनुभव करेंगे। जो महावीर नहीं वह कोई सेकेण्ड वा कोई संकल्प में चढ़ती कला का अनुभव, कोई में ठहरती कला का। चढ़ती कला आटोमेटिकली सर्व के प्रति भला अर्थात् कल्याण करने के सेवा निमित्त बना देती। वायब्रेशन वातावरण द्वारा भी कइयों के कल्याण कर सकते हैं। इसलिए कहा जाता है, 'चढ़ती कला तेरे भाने सब का भला'। वह अनेकों को रास्ता बताने के निमित्त बन जाते। उन्हें रुकने वा थकने की अनुभूति नहीं होगी। वह सदा अथक, सदा उमंग, उत्साह में रहने वाले होंगे। उत्साह कभी भी कम न हो, इसको कहा जाता है 'महावीर'। रुकने वाले घोड़े सवार, थकने वाले प्यादे, सदा चलते रहने वाले महावीर। उनकी माया के किसी भी रूप में आंख नहीं डूबेगी, उसको देखेंगे ही नहीं। वह माया के किसी भी रूप को देखते हुए भी देखेंगे नहीं। महावीर अर्थात् फुल नालेज (पूर्ण ज्ञान) फुल नालेज वाले कभी फेल नहीं हो सकते। फेल (नापास) तब होते हैं जब नालेज का कोई पाठ याद नहीं होता। नालेजफुल बनना है, सिर्फ नालेज नहीं। यह नई बात है, यह पता नहीं - उन्हों के यह शब्द कभी नहीं होंगे।

3-5-77

याद हैं? जैसे भविष्य में जैसा समय होगा वैसी ड्रेस चेन्ज करेंगे। हर समय के कार्य की ड्रेस और श्रृंगार अपना अपना होगा। तो यह अभ्यास यहाँ धारण करने से भविष्य में प्रालब्ध रूप में प्राप्त होंगे। वहाँ स्थूल ड्रेस चेंज करेंगे और यहाँ जैसा समय, जैसे कार्य, वैसा स्मृति स्वरूप हो। अभ्यास है वा भूल जाता है? इस समय के आपके अभ्यास का यादगार भक्तिमार्ग में भी जो विशेष नामी-ग्रामी मन्दिर हैं वहाँ भी समय प्रमाण ड्रेस बदली करते हैं। हर दर्शन की ड्रेस अपनी-अपनी बनी हुई होती है। तो यह यादगार भी किन आत्माओं का है? जो आत्माएं इस संगमयुग पर जैसा समय वैसा स्वरूप बनने के अभ्यासी हैं।

बाप-दादा बच्चों के सारे दिन की दिनचर्या को चैक करते हैं। रिजल्ट में समय प्रमाण 'स्मृति स्वरूप' का अभ्यास कम दिखाई देता है। स्मृति में है, लेकिन

स्वरूप में आना नहीं आता है। समय होगा अमृतवेले का, जिस समय विशेष बच्चों के प्रति सर्वशक्तियों के वरदान का, सर्व अनुभवों के वरदान का, बाप समान शक्तिशाली लाईट हाऊस, माइट हाऊस स्वरूप में स्थित होने का, मेहनत कम और प्राप्ति अधिक होने का गोल्डन समय है। उस समय भी जो मास्टर बीज रूप वरदानी स्वरूप की स्मृति होनी चाहिए, उसके बजाए, समर्थी स्वरूप के बजाए, बाप समान स्थिति का अनुभव करने के बजाए, कौन-सा स्वरूप धारण करते हैं? मैजारिटी उल्हने देते या शिकायत करते हैं या दिलशिकस्त स्वरूप हो कर बैठते। वरदानी, विश्वकल्याणी स्वरूप के बजाए स्वयं के प्रति वरदान माँगने वाले बन जाते हैं। या अपनी शिकायतें या दूसरों की शिकायतें करेंगे।

'जो हो, जैसे हो, जिसके हो' उस स्मृति में रहो। पहले मनन करो कि हर समय वैसा स्वरूप रहा? अगर नहीं तो फौरन अपने को चैक करने के बाद चेंज करो। कर्म करने के पहले स्मृति स्वरूप को चैक करो, कर्म करने के बाद नहीं करो। कहीं भी कोई कार्य अर्थ जाना होता है तो जाने के पहले तैयारी करनी होती है, न कि बाद में। ऐसे हर काम करने के पहले स्थिति में स्थित होने की तैयारी करो। करने के बाद सोचने से कर्म की प्राप्ति के बजाए पश्चात्ताप हो जाता है। तो **द्वापर से प्राप्ति के बजाए प्रार्थना और पश्चात्ताप किया लेकिन अब प्राप्ति का समय है। तो प्राप्ति का आधार हुआ - 'जैसा समय वैसा स्मृति स्वरूप'।** अब समझा कमी क्या करते हो?

10-6-77

एवररेडी हो जो सेकेण्ड में जिस स्थिति में स्थित होने का डायरेक्शन मिले तो उसी समय स्वयं को स्थित कर सको वा स्थित होने में ही समय निकल जाएगा? क्योंकि **जैसे समय सम्पन्न होने का समीप आ रहा है, तो समय के पहले स्वयं में यह विशेषता अनुभव करते हो? अन्तिम समय फुल स्टॉप (पूर्ण विराम) होने सर्वश्रेष्ठ साधन यही है, जो डायरेक्शन मिले उसी प्रमाण, इसी घड़ी उस स्थिति में स्थित हो जाना।**

18-6-77

जो समय प्रति समय युक्तियां मिलती, उनको समय पर यूज नहीं करते। इस कारण समय पर हार खा लेते हैं। युक्तियां हैं, लेकिन समय बीत जाने के बाद, पश्चात्ताप के रूप में स्मृति में आती - ऐसे होता था तो ऐसे करते.....। तो चेकिंग की कमजोरी होने कारण चेन्ज (परिवर्तन) भी नहीं हो सकते। चेकिंग करने का यंत्र है - 'दिव्य बुद्धि'। वैसे चेकिंग का तरीका चार्ट रखना तो है, लेकिन चार्ट भी दिव्य बुद्धि द्वारा ही ठीक रख सकेंगे। दिव्य बुद्धि नहीं तो रांग को भी राईट समझ लेते। अगर कोई यंत्र ठीक नहीं तो रिजल्ट उल्टी निकलेगी। दिव्य बुद्धि द्वारा चेकिंग करने से यथार्थ चेकिंग होती है। तो दिव्य बुद्धि द्वारा चेकिंग करो, तो चेंज हो जाएंगे; हार के बदले जीत हो जाएगी।

25-6-77

अब का जो समय मिला है वह ब्राह्मणों के स्वयं पुरुषार्थ के लिए नहीं है लेकिन हर संकल्प हर बोल द्वारा दाता के बच्चे विश्व की आत्माओं प्रति प्राप्त हुए ख़ज़ानों को देने अर्थ है।

बाप ने जिस कार्य के लिए समय और ख़ज़ाना दिया है अगर उसके बदले स्वयं प्रति समय और सम्पत्ति लगाते हो तो यह भी अमानत में ख़्यानत होती है।

13.1.78

समय के प्रमाण अब व्यर्थ के नाम-निशान को भी खत्म करो। न व्यर्थ बोल न व्यर्थ कर्म, न व्यर्थ संग। व्यर्थ संग भी समय और शक्ति खत्म कर देता है।

23.11.79

वर्तमान समय संकल्प की हलचल भी बड़ी गिनी जायेगी। पहले समय था जब संकल्प को -फ्री छोड़ दिया, वाचा, कर्मणा पर अटेन्शन रखते थे लेकिन अभी मन्सा भी हलचल न हो। क्योंकि लास्ट में है ही मन्सा द्वारा विश्व-परिवर्तन। अभी मन्सा का एक संकल्प भी व्यर्थ हुआ तो बहुत कुछ गँवाया। एक संकल्प को भी साधारण बात न समझो। इतना अटेन्शन। अब समय बदल गया, पुरुषार्थ की गति भी बदल गई। तो संकल्प में ही फुलस्टाप चाहिए। मन्सा पर भी अटेन्शन हो इसको ही कहा जाता है - 'चढ़ती कला'। सदा चढ़ती कला रहे, अभी सदा का ही सौदा है।

7.1.80

कमजोरी यह होती जो समय पर वह पाइंट टच नहीं होती है। वैसे सब पाइंटस बुद्धि वा डायरियों में भी बहुत होती हैं, लेकिन समय रूपी डायरी में उस समय वह पाइंट दिखाई नहीं देती। इसके लिए सदा ज्ञान की मुख्य पाइंटस को रोज रिवाइज करते रहो। अनुभव में लाते रहो चेक करते रहो और अपने को चेक करते चेन्ज करते रहो। फिर कभी भी टाइम वेस्ट नहीं होगा। और थोड़े ही समय में अनुभव बहुत कर सकेंगे। सदा अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान अनुभव करेंगे।

17.3.81

जिसमें दया भाव होगा वह सदा निराकारी, निर्विकारी और निरअहंकारी होगा। मंसा निराकारी, वाचा निर्विकारी, कर्मणा निरअहंकारी। इसको कहा जाता है दयालु और कृपालु आत्मा। तो, हे दया से भरपूर भण्डार आत्मायें, समय पर किसी आत्मा के प्रति दया भाव की अंचली भी नहीं दे सकते हो? भरपूर भण्डार से अंचली दे दो तो सारे ब्राह्मण परिवार की समस्यायें ही समाप्त हो जाएं।

22-10-81

विशेषता न देख ईर्ष्या में आये तो कितना लम्बा कीर्तन और कहानी हो गई। ऐसे विशेषता को न देखने से लक्ष्मी नारायण की कथा के बजाए राम कथा बन जाती है। और इसी कथा कीर्तन में स्वयं का, सेवा का समय व्यर्थ गंवाते हो। और भी मजे की बात करते हो, सिर्फ अकेला कीर्तन कथा नहीं करते लेकिन कीर्तन मण्डली भी तैयार करते हैं-इसीलिए सुनाया-इस व्यर्थ कीर्तन कथा से समय बचने के कारण विशेष समय भी मिल जाता है। तो समझा क्या करना है, क्या नहीं करना है?

6-11-81

समर्थ आत्मायें अर्थात् जिनका व्यर्थ का खाता समाप्त हो। नहीं तो ब्राह्मण जीवन में व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म बहुत समय व्यर्थ गंवा देते हैं। जितनी कमाई जमा करने चाहो उतनी नहीं कर सकते हो। व्यर्थ का खाता समर्थ बनने नहीं देता। अब व्यर्थ का खाता समाप्त करो।

आप मा. सर्वशक्तिवान क्या नहीं कर सकते। सिर्फ अटेन्शन। बार-बार अटेन्शन चाहिए। अमृतवेले अटेन्शन दिया, रात को दिया, बाकी मध्य में अलबेलापन हो गया तो रिजल्ट क्या होगी? व्यर्थ का खाता समाप्त नहीं होगा। कुछ न कुछ पुराना खाता रह जायेगा। इसलिए बार-बार यही अटेन्शन दो कि हम मा. सर्वशक्तिवान हैं। चैकिंग चाहिए।

याद में बैठे उस समय तो अटेन्शन रहता है लेकिन बार-बार अटेन्शन। और जिसका बार-बार अटेन्शन है उसकी निशानी है- सब टेन्शन से परे। लाडले तो हो, बाप के बने, श्रेष्ठ भाग्य का सितारा चमका और क्या चाहिए। सिर्फ यही छोटा-सा काम दिया है-कि बार-बार बुद्धि द्वारा अटैन्शन रखो।

18-11-81

समय और स्वयं के महत्त्व को स्मृति में रखो तो महान बन जायेंगे- संगमयुग का एक-एक सेकण्ड सारे कल्प की प्रालब्ध बनाने का आधार है। ऐसे समय के महत्त्व को जानते हुए हर कदम उठाते हो? जैसे समय महान है वैसे आप भी महान आत्मा हो - क्योंकि बापदादा द्वारा हर बच्चे को महान आत्मा बनने का वर्सा मिला है। तो स्वयं के महत्त्व को भी जानकर हर संकल्प, हर बोल और हर कर्म महान करो। सदा इसी स्मृति में रहो कि हम महान बाप के बच्चे महान हैं। इससे ही जितना श्रेष्ठ भाग्य बनाने चाहो बना सकते हो। संगमयुग को यही वरदान है।

6.4.82

'मन्मनाभव का महामंत्र है'। इस महामंत्र को हर संकल्प और सेकण्ड में स्वरूप में लाना इसी को ही समान और समाई हुई आत्मा कहा जाता है।

26-4-82

मैं भी शान्त, घर भी शान्त, बाप भी शान्ति का सागर, धर्म भी शान्त। तो ऐसा पाठ पढ़ाओ। शान्ति ही शान्ति का पाठ। दो घड़ी के लिए तो अनुभव करेंगे ना। एक घड़ी भी डेड साइलेन्स की अनुभूति हो जाए तो वह बार-बार आपको थैंक्स देंगे। आपको ही भगवान समझने लग जायेंगे। क्योंकि बहुत परेशान हैं ना। जितनी ज्यादा बड़ी बुद्धि है उतनी बड़ी परेशानी भी है, ऐसी परेशान आत्माओं को अगर ज़रा भी अंचली मिल जाती तो वही उन्हों के लिए एक जीवन का वरदान हो जाता। जिसको भी चांस मिले वह बोलते-बोलते शान्ति में ले जाएँ। एक सेकण्ड भी अनुभूति में उन्हों को ले जाएँ तो वह बहुत-बहुत थैंक्स मानेंगे। वातावरण ऐसा बना दो जो सभी ऐसे अनुभव करें जैसे कोई शान्ति की किरण आ गई है। चाहे एक, आधा सेकण्ड ही अनुभव हो क्योंकि यह तो वायुमण्डल द्वारा होगा ना! ज्यादा समय नहीं रह सकेंगे। एक आधा सेकण्ड भी वायुमण्डल ऐसा हल्का बन जाए तो अन्दर से बहुत शुक्रिया मानेंगे। क्योंकि विचारे बहुत हलचल में हैं। उन्हों

को देख बापदादा को तो रहम आता है। ना रात की नींद, न दिन की, भोजन भी खाने की रीति से नहीं खाते। जैसे कि ऊपर में बोझ पड़ा हुआ है। क्या होगा, कैसे होगा! तो ऐसी आत्माओं को एक झलक भी मिल जाए तो क्या मानेंगे! उन्हों के लिए तो समझो सूर्य नीचे उतर आया। एक झलक ही चाहिए। ज्यादा समय तो वह शक्ति को धारण भी नहीं कर सकेंगे। यह तो थोड़ी घड़ी की बात है। जैसे लहर आती और चली जाती है। इतना भी अनुभव हुआ तो उन्हों के लिए तो बहुत है क्योंकि बहुत परेशान हैं। उन्हों को थोड़ा तिनके का सहारा भी बहुत है।

13-6-82

सबसे पहले तकदीर खुलने का श्रेष्ठ समय वा श्रेष्ठ घड़ी वो ही है जब बच्चों ने जाना, माना - मेरा बाप। वह घड़ी ही सारे कल्प के अन्दर श्रेष्ठ और सुहावनी है। सभी को उस घड़ी की स्मृति अब भी आती है ना! बनना, मिलना, अधिकार पाना यह तो सारा संगमयुग ही अनुभव करते रहेंगे। लेकिन वह घड़ी जिसमें अनाथ से सनाथ बने, क्या से क्या बने। बिछुड़े हुए फिर से मिले। अप्राप्त आत्मा प्राप्ति के दाता की बनी वह पहली परिवर्तन की घड़ी, तकदीर जगने की घड़ी कितनी श्रेष्ठ महान है। स्वर्ग के जीवन से भी वह पहली घड़ी महान है जब बाप के बन गये। मेरा सो तेरा हो गया। तेरा माना और डबल लाइट बने। मेरे के बोझ से हल्के बन गये। खुशी के पंख लग गये। फर्श से अर्श पर उड़ने लगे। पत्थर से हीरा बन गये। अनेक चक्करों से छूट स्वदर्शन चक्रधारी बन गये। वह घड़ी याद है? वह बृहस्पति के दशा की घड़ी जिसमें तन-मन-धन-जन सर्व प्राप्ति की तकदीर भरी हुई है। ऐसी दशा, ऐसी रेखा वाली वेला में श्रेष्ठ तकदीरवान बने। तीसरा नेत्र खुला और बाप को देखा। सभी अनुभवी हो ना? दिल में गीत गाते हो ना वह श्रेष्ठ घड़ी। कमाल तो उस घड़ी की है ना! बापदादा ऐसी महान वेला में, तकदीरवार वेला में आये हुए बच्चों को देख-देख खुश हो रहे हैं।

20-2-84

समय के प्रमाण अब ब्राह्मण आत्मायें समस्याओं के वश हो जाएं इससे अभी पार हो गये। समस्याओं के वश होना यह बाल अवस्था है। अब ब्राह्मण आत्माओं की बाल अवस्था का समय समाप्त हो चुका। युवा अवस्था में मायाजीत बनने की विधि से महावीर बने, सेवा में चक्रवर्ती बने। अनेक आत्माओं के वरदानी महादानी बने, अनेक प्रकार के अनुभव कर महारथी बने। अब कर्मातीत, वानप्रस्थ स्थिति में जाने का समय पहुँच गया है।

बहुतकाल से अर्थात् अब से भी एवररेडी। तीव्रगति वाले कर्मातीत, समाधान स्वरुप सदा रहने का अभ्यास नहीं करेंगे तो तीव्रगति के समय देने वाले बनने के बजाए देखने वाले बनना पड़े। तीव्र पुरुषार्थी बहुत काल वाले तीव्रगति की सेवा के निमित्त बन सकेंगे।

7-3-84

याद में रह सेवा करना -यह है 'याद और सेवा का बैलेन्स'। लेकिन **सेवा में रह समय प्रमाण याद करना, समय मिला याद किया, नहीं तो सेवा को ही याद समझना इसको कहा जाता है अनबैलेन्स।**

7-5-84

समझते हैं यह बहुत अच्छा सहयोगी है। अच्छा विशेषता स्वरूप है। गुणवान है। लेकिन समय प्रति समय बाप ने ऐसा अच्छा बनाया है, यह भूल जाता है। संकल्प मात्र भी किसी आत्मा के तरफ बुद्धि का झुकाव है तो वह झुकाव सहारा बन जाता है। तो साकार रूप में सहयोगी होने के कारण समय पर बाप के बदले पहले वह याद आयेगा। दो चार मिनट भी अगर स्थूल सहारा स्मृति में आया तो बाप का सहारा उस समय याद होगा? दूसरी बात अगर दो चार मिनट के लिए भी याद की यात्रा का लिंक टूट गया तो टूटने के बाद जोड़ने की फिर मेहनत करनी पड़ेगी। क्योंकि निरन्तर में अन्तर पड़ गया ना! दिल में दिलाराम के बदले

और किसी की तरफ किसी भी कारण से दिल का झुकाव होता है। इससे बात करना अच्छा लगता है। इससे बैठना अच्छा लगता है, 'इसी से ही, यह शब्द माना दाल में काला है।' इसी से ही का ख्याल आना माना हीनता आई।

27-3-85

अभी समय को, संकल्प को, सेवा में अर्पण करो। अभी यह समर्पण समारोह मनाओ। स्व की छोटी-छोटी बातों के पीछे, तन के पीछे, मन के पीछे, साधनों के पीछे, सम्बन्ध निभाने के पीछे समय और संकल्प नहीं लगाओ। सेवा में लगाना अर्थात् स्व-उन्नति की गिफ्ट स्वतः ही प्राप्त होना।

हर घड़ी विश्व-कल्याण प्रति समर्पित करो। विश्व-कल्याण में स्व-कल्याण स्वतः ही समाया हुआ है।

बापदादा ने रिजल्ट में देखा बहुत करके जो पुरुषार्थ में अपने प्रति, संस्कार परिवर्तन के प्रति समय देते हैं। चाहे 50 वर्ष हो गये हैं, चाहे एक मास हुआ है लेकिन आदि से अब तक परिवर्तन करने का संस्कार मूल रूप में वही होता है, एक ही होता है और वही मूल संस्कार भिन्न-भिन्न रूप में समस्या बनकर आता है। मानो दृष्टान्त के रूप में किसका बुद्धि के अभिमान का संस्कार है, किसी का घृणा भाव का संस्कार है वा किसी का दिल-शिकस्त होने का संस्कार है वा किसी का अपने को और ही ज़्यादा होशियार समझने का संस्कार है। संस्कार वही आदि से अब तक भिन्न-भिन्न रूप में भिन्न-भिन्न समय पर इमर्ज होता रहता है। चाहे 50 वर्ष लगा है, चाहे एक वर्ष लगा है। इस कारण उस मूल संस्कार को जो समय प्रति समय भिन्न-भिन्न रूप में समस्या बन करके आता है, उसमें समय भी बहुत लगाया है, शक्ति भी बहुत लगाई है। अब शक्तिशाली संस्कार - 'दाता विधाता, वरदाता के इमर्ज करो'। तो यह महासंस्कार कमजोर संस्कार को स्वतः समाप्त कर देगा। अभी संस्कार को मारने में समय नहीं लगाओ। लेकिन सेवा के फल से, फल की शक्ति से स्वतः ही मर जायेगा। जैसे अनुभव भी है कि अच्छी स्थिति से जब सेवा में बिज़ी रहते हों तो सेवा की खुशी से उस समय तक समस्यायें स्वतः ही दब जाती

हैं। क्योंकि समस्याओं को सोचने की फुर्सत ही नहीं। हर सेकण्ड, हर संकल्प सेवा में बिजी रहेंगे तो समस्याओं का लंगर उठ जायेगा, किनारा हो जायेगा। आप औरों को रास्ता दिखाने के, बाप का खज़ाना देने के निमित्त सहारा बनो तो कमज़ोरियों का किनारा स्वत: ही हो जायेगा। समझा अभी क्या करना है? अभी बेहद को सोचो, बेहद के कार्य को सोचो। चाहे दृष्टि से दो, चाहे वृत्ति से दो, चाहे वाणी से दो, चाहे संग से दो, चाहे वायब्रेशन से दो। लेकिन देना ही है।

18.2.86

समय प्रमाण जितना वायुमण्डल अशान्ति और हलचल का बढ़ता जा रहा है उसी प्रमाण बुद्धि की लाइन बहुत क्लीयर होनी चाहिए। क्योंकि समय प्रमाण 'टचिंग और कैचिंग' इन दो शक्तियों की आवश्यकता है। एक तो बापदादा के डायरेक्शन को बुद्धि द्वारा कैच कर सको। अगर **लाइन क्लीयर नहीं होगी तो बाप के डायरेक्शन साथ मनमत भी मिक्स हो जाती। और मिक्स होने के कारण समय पर धोखा खा सकते हैं। जितनी बुद्धि स्पष्ट होगी उतना बाप के डायरेक्शन को स्पष्ट कैच कर सकेंगे।**

वर्तमान समय प्रमाण यह दोनों शक्तियों की बहुत आवश्यकता है। इसको बढ़ाने के लिए एक नामी और एकानामी वाले बनना। एक बाप दूसरा न कोई। दूसरे का लगाव और चीज है। लगाव तो रांग है ही है लेकिन दूसरे के स्वभाव का प्रभाव अपनी अवस्था को हलचल में लाता है। दूसरे का संस्कार बुद्धि को टक्कर में लाता है। उस समय बुद्धि में बाप है या संस्कार है? चाहे लगाव के रूप में बुद्धि को प्रभावित करे चाहे टकराव के रूप में बुद्धि को प्रभावित करे लेकिन बुद्धि की लाइन सदा क्लीयर हो। एक बाप दूसरा न कोई - इसको कहते हैं एक नामी। और एकानामी क्या है? सिर्फ स्थूल धन की बचत को एकानामी नहीं कहते। वह भी ज़रूरी है लेकिन समय भी धन है, संकल्प भी धन है, शक्तियाँ भी धन हैं, इस सबकी एकानामी। व्यर्थ नहीं गँवाओ।

आप समझो कि अभी विनाश का समय कुछ तो पड़ा है। चलो

10 वर्ष ही सही। लेकिन 10 वर्ष के बाद फिर यह पुरुषार्थ नहीं कर सकेंगे। कितनी भी मेहनत करो, नहीं कर सकेंगे। कमजोर हो जायेंगे। फिर अन्त युद्ध में जायेगी। सफलता में नहीं। त्रेतायुगी तो नहीं बनना है न!

31.3.86

जैसा समय, जैसा कर्म वैसे स्वरूप की स्मृति इमर्ज (प्रत्यक्ष) रूप में अनुभव करो। जैसे, अमृतवेले दिन का आरम्भ होते बाप से मिलन मनाते - मास्टर वरदाता बन वरदाता से वरदान लेने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ, डायरेक्ट भाग्यविधाता द्वारा भाग्य प्राप्त करने वाली पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा हूँ - इस श्रेष्ठ स्वरूप को स्मृति में लाओ। वरदानी समय है, वरदाता विधाता साथ में है।

ऐसे नहीं कि यह तो हूँ ही। लेकिन भिन्न-भिन्न स्मृति-स्वरूप को समय प्रमाण अनुभव करो तो बहुत विचित्र खुशी, विचित्र प्राप्तियों का भण्डार बन जायेंगे और सदैव दिल से प्राप्ति के गीत स्वतः ही अनहद शब्द के रूप में निकलता रहेगा - 'पाना था सो पा लिया...'। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न समय और कर्म प्रमाण स्मृति-स्वरूप का अनुभव करते जाओ।

14.10.87

जैसे शस्त्र को समय प्रमाण यूज़ नहीं करो तो वह शस्त्र बेकार हो जाता है अर्थात् उसकी जो वैल्यू है, वह उतनी नहीं रहती है। ज्ञान भी शस्त्र है, अगर मायाजीत बनने के समय शस्त्र को कार्य में नहीं लगाया तो जो वैल्यू है, उसको कम कर दिया क्योंकि लाभ नहीं लिया। लाभ लेना अर्थात् वैल्यू रखना।

10-1-88

स्नेही तो सभी हैं लेकिन स्नेह में एक है दिल का स्नेह, दूसरा है समय

प्रमाण मतलब का स्नेह और तीसरा है मजबूरी के समय का स्नेह। जो दिल का स्नेही है उसकी विशेषता यह होगी - सर्व सम्बन्ध और सर्व प्राप्ति सदा सहज स्वत: अनुभव करेंगे। एक सम्बन्ध की अनुभूति में भी कमी नहीं।

जब बाप शिक्षक के रूप में पढ़ाई द्वारा श्रेष्ठ पद की प्राप्ति कराने आते हैं तो उस समय टीचर के सामने गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ ही यथार्थ है। इसको कहा जाता है समय की पहचान प्रमाण सम्बन्ध की पहचान और सम्बन्ध प्रमाण स्नेह की प्राप्ति की अनुभूति। यही बुद्धि को एक्सरसाइज कराओ जो जैसा चाहे, जिस समय चाहे वैसे स्वरूप और स्थिति में स्थित हो सकें।

12-3-88

योग में बैठते हैं तो आत्म-अभिमानी होने बदले सेवा याद आती है। लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए। क्योंकि लास्ट समय अगर अशरीरी बनने की बजाए सेवा का भी संकल्प चला तो सेकण्ड के पेपर में फेल हो जायेंगे। उस समय सिवाय बाप के, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी - और कुछ याद नहीं।

ऐसे नहीं सोचो - सेवा का ही तो संकल्प आया, खराब संकल्प विकल्प तो नहीं आया। लेकिन कण्ट्रोलिंग पावर तो नहीं हुई ना। कण्ट्रोलिंग पावर नहीं तो रूलिंग पावर आ नहीं सकती, फिर रूलर बन नहीं सकेंगे। तो अभ्यास करो। अभी से बहुत काल का अभ्यास चाहिए।

13-12-89

सदा यह नशा रखो कि **'बेहद बाप और बेहद वर्से का बालक सो मालिक हूँ'।** जब बालक बनना है उस समय मालिक नहीं बनो और जब मालिक बनना है उस समय बालक नहीं बनो। जब कोई राय देनी है, प्लैन सोचना है, कुछ कार्य करना है तो मालिक होकर करो लेकिन जब मैजारिटी द्वारा या निमित्त बनी आत्माओं द्वारा कोई भी बात फाइनल हो जाती है तो उस समय बालक बन जाओ, उस समय मालिक नहीं बनो। मेरा ही विचार ठीक है, मेरा ही प्लैन ठेक है – नहीं।

उस समय मालिक नहीं बनो। किस समय राय बहादुर बनना है और किस समय राय मानने वाला बनना है- जिसको यह तरीका आ जाता है वह कभी नीचे-ऊपर नहीं होता। वह पुरुषार्थ और सेवा में सफल रहता है।

17-12-89

गुणों की लिस्ट भी स्मृति में रहती है तब समय प्रमाण उस गुण को कार्य में, कर्म में लगाते हो। कोई समय स्मृति कम होने से क्या रिजल्ट होती! समय पर गुण यूज नहीं कर सकते हो। जब समय बीत जाता फिर स्मृति में आता है कि यह नहीं करना चाहता था लेकिन हो गया, आगे ऐसा नहीं करेंगे। तो दिव्य गुणों को भी कर्म में लाने के लिए समय पर स्मृति चाहिए।

2-1-90

63 जन्म गंवाया और समर्थ बनने का यह एक जन्म है। तो इस समय को व्यर्थ तो नहीं करना चाहिए ना! अमृतबेले ले लेकर रात तक अपनी दिनचर्या को चेक करो। ऐसे नहीं कि सिर्फ रात्रि को चार्ट चेक करो लेकिन बीच-बीच में चेक करो, बार-बार चेक करने से चेंज कर सकेंगे। अगर रात को चेक करेंगे तो जो व्यर्थ गया वह व्यर्थ के खाते में ही हो जायेगा। इसलिए बापदादा ने बीच-बीच में ट्रैफिक कंट्रोल का टाइम फिक्स किया है। ट्रैफिक कंट्रोल करते हो या दिन में बिजी रहते हो? अपना नियम बना रहना चाहिए। चाहे टाइम कुछ बदली हो जाय लेकिन अगर अटेन्शन रहेगा तो कमाई जमा होगी। उस समय अगर कोई काम है तो आधे घंटे के बाद करो लेकिन कर तो सकते हो। घड़ी के आधार पर भी क्यों चलो। अपनी बुद्धि ही घड़ी है, दिव्य बुद्धि की घड़ी को याद करो। जिस बात की आदत पड़ जाती है तो आदत ऐसी चीज है जो न चाहते भी अपनी तरफ खींचेगी। जब बुरी आदत रहने नहीं देती, अपनी तरफ आकर्षित करती है तो अच्छे संस्कार क्यों नहीं अपना बना सकते। तो सदा चेक करो और चेंज करो तो सदा के लिए कमाई जमा होती रहेगी।

18-1-1990

रोज अमृतवेले अपने सामने सारा दिन किस स्मृति से उमंग-उत्साह में रहें - वह वैराइटी उमंग-उत्साह भी प्वाइंट्स इमर्ज करो। सिर्फ एक ही प्वाइंट कि मैं ज्योतिर्बिन्दु हूँ, बाप भी ज्योतिर्बिन्दु है, घर जाना है फिर राज्य में आना है - यह एक ही बात कभी-कभी बच्चों को बोर कर देती है। फिर सोचते हैं कुछ नया चाहिए। लेकिन हर दिन की मुरली में उमंग-उत्साह की भिन्न-भिन्न प्वाइंट्स होती है। वह उमंग-उत्साह की विशेष प्वाइंट अपने पास नोट करो। बहुत बड़ी लिस्ट बना सकते हैं। डायरी में भी नोट करो तो बुद्धि में भी नोट करो। जब बुद्धि में इमर्ज न हो तो डायरी से इमर्ज करो और वैराइटी प्वाइंट्स हर रोज नया उमंग-उत्साह बढ़ायेंगी। मनुष्य आत्मा का यह नेचर है कि वैराइटी पंसद आती है इसलिए चाहे ज्ञान का प्वांइट मनन करो या रुहरिहान करो। सारा दिन बिंन्दु याद करेंगे तो बोर हो जायेंगे। लेकिन बिंन्दु बाप भी है बिंन्दु आप भी हो। संगमयुग पर हीरो पार्टधारी भी हो, जीरो के साथ हीरो भी हो। सिर्फ जीरो नहीं हो। संगमयुग पर हीरो होने के कारण सारे दिन में वैराइटी पार्ट बजाते हो। मुझ जीरो का सारे कल्प में क्या-क्या पार्ट रहा है और इस समय क्या हीरो पार्ट है, किसके साथ पार्ट है, कितना समय और क्या पार्ट बजाना है, इस वैरायटी रुप से जीरो बन अपने हीरो पार्ट की स्मृति में रहो। याद में भी वैराइटी रुप से कभी बीज-रुप स्थिति में रहे, कभी फरिश्ता रुप में, कभी रुहरिहान के रुप में रहो। कभी बाप के मिले हुए खजानों के एक-एक रत्न को सामने लाओ। जिस समय जो रुचि हो उसी रीति से याद करो। जिस समय जिस सम्बंध से बाप का मिलन, बाप का स्नेह चाहो उस सम्बंध से मिलन मनाओ।

19-3-90

शिक्षा देने का समय अभी चला गया। अभी स्नेह दो, सम्मान दो, क्षमा करो। शुभ भावना रखो, शुभ कामना रखो - यही शिक्षा की विधि है।

13.02.91

एक टॉपिक पर वर्कशॉप करते हो तो कितने प्वाइन्ट्स निकालते हो! तो एक प्वाइन्ट बुद्धि में रखना, यह है एक विधि, और दूसरा है प्वाइन्ट बन प्वाइन्ट को कार्य में लगाना। प्वाइन्ट रूप भी हो और प्वाइन्ट्स भी हों। दोनों का बैलेन्स हो। यह है नम्बरवन विधि से नम्बरवन सिद्धि प्राप्त करना। कभी प्वाइन्ट के विस्तार में चले जाते हो। कभी प्वाइन्ट रूप में टिक जाते हैं। प्वाइन्ट रूप और प्वाइन्ट साथ-साथ चाहिए। कार्य शक्ति को बढ़ाओ।

25.02.91

सदैव यही स्मृति रखो कि मैं इस समय इस शरीर का मालिक हूँ। तो मालिक अपनी रचना के वश कैसे हो सकता है? अगर मालिक अपनी रचना के वश हो गया तो मोहताज हो गया ना! तो अभ्यास करो और कर्म करते हुए बीच-बीच में चेक करो कि मैं मालिकपन की सीट पर सेट हूँ? या नीचे तो नहीं आ जाता? सिर्फ रात को चेक नहीं करो। कर्म करते बीच-बीच में चेक करो। वैसे भी कहते हैं कि कर्म करने से पहले सोचो, फिर करो। ऐसे नहीं कि पहले करो, फिर सोचो। फिर निरन्तर मालिकपन की स्मृति और नशे में रहेंगे। संगमयुग पर बाप आकर मालिकपन की सीट पर सेट करता है। स्वयं भगवान आपको स्थिति की सीट पर बिठाता है। तो बैठना चाहिए ना!

17.03.91

समय को स्वयं प्रति या औरों प्रति शुभ कार्य में लगाओ तो जमा होता जायेगा। ज्ञान को कार्य में लगाओ। ऐसे गुणों को, शक्तियों को जितना लगायेंगे उतना बढ़ेगा। यह नहीं सोचना - जैसे वह लॉकर में रख देते हैं और समझते हैं बहुत जमा है, ऐसे आप भी सोचो मेरी बुद्धि में ज्ञान बहुत है, गुण भी मेरे में बहुत हैं, शक्तियां भी बहुत हैं। लॉकप करके नहीं रखो, यूज़ करो।

अगर यथार्थ विधि नहीं होगी तो समय पर सम्पूर्णता की सिद्धि नहीं मिलेगी। धोखा मिल जायेगा। सिद्धि नहीं मिलेगी।

03.04.91

योग का प्रयोग सर्व खजानों को,चाहे समय, चाहे संकल्प, चाहे ज्ञान का खजाना वा स्थूल तन भी अगर योग के प्रयोग की रीति से प्रयोग करो तो हर खजाना बढ़ता रहेगा।

संकल्प का खर्च कम हो लेकिन प्राप्ति ज्यादा हो। जो साधारण व्यक्ति दो चार मिनट संकल्प चलाने के बाद, सोचने के बाद सफलता या प्राप्ति कर सकता है वह आप एक दो सेकेण्ड में कर सकते हो। जिसको साकार में भी ब्रह्मा बाप कहते थे कम खर्चा बाला नशीन। खर्च कम करो लेकिन प्राप्ति 100गुणा हो। इससे क्या होगा? जो बचत होगी चाहे समय की, चाहे संकल्प की तो बचत को औरों की सेवा में लगा सकेंगे।

26.10.91

ऑनेस्ट संगमयुग के समय के खज़ाने को एक सेकेण्ड भी वेस्ट नहीं करेगा। क्योंकि संगमयुग का एक सेकेण्ड, वर्ष से भी ज्यादा है। जैसे गरीब आत्मा का स्थूल धन आठ आना आठ सौ के बराबर है। क्योंकि आठ आने में सच्चे दिल की भावना आठ सौ से ज्यादा है। ऐसे संगमयुग का समय एक सेकेण्ड इतना बड़ा है। क्योंकि एक सेकेण्ड में पद्मों जितना जमा होता है। सेकेण्ड गँवाया अर्थात् पद्मों जितनी कमाई का समय गँवाया। ऐसे ही संकल्प का खज़ाना, ज्ञान धन का खज़ाना, सर्व शक्तियों, सर्व गुणों का खज़ाना वेस्ट नहीं करेंगे। अगर सर्व शक्तियों, सर्व गुणों व ज्ञान को स्व-प्रति वा सेवा-प्रति काम में नहीं लगाया तो इसको भी वेस्ट कहा जायेगा।

18.12.91

खज़ाना है लेकिन टाइम पर अगर कार्य में नहीं लगा सके तो होते हुए भी क्या करेंगे? जो समय पर हर खज़ाने को काम में लगाता है उसका खज़ाना सदा और बढ़ता जाता है। तो चेक करो कि खज़ाना बढ़ता जाता है कि सिर्फ यही सोच करके खुश हो कि बहुत खज़ाने हैं। फिर ऐसे कभी नहीं कहो कि चाहते तो नहीं थे

लेकिन हो गया। ज्ञानी की विशेषता है - पहले सोचे फिर कर्म करे। ज्ञानी-योगी तू आत्मा को समय प्रमाण टच होता है और वह फिर कैच करके प्रेक्टिकल में लाता है। एक सेकेण्ड भी पीछे सोचा तो ज्ञानी तू आत्मा नहीं कहेंगे।

31.12.91

सदा बाप की ब्लैसिंग स्वत: ही प्राप्त होती रहे - उसकी विधि क्या है? ब्लैसिंग प्राप्त करने के लिए हर समय, हर कर्म में बैलेन्स रखो। जिस समय कर्म और योग दोनों का बैलन्स होता है तो क्या अनुभव होता है? ब्लैसिंग मिलती है ना। ऐसे ही याद और सेवा दोनों का बैलेन्स है तो सेवा में सफलता की ब्लैसिंग मिलती है। अगर याद साधारण है और सेवा बहुत करते हैं तो ब्लैसिंग कम होने से सफलता कम मिलती है। तो हर समय अपने कर्म-योग का बैलेन्स चेक करो। दुनिया वाले तो यह समझते हैं कि कर्म ही सब कुछ है लेकिन बापदादा कहते हैं कि कर्म अलग नहीं, कर्म और योग दोनों साथ-साथ हैं। ऐसे कर्मयोगी कैसा भी कर्म होगा उसमें सहज सफलता प्राप्त करेंगे। चाहे स्थूल कर्म करते हो, चाहे अलौकिक करते हो। क्योंकि योग का अर्थ ही है मन-बुद्धि की एकाग्रता। तो जहाँ एकाग्रता होगी वहाँ कार्य की सफलता बंधी हुई है। अगर मन और बुद्धि एकाग्र नहीं हैं अर्थात् कर्म में योग नहीं है तो कर्म करने में मेहनत भी ज्यादा, समय भी ज्यादा और सफलता बहुत कम। कर्मयोगी आत्मा को सर्व प्रकार की मदद स्वत: ही बाप द्वारा मिलती है। ऐसे कभी नहीं सोचो कि इस काम में बहुत बिज़ी थे इसलिए योग भूल गया। ऐसे टाइम पर ही योग आवश्यक है। अगर कोई बीमार कहे कि बीमारी बहुत बड़ी है इसीलिए दवाई नहीं ले सकता तो क्या कहेंगे? बीमारी के समय दवाई चाहिए ना। तो जब कर्म में ऐसे बिजी हो, मुश्किल काम हो उस समय योग, मुश्किल कर्म को सहज करेगा। तो ऐसे नहीं सोचना कि यह काम पूरा करेंगे फिर योग लगायेंगे। कर्म के साथ-साथ योग को सदा साथ रखो। दिन-प्रतिदन समस्यायें, सरकमस्टांश और टाइट होने हैं, ऐसे समय पर कर्म और योग का बैलेन्स नहीं होगा तो बुद्धि जजमेन्ट ठीक नहीं कर सकती। इसलिए योग और

कर्म के बैलेन्स द्वारा अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाओ। समझा। फिर ऐसे नहीं कहना कि यह तो मालूम ही नहीं था - ऐसे भी होता है। यह पहले पता होता तो मैं योग ज्यादा कर लेता। लेकिन अभी से यह अभ्यास करो। जिस आत्मा को बापदादा की बैलेन्स के कारण ब्लैसिंग प्राप्त होती है उसकी निशानी क्या होगी? जो सदा ही बाप की ब्लैसिंग का अनुभव करते रहते हैं उसके संकल्प में भी कभी - यह क्या हुआ, यह क्यों हुआ, यह आश्चर्य की निशानी नहीं होगी। क्या होगा - यह क्वेश्चन भी नहीं उठेगा। सदैव इस निश्चय में पक्का होगा कि जो हो रहा है उसमें कल्याण छिपा हुआ है। क्योंकि कल्याणकारी युग है, कल्याणकारी बाप है और आप सबका काम भी विश्व कल्याण का है, कल्याण ही समाया हुआ है। बाहर से कितना भी कोई कर्म हलचल का दिखाई दे लेकिन उस हलचल में भी कोई गुप्त कल्याण समाया हुआ होता है और बाप के श्रीमत तरफ, बाप के सम्बन्ध तरफ अटेन्शन खिंचवाने का कल्याण होता है। ब्राह्मण लाइफ में क्या नहीं हो सकता? अकल्याण नहीं हो सकता। इतना निश्चय है या थोड़ा बहुत आयेगा तो हिल जायेंगे? समस्यायें आयें तो मिक्की माउस का खेल तो नहीं करेंगे? मिक्की माउस का खेल देखो भले लेकिन करना नहीं।

31.12.91

ऐसा भी समय आयेगा जो बापदादा उन्हों से ही मिलेंगे जो करने वाले हैं, जो बनने वाले हैं, सिर्फ कहने वाले नहीं। अभी तो सभी को एलाउ कर देते हैं, भावना वाले भी आ जाओ, ज्ञानी योगी तू आत्मा भी आ जाओ, लेकिन समय परिवर्तन होना ही है। इसलिए अपने ऊपर और दस गुना अन्डरलाइन करके कैसे हसेगा, ऐसे क्यों किया। आप पुरुषार्थ में स्ट्रिक्ट नहीं होते हो तो बाप को स्ट्रीक्ट होना ही पड़ेगा।

8.4.92

एक है-सेवा प्रति याद में बैठना और दूसरा है-स्व की कमजोरी को भरने

लिए याद में बैठना। दोनों में अन्तर है। जैसे-अभी भी विश्व पर अशान्ति का वायुमण्डल है तो सेवा प्रति संगठित रूप में विशेष याद के प्रोग्राम बनाते हो, वह अलग बात है। वह तो दाता बन देने के लिए करते हो। वह मांगने के लिए नहीं करते हो, औरों को देने के लिए करते हो। तो वह हुआ सेवा प्रति। लेकिन अपनी कमजोरी भरने के प्रति समय पर विशेष याद करते हो और वैसे अलबेलेपन की याद होती है। याद होती है, भूलते नहीं हो लेकिन अलबेलेपन की याद आती है- हम तो हैं ही बाबा के, और है ही कौन। लेकिन यथार्थ शक्तिशाली याद का प्रत्यक्ष-प्रमाण समय प्रमाण शक्ति हाज़िर हो जाए। कितना भी कोई कहे-मैं तो याद में रहती ही हूँ वा रहता ही हूँ, लेकिन याद का स्वरूप है सफलता। ऐसे नहीं-जिस समय याद में बैठते उस समय खुशी भी अनुभव होती, शक्ति भी अनुभव होती और जब कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते उस समय सदा सफलता नहीं होती। तो उसको कर्मयोगी नहीं कहा जायेगा। शक्तियां शस्त्र हैं और शस्त्र किस समय के लिए होता है? शस्त्र सदा समय पर काम में लाया जाता है।

20.12.92

जितना इस जीवन में 'समय' सफल करते हो, तो समय की सफलता के फलस्वरूप राज्य-भाग्य का फुल (पूरा) समय राज्य-अधिकारी बनते हो। हर श्वांस सफल करते हो, इसके फलस्वरूप अनेक जन्म सदा स्वस्थ रहते हो। कभी चलते-चलते श्वांस बन्द नहीं होगा, हार्ट फेल नहीं होगा। एक गुणा का हजार गुणा सफलता का अधिकार प्राप्त करते हो।

31.12.92

जिस समय मालिक बनना चाहिए उस समय बालक बन जायें तो भी हलचल। जैसा समय वैसा स्वरूप। कोई भी कार्य करते हो तो मालिक बनकर करते हो लेकिन जब कोई बड़े यह फाइनल करते हैं कि यह काम ऐसे नहीं, ऐसे हो-तो उस समय फिर बालक बन जाते हो। राय के समय मालिक और जब

मैजारिटी फाइनल करते हैं तो उस समय बालक; उस समय मालिकपन का नशा नहीं-मैंने जो सोचा वो राइट है। अभी-अभी मालिक, अभी-अभी बालक। तो जैसा समय वैसे स्वरूप में स्थित रहना-यह विधि आती है? इसको कहा जाता है आलराउन्ड पार्ट बजाने वाले।

क्योंकि इस ईश्वरीय मार्ग में कभी भी कोई ऐसे कह नहीं सकता कि मेरी बुद्धि का प्लैन बहुत अच्छा है, मेरी राय बहुत अच्छी है, मेरी राय क्यों नहीं मानी गई? 'मेरी' है? मेरी बुद्धि बहुत अच्छा काम करती है, मेरी बुद्धि को रिगार्ड नहीं दिया गया-तो 'मेरा' है? जो भी विशेषता है वह 'मेरी' है या 'बाप' की देन है? तो बाप की देन में मेरापन नहीं आ सकता।

31.12.92

भावना पहले संकल्प रूप में होती है, फिर बोल में आती है और उसके बाद फिर कर्म में आती है। जैसी भावना होगी वैसे व्यक्तियों के हर एक चलन वा बोल को उसी भाव से देखेंगे, सुनेंगे वा सम्बन्ध में आयेंगे। भावना से भाव भी बदलता है। अगर किसी आत्मा के प्रति किसी भी समय ईर्ष्या की भावना है अर्थात् अपनेपन की भावना नहीं है तो उस व्यक्ति के हर चलन, हर बोल से मिस-अन्डरस्टैण्ड (गलतफहमी) का भाव अनुभव होगा। वह अच्छा भी करेगा लेकिन आपकी भावना अच्छी न होने के कारण हर चलन और बोल से आपको बुरा भाव दिखाई देगा। तो 'भावना' भाव को बदलने वाली है। तो चेक करो कि हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ भाव रहता है? भाव को समझने में अन्तर पड़ने से 'मिस-अन्डरस्टैण्डिग' माया का दरवाजा बन जाती है। अव्यक्त स्थिति बनाने के लिए विशेष अपनी भावना और भाव को चेक करो तो सहज अव्यक्त स्थिति में विशेष अनुभव करते रहेंगे।

9.1.93

अचल रहने का साधन है—अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ।

यह भूलो नहीं। जिस समय कोई बात होती है उस समय फुलस्टॉप लगाओ। ऐसे नहीं कि याद था लेकिन उस समय भूल गया। गाड़ी में यदि समय पर ब्रेक न लगे तो फायदा होगा या नुकसान? तो समय पर फुलस्टॉप लगाओ। नथिंग न्यु—होना था, हो रहा है। और साक्षी होकर के देखकर आगे बढ़ते चलो। तो त्रिकालदर्शी अर्थात् आदि, मध्य, अन्त—तीनों को जान जैसा समय, वैसा अपने को सदा सेफ रख सको।

9.1.93

वर्तमान समय की विशेष माया है—व्यर्थ सोचना, व्यर्थ बोलना, व्यर्थ समय गँवाना।

माया आवे और उसको भगाओ—अभी वह समय गया। अभी सदा बिजी रहो। फिर कोई कम्प्लेन नहीं रहेगी। सबसे सहज साधन यह है कि बिजी रहो, इससे एक तो मायाजीत बन जायेंगे, दूसरा सदा खुशी में नाचते रहेंगे। क्योंकि प्राप्ति में खुशी होती है ना! तो और क्या चाहिए! खुशी चाहिए ना!

7.3.93

रूहानी वायब्रेशन्स फैलाने के लिए पहले अपने मन में, बुद्धि में व्यर्थ वायब्रेशन्स समाप्त करेंगे तब रूहानी वायब्रेशन फैला सकेंगे। किसी के भी प्रति अगर व्यर्थ वायब्रेशन्स धारण किये हुए हैं तो रूहानी वायब्रेशन्स नहीं फैला सकते। व्यर्थ वायब्रेशन रूहानी वायब्रेशन के आगे एक दीवार बन जाती है। चाहे सूर्य कितना भी प्रकाशमय हो, अगर सामने दीवार आ गई, बादल आ गये—तो सूर्य के प्रकाश को प्रज्ज्वलित होने नहीं देते। जो पक्का वायब्रेशन है—वो है दीवार और जो हल्के वायब्रेशन हैं—वो है हल्के बादल या काले बादल। वो रूहानी वायब्रेशन्स को आत्माओं तक पहुँचने नहीं देंगे। जैसे सागर में कोई जाल डालकर अनेक चीजों को एक ही बार इकट्ठा कर देते हैं या कहाँ भी अपनी जाल फैलाकर एक समय पर अनेकों को अपना बना लेते हैं, तो वायब्रेशन्स एक ही समय पर अनेक

आत्माओं को आकर्षित कर सकते हैं। वायब्रेशन्स वायुमण्डल बनाते हैं।

26.3.93

ये प्यार परमात्म प्यार है जो और कोई भी युग में प्राप्त हो नहीं सकता। जितना प्राप्त करना है उतना अभी करना है। अभी नहीं तो कभी भी नहीं हो सकता। और कितना थोड़ा सा समय यह परमात्म प्यार की प्राप्ति का है। तो थोड़े समय में बहुत अनुभव करना है। तो कर रहे हो? दुनिया वाले खुशी के लिये कितना समय, सम्पत्ति खर्च करते हैं और आपको सहज अविनाशी खुशी का ख़ज़ाना मिल गया।

2-2-1993

ड्रामा के हिसाब से वर्तमान समय बहुत तीव्र गति से जा रहा है, अति में जा रहा है। जो कल था उससे आज और अति में जा रहा है। यह तो जानते हो ना? जैसे समय अति में जा रहा है, ऐसे आप श्रेष्ठ आत्मायें भी पुरुषार्थ में अति तीव्र अर्थात् फ़ास्ट गति से जा रहे हो? कि कभी ढीले, कभी तेज़? ऐसे नहीं कि नीचे आकर फिर ऊपर जाओ। नीचे-ऊपर होने वाले की गति कभी एकरस फ़ास्ट नहीं हो सकती। तो सदा सर्व बातों में श्रेष्ठ वा तीव्र गति से उड़ने वाले हो। वैसे गायन है 'चढ़ती कला सर्व का भला' लेकिन अभी क्या कहेंगे? 'उड़ती कला, सर्व का भला'। अभी चढ़ती कला का समय भी समाप्त हुआ, अभी उड़ती कला का समय है। तो उड़ती कला के समय कोई चढ़ती कला से पहुँचना चाहे तो पहुँच सकेगा? नहीं। तो सदा उड़ती कला हो। उड़ती कला की निशानी है सदा डबल लाइट। डबल लाइट नहीं तो उड़ती कला हो नहीं सकती। थोड़ा भी बोझ नीचे ले आता है। जैसे प्लेन में जाते हैं, उड़ते हैं तो अगर मशीनरी में या पेट्रोल में ज़रा भी कचरा आ गया तो क्या हालत होती है? उड़ती कला से गिरती कला में आ जाता है। तो यहाँ भी अगर किसी भी प्रकार का बोझ है, चाहे अपने संस्कारों का, चाहे वायुमण्डल का, चाहे किसी आत्मा के सम्बन्ध-सम्पर्क का, कोई भी बोझ है तो

उड़ती कला से हलचल में आ जाता है। कहेंगे वैसे तो मैं ठीक हूँ लेकिन ये कारण है ना इसीलिये ये संस्कार का, व्यक्ति का, वायुमण्डल का बंधन है। लेकिन कारण कैसा भी हो, क्या भी हो, तीव्र पुरुषार्थी सभी बातों को ऐसे क्रॉस करते हैं जैसे कुछ है ही नहीं। मेहनत नहीं, मनोरंजन अनुभव करेंगे। तो ऐसी स्थिति को कहा जाता है उड़ती कला।

9-12-93

संसार में आकर्षित करने वाली दो ही बातें हैं—एक व्यक्ति का सम्बन्ध और दूसरा भिन्न-भिन्न वैभवों वा साधनों द्वारा प्राप्ति होना। तो समाई हुई आत्मा के लिये सर्व सम्बन्ध के रस का अनुभव एक बाप द्वारा सदा ही होता है। सर्व प्राप्तियों का आधार एक बाप है, न कि वैभव वा साधन। वैभव वा साधन रचना है और बाप रचता है। जिसका आधार रचता है उसको रचना द्वारा अल्पकाल के प्राप्ति का स्वप्न मात्र भी संकल्प नहीं हो सकता। बापदादा को कभी-कभी बच्चों की स्थिति को देख हंसी आती है। क्योंकि आश्चर्य तो कह नहीं सकते, फुलस्टॉप है। चलते-चलते बीज को छोड़ टाल-टालियों में आकर्षित हो जाते हैं। कोई आत्मा को आधार बना लेते हैं, कोई साधनों को आधार बना लेते हैं। क्योंकि बीज का रूप-रंग शोभनीक नहीं होता और टाल-टालियों का रूप-रंग बड़ा शोभनीक होता है। देहधारी के सम्बन्ध का आधार देह भान में सहज अनुभव होता है और बाप का आधार देह भान से परे होने से अनुभव होता है। देहभान में आने की आदत तो है ही। न चाहते भी हो सकते हैं। इसलिये देहधारी के सम्बन्ध का आधार वा सहारा सहज अनुभव होता है। समझते भी हैं कि ये ठीक नहीं है फिर भी सहारा बना लेते हैं। बापदादा देख-देख मुस्कराते रहते हैं।

स्थूल जीवन में भी स्थूल रूप का सहारा वा हर परिस्थिति में स्थूल रूप का सहयोग देने वाला सहारा बाप है। यह अनुभव और बढ़ाओ। ऐसे नहीं कि बाप तो है ही सूक्ष्म में सहयोग देने वाला। निराकार है, आकार है, साकार तो है नहीं, लेकिन हर सम्बन्ध को साकार रूप में अनुभव कर सकते हो। साकार स्वरूप में

साथ का अनुभव कर सकते हो। इस अनुभूति को गहराई से समझो और स्वयं को इसमें मज़बूत करो। तो व्यक्ति, वैभव व साधन अपने तरफ़ आकर्षित नहीं करेंगे। साधनों को निमित्त मात्र कार्य में लाना वा साक्षी हो सेवा प्रति कार्य में लगाना—ऐसी अनुभूति को बढ़ाओ। सहारा नहीं बनाओ, निमित्त मात्र हो। इसको कहा जाता है स्नेह में समाई हुई समान आत्मा।

16-12-93

कभी कोई ऐसी परिस्थिति आ जाए वा ऐसी कोई परीक्षा आ जाए तो मूंझते हो?(थोड़े टाइम के लिए) और उस थोड़े टाइम में अगर आपको काल आ जाए तो फिर क्या होगा? अकाले मृत्यु का तो समय है ना। तो थोड़ा समय भी अगर मौज के बजाए मूंझते हैं और उस समय अन्तिम घड़ी हो जाए तो अन्त मति सो गति क्या होगी?

ऐसे नहीं सोचो कि थोड़ा समय होता है लेकिन थोड़ा समय भी, एक सेकण्ड भी धोखा दे सकता है। वैसे सोचते हैं ज्यादा टाइम नहीं चलता, ऐसा दो-चार मिनट चलता है लेकिन एक सेकण्ड भी धोखा देने वाला हो सकता है तो मिनिट की तो बात ही नहीं सोचो। क्योंकि सबसे वैल्युएबुल आत्मायें हो, अमूल्य हो। अमूल्य आत्माओं का कोई दुनिया वालों से मूल्य नहीं कर सकते। दुनिया वाले तो आप सबको साधारण समझेंगे। लेकिन आप साधारण नहीं हो, विशेष आत्मायें हो।

16-12-93

विशेष आत्मा का अर्थ ही है जो भी कर्म करे, जो भी संकल्प करे, जो भी बोल बोले वो हर बोल और हर संकल्प विशेष हैं, साधारण नहीं हो। समय भी साधारण रीति से नहीं जाये। हर सेकेण्ड और हर संकल्प विशेष हो। इसको कहा जाता है विशेष आत्मा। तो विशेष करते-करते साधारण नहीं हो जाये—ये चेक करो। कई ऐसे सोचते हैं कि कोई ग़लती नहीं की, कोई पाप कर्म नहीं किया, कोई

वाणी से भी ऐसा उल्टा-सुल्टा शब्द नहीं बोला, लेकिन भविष्य और वर्तमान श्रेष्ठ बनाया? बुरा नहीं किया लेकिन अच्छा किया? सिर्फ़ ये नहीं चेक करो कि बुरा नहीं किया, लेकिन बुरे की जगह पर अच्छे ते अच्छा किया या साधारण हो गया ? तो ऐसे साधारणता नहीं हो, श्रेष्ठता हो। नुकसान नहीं हुआ, लेकिन जमा हुआ? क्योंकि जमा का समय तो अभी है ना। अभी का जमा किया हुआ भविष्य अनेक जन्म खाते रहेंगे। तो जितना जमा होगा उतना ही खायेंगे ना। अगर कम जमा किया तो कम खाना पड़ेगा अर्थात् प्रालब्ध कम होगी।

16-12-93

मैजारिटी की रिज़ल्ट देखते हुए क्या दिखाई देता है? कि ज्ञान बहुत है, योग की विधि के भी विधाता बन गये, धारणा के विषय पर वर्णन करने में भी बहुत होशियार हैं और सेवा में एक-दो से आगे हैं, बाकी क्या है? ज्ञाता तो नम्बरवन हो गये हैं, सिर्फ़ एक बात में अलबेले बन जाते हो, वो है – 'स्व को सेकण्ड में व्यर्थ सोचने, देखने, बोलने और करने में फुलस्टॉप लगाकर परिवर्तन करना।' समझते भी हो कि यही कमज़ोरी सुख की अनुभूति में अन्तर लाती है, शक्ति स्वरूप बनने में वा बाप समान बनने में विघ्न स्वरूप बनती है फिर भी क्या होता है? स्वयं को परिवर्तन नहीं कर सकते, फुलस्टॉप नहीं दे सकते। ठीक है, समझते हैं—का कॉमा (,) लगा देते हैं, वा दूसरों को देख आश्चर्य की निशानी (!) लगा देते हो कि ऐसा होता है क्या! ऐसे होना चाहिये! वा क्वेश्चन मार्क की क्यू (लाइन) लगा देते हो, क्यों की क्यू लगा देते हो। फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दु (.)। तो फुल स्टॉप तब लग सकता है जब बिन्दु स्वरूप बाप और बिन्दु स्वरूप आत्मा—दोनों की स्मृति हो। यह स्मृति फुल स्टॉप अर्थात बिन्दु लगाने में समर्थ बना देती है। उस समय कोई-कोई अन्दर सोचते भी हैं कि मुझे आत्मिक स्थिति में स्थित होना है लेकिन माया अपनी स्क्रीन द्वारा आत्मा के बजाय व्यक्ति वा बातें बार-बार सामने लाती है, जिससे आत्मा छिप जाती है और बार-बार व्यक्ति और बातें सामने स्पष्ट आती हैं। तो मूल कारण स्व के ऊपर कन्ट्रोल करने की कन्ट्रोलिंग पॉवर कम है।

दूसरों को कन्ट्रोल करना बहुत आता है लेकिन स्व पर कन्ट्रोल अर्थात् परिवर्तन शक्ति को कार्य में लगाना कम आता है।

23-12-93

हर कर्म में विजय का निश्चय और नशा हो। नशे का आधार है ही निश्चय। निश्चय कम तो नशा कम। इसीलिये कहते हैं निश्चयबुद्धि विजयी। तो फ़ाउन्डेशन क्या हुआ? निश्चय। निश्चय में कभी-कभी वाले नहीं बनना। नहीं तो अन्त में रिज़ल्ट के समय भी प्राप्ति कभी-कभी की होगी फिर पश्चाताप् करना पड़ेगा। अभी प्राप्ति है, फिर पश्चाताप् होगा। तो प्राप्ति के समय प्राप्ति करो, पश्चाताप् के समय प्राप्ति नहीं कर सकेंगे। कर लेंगे, हो जायेगा! नहीं, करना ही है-यह निश्चय हो। कर लेंगे.... दिलासे पर नहीं चलो। कर तो रहे हैं ना.. और क्या होगा... हो ही जायेंगे.... नहीं, अभी होना है। गें-गें नहीं, हैं। जब दूसरों को चैलेन्ज करते हो कि श्वास पर कोई भरोसा नहीं, औरों को ज्ञान देते हो ना तो पहले स्वयं को ज्ञान दो। कभी करने वाले हैं या अब करने वाले हैं? तो सदा विजय के अधिकारी आत्मायें हो। विजय जन्म-सिद्ध अधिकार है-इस स्मृति से उड़ते चलो। कुछ भी हो जाये, ये स्मृति में लाओ कि मैं सदा विजयी हूँ। क्या भी हो जाये, निश्चय अटल है, कोई टाल नहीं सकता।

10-1-94

जब भी अपने को अकेलापन अनुभव करो तो उस समय बिन्दु रूप नहीं याद करो। वह मुश्किल होगा, उससे बोर हो जायेंगे। लेकिन अपने ब्राह्मण जीवन की भिन्न-भिन्न समय की रमणीक अनुभव की कहानियाँ स्मृति में लाओ। अनुभव की कहानियों का किताब सभी के पास है। जब बोर हो जाते हैं तो नॉवेल्स पढ़ते हैं ना। तो आप अपने कहानियों का किताब खोलो और उसे पढ़ने में बिज़ी हो जाओ। अपने स्वमान की लिस्ट को सामने लाओ, अपने प्राप्तियों की लिस्ट को सामने लाओ। ब्राह्मण संसार के विचित्र प्रेक्टिकल कहानियों को स्मृति में लाओ।

जैसे अपने को चेंज करने के लिये समाचार पत्र पढ़ने का भी आधार लेते हैं तो ब्राह्मण संसार के कितने अलौकिक समाचार आदि से अब तक देखे हैं वा सुने हैं, समाचार पत्र भी आपके पास है। कइयों को पेपर पढ़ने के बिना चैन नहीं आता है। पेपर भी आपके पास है। पेपर पढ़ो। डान्स और साज़ तो जानते ही हो। बिना थकावट के डांस करते हो। मनमनाभव होना ही सबसे बड़ा मनोरंजन है। क्योंकि सर्व सम्बन्धों का रस वा अनुभूतियां करना ही मनमनाभव है। सिर्फ बाप के रूप में या विशेष तीन रूपों के सम्बन्ध से अनुभव नहीं है लेकिन सर्व सम्बन्धों के स्नेह का अनुभव कर सकते हो। सम्बन्धों से याद तो करते हो लेकिन फ़र्क क्या हो जाता है? एक है दिमाग से नॉलेज के आधार पर सम्बन्ध को याद करना और दूसरा है दिल से उस सम्बन्ध के स्नेह में, लॅव में लीन हो जाना। आधा तो करते हो बाकी आधा रह जाता है। इसलिये थोड़ा समय तो ठीक रहते हो, थोड़े समय के बाद सिर्फ दिमाग से ही सम्बन्ध को याद किया तो दिमाग में दूसरी बात आने से दिल बदल जाता है। फिर मेहनत करनी पड़ती है। फिर क्या कहते हो-हमने याद तो किया, बाबा मेरा कम्पैनियन है, लेकिन कम्पैनियन ने तोड़ तो निभाई नहीं! अनुभव तो कुछ हुआ नहीं! ये दिमाग से याद किया। दिल में स्नेह को समाया नहीं। जब भी कोई बात दिमाग में आती है तो वह निकलती भी जल्दी है। लेकिन दिल में समा जाती है तो उसको चाहे सारी दुनिया भी दिल से निकालना चाहे, तो भी नहीं निकाल सकती। तो सर्व सम्बन्धों को समय प्रमाण, जिस समय जिस सम्बन्ध की आवश्यकता है, आवश्यकता है फ्रैन्ड की और याद करो बाप को तो मज़ा नहीं आयेगा। इसलिये जिस समय, जिस सम्बन्ध की अनुभूति चाहिये, उस सम्बन्ध को स्नेह से, दिल से अनुभव करो। फिर मेहनत भी नहीं लगेगी और बोर भी नहीं होंगे, सदा मनोरंजन।

18-2-94

आगे चलकर जब अन्त समय आयेगा तो भी वो कमजोरी धोखा दे देगी। तो ऐसे नहीं सोचना कि थोड़ी सी कमजोरी है, एक ही कमजोरी है, बाकी

तो बहुत अच्छा हूँ, अच्छी हूँ! एक कमजोरी भी धोखा दे देगी। इसलिये कोई भी कमजोरी अपने अन्दर रहने नहीं दो। अगर स्वयं नहीं मिटा सकते हो तो कोई का सहयोग लो, जो शक्तिशाली आत्मायें हैं, उनका सहयोग लो। विशेष योग का प्रयोग करो। किसी भी विधि से कमजोरी को मिटाना ही है-यह दृढ़ संकल्प करो। यह भी नहीं सोचो कि आगे चलकर हो जायेगा। नहीं, अभी से निकाल दो। क्योंकि स्वयं पर और समय पर कोई भरोसा नहीं है। ऐसे नहीं सोचो कि आगे चलकर ये करेंगे, हो जायेगा। नहीं। आपका स्लोगन है 'अब नहीं तो कब नहीं' तो जो करना है वो अभी करना है। क्योंकि बाप सम्पन्न है और आपका बाप से प्यार है तो बाप जैसा बनना ही प्यार का प्रैक्टिकल स्वरूप है। जितना बाप से बहुत-बहुत प्यार है इतना ही पुरुषार्थ से भी बहुत-बहुत प्यार है? जितना बाप से प्यार के लिये फ़लक से कहते हो कि 100 परसेन्ट से भी ज्यादा प्यार है, ऐसे पुरुषार्थ के लिये भी कहो। सोचेंगे, करेंगे.. नहीं। सब कमज़ोरियां खत्म। गें, गें नहीं। शिवरात्रि मनाने आये हो तो कुछ तो बलि चढ़ेंगे ना। बापदादा सभी बच्चों को सम्पन्न देखना चाहते हैं। बाप का प्यार है इसलिए बच्चों की कमी अच्छी नहीं लगती। तो क्या याद रखेंगे कि सदा सम्पन्न, सम्पूर्ण रहना ही है कि थोड़ी-थोड़ी कम्पलेन करते रहेंगे? कम्पलीट! कम्पलेन खत्म। सम्पन्न बनना ही मनाना है।

9-3-94

सम्पत्ति भव भी है, सर्व सम्बन्ध भव भी है और सदा तन्दुरुस्त भव भी हैं। तीनों वरदान वरदाता बाप से मिले हुए हैं। तो वरदानों को समय पर कार्य में लगाओ।

अगर वरदानों को समय पर काम में नहीं लगाया तो वह वरदान फल नहीं देता। वरदान तो अविनाशी बाप का है लेकिन वरदान को फलीभूत करना है। बीज तो है लेकिन उससे फल कितना निकालते हो, वह आपके हाथ में है। कोई सिर्फ वरदान के बीज को देखकरके खुश होते रहते हैं-बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, लेकिन फलदायक बनाओ। बार-बार स्मृति का पानी दो, वरदान के स्वरूप में

स्थित होने की धूप दो, फिर देखो वरदान सदा फलीभूत होता रहेगा, और वरदानों को भी साथ में लायेगा। वरदानों के फल स्वरूप बन जायेंगे। तो आज के त्रि-वरदान को फलीभूत करना और समय पर जरूर याद रखना। समय पर भूल जाते हैं, पीछे पढ़ते रहते हो कि हाँ, ये वरदान तो था! वरदानों को जितना समय पर कार्य में लगायेंगे उतना वरदान और श्रेष्ठ स्वरूप दिखाता रहेगा।

3-4-94

दृढ़ संकल्प करो तो दृढ़ता सफलता को अवश्य लाती है। कमजोर संकल्प नहीं उत्पन्न करो। उनको पालने में बहुत टाइम व्यर्थ जाता है। उत्पत्ति बहुत जल्दी होती है। एक सेकण्ड में सौ पैदा हो जाते हैं। और पालना करने में कितना समय लगता है! मिटाने में मेहनत भी लगती, समय भी लगता और बापदादा के वरदान व दुआओं से भी वंचित रह जाते। सर्व की शुभ भावनाओं की दुआओं से भी वंचित हो जाते हैं। शुद्ध संकल्प का बंधन, घेराव, ऐसा बांधो सबके लिये, चाहे कोई थोड़ा कमजोर भी हो, उनके लिये भी ये शुद्ध संकल्पों का घेराव एक छत्रछाया बन जाये, सेफ्टी का साधन बन जाये, किला बन जाये।

अभ्यास में युद्ध होगी, व्यर्थ संकल्प शुद्ध संकल्प को कट करेगा। जैसे कौरव-पाण्डव के तीर दिखाते हैं ना, तीर, तीर को रास्ते में ही ख़त्म कर देता है तो संकल्प, संकल्प को ख़त्म करने की कोशिश करता है, करेगा लेकिन दृढ़ संकल्प वाले का साथी बाप है। विजय का तिलक सदा है ही है। अब इसको इमर्ज करो तो व्यर्थ स्वत: ही मर्ज हो जायेगा। व्यर्थ को समय देते हो। कट नहीं करते हो लेकिन उसके रंग में रंग जाते हो। सेकण्ड से भी कम समय में कट करो। शुद्ध संकल्प से समाप्त करो। तो सर्व के शुभ संकल्पों का वायुमण्डल का घेराव कमाल करके दिखायेगा। पहले से ही यह नहीं सोचो कि होता तो है नहीं, करते तो बहुत हैं, सुनते तो बहुत हैं, अच्छा भी बहुत लगता है, लेकिन होता नहीं है। यह भी व्यर्थ वायुमण्डल कमजोर बनाता हैं। होना ही है - दृढ़ता रखो।

14-4-94

अगर बिन्दी के बजाय और कोई मात्रा लगाते हो वा लग जाती है, तो सोचो ज्ञान का ख़ज़ाना गया, शक्तियों का ख़ज़ाना गया, गुणों का ख़ज़ाना गया, संकल्प का ख़ज़ाना गया, इनर्जी गई, श्वास सफल के बजाय असफलता में गया, समय गया! कितना गया? लम्बी लिस्ट हो गई ना? तो ये कभी भी नहीं सोचो कि एक-दो सेकण्ड ही तो गया। लेकिन एक सेकण्ड में गँवाया कितना? एक सेकण्ड भी कितना भारी हो गया? हर समय अपने जमा का खाता बढ़ाते चलो।

14.12.94

जब भी 'मैं' शब्द यूज़ करते हो उस समय यही सोचो मैं आत्मा हूँ।

31.12.94

समय की सूचना बाप तो दे ही रहे हैं लेकिन प्रकृति भी दे रही है। प्रकृति भी चैलेन्ज कर रही है तो समय के प्रमाण आप लोग औरों को भी सूचना देते रहते हो। भाषणों में सबको कहते हो कि समय आ गया है, समय आ गया है। तो अपने को भी कहते हो या सिर्फ दूसरों को कहते हो? दूसरों को कहना तो सहज होता है ना? तो स्वयं भी ये चैलेन्ज स्मृति में लाओ। समय के प्रमाण अपने पुरुषार्थ की गति क्या है? बापदादा एक बात पर अन्दर ही अन्दर मुस्कराते रहते हैं। किस बात पर मुस्कराते हैं, जानते हो? एक तरफ मैजारिटी बच्चे कभी-कभी एक सेकण्ड ये सोचते हैं कि समय प्रमाण पुरुषार्थ में तीव्रता होनी चाहिये और दूसरे तरफ जब माया अपना प्रभाव डाल देती है तो दूसरे सेकण्ड ये सोचते हैं कि यह तो सब चलता ही है, ये तो महारथियों से भी परम्परा चला आता है। तो बापदादा क्या करेंगे? गुस्सा तो नहीं करेंगे ना! मुस्करायेंगे। और इसका विशेष कारण है कि समय प्रति समय पुरुषार्थ को बहुत सहज कर दिया है, इज़ी कर लिया है। स्वभाव को इज़ी नहीं करते, स्वभाव में टाइट होते हैं और पुरुषार्थ में इज़ी हो जाते हैं। फिर सोचते हैं सहज योग है ना! लेकिन जीवन में, पुरुषार्थ में इज़ी रहना-इसको सहज योग नहीं कहा जाता। क्योंकि इज़ी रहने से शक्तियाँ मर्ज हो जाती हैं, इमर्ज नहीं

होती। आप सभी अपने ब्राह्मण जीवन के आदि का समय याद करो। उस समय कैसा पुरुषार्थ रहा? इज़ी पुरुषार्थ रहा या अटेन्शन वाला पुरुषार्थ रहा? अटेन्शन वाला रहा, उमंग-उत्साह वाला रहा और अभी अलबेलेपन के डनलप के तकिये और बिस्तरे मिल गये हैं। साधनों ने आराम पसन्द ज्यादा बना दिया है। तो अपने आदि के पुरुषार्थ, आदि की सेवा और आदि के उमंग-उत्साह को चेक करो-

26.1.95

समय बदलता रहता है और बदलता रहेगा। दुनिया की हालतें नाज़ुक हो रही हैं और भी होंगी। होनी ही है। अभी सिर्फ एक स्थान पर अलग-अलग होती हैं, आखिर में सब तरफ इकट्ठी होगी। तो नाज़ुक समय तो आना ही है। समय नाज़ुक हो लेकिन आपकी नेचर नाज़ुक नहीं हो। कइयों की नेचर बहुत नाज़ुक होती है ना, थोड़ा-सा आवाज़ हुआ, थोड़ा-सा कुछ हुआ तो डिस्टर्ब हो गये। इसको कहते हैं नाज़ुक स्थिति, नाजुक नेचर। तो नाज़ुक नेचर नहीं हो। जैसा समय वैसा अपने को एडजस्ट कर सको। ये अभ्यास आगे चलकर आपको बहुत काम में आयेगा। क्योंकि हालतें सदा एक जैसी नहीं रहनी है। और फाइनल पेपर आपका नाज़ुक समय पर होना है। आराम के समय पर नहीं होना है। नाज़ुक समय पर होना है। तो जितना अभी से अपने को एडजस्ट करने की शक्ति होगी तो नाजुक समय पर पास विद् ऑनर हो सकेंगे। पेपर बहुत टाइम का नहीं है, पेपर तो बहुत थोड़े समय का है लेकिन चारों ओर की नाजुक परिस्थितियाँ, उनके बीच में पेपर देना है। इसलिये अपने को नेचर में भी शक्तिशाली बनाओ।

26.2.95

प्रैक्टिस एक सेकण्ड के लिये भी करो लेकिन अभ्यास करते जाओ, क्योंकि अन्तिम सर्टीफिकेट एक सेकण्ड के फुल स्टॉप लगाने पर ही मिलना है। सेकण्ड में विस्तार को समा ले, सार स्वरूप बन जाये। तो यह प्रैक्टिस जब भी चांस मिले, कर सकते हो तो करते रहो। ऐसे नहीं, योग में बैठेंगे तो फुल स्टॉप

लगेगा। हलचल में फुल स्टॉप। इतनी पॉवरफुल ब्रेक है? कि ब्रेक लगायेंगे यहाँ और ठहरेगी वहाँ! और समय पर फुल स्टॉप लगे, समय बीत जाने के बाद फुल स्टॉप लगाया तो उससे फायदा नहीं है। सोचा और हुआ। सोचते ही नहीं रहो कि मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ, आत्मा हूँ, मेरे को फुल स्टॉप लगाना है और कुछ नहीं सोचना है, यह सोचते भी टाइम लग जायेगा। ये सेकण्ड का फुल स्टॉप नहीं हुआ। ये अभ्यास स्वयं ही करो। कोई को कराने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि नये चाहे पुराने, सभी यह विधि तो जानते हैं ना! तो अभ्यास बहुत काल का चाहिये। उस समय समझो-नहीं, मैं फुल स्टॉप लगा दूँगी! नहीं लगेगा, यह पहले से ही समझना। उस समय , समय अनुसार कर लेंगे! नहीं, होगा ही नहीं। बहुत काल का अभ्यास काम में आयेगा। क्योंकि कनेक्शन है। यहाँ बहुतकाल का अभ्यास बहुतकाल का राज्य-भाग्य प्राप्त करायेगा।

7.3.95

अगर किससे क्रोध भी करना है तो पहले संकल्प में प्लैन बनता है-ऐसे करुँगा, ऐसे बोलूँगा, ये क्या समझता है.... प्लैन चलता है। फिर समय को भी उसमें यूज़ करते हैं। समय देखते रहेंगे कब आता है, कौन आता है....। तो संकल्प के खजाने के पीछे समय का खजाना भी वेस्ट जाता है। सम्बन्ध है। तो संकल्प को बचाने से समय को, बोल को बचाना स्वत: ही हो जायेगा।

25.3.95

कितने भी बिज़ी हो लेकिन बीच-बीच में एक सेकण्ड भी अशरीरी होने का अभ्यास अवश्य करो। इसके लिये कोई नहीं कह सकता-मैं बिज़ी हूँ। एक सेकण्ड निकालना ही है, अभ्यास करना ही है। अगर किसी से बातें भी कर रहे हो, किसके साथ कार्य कर रहे हो, तो उन्हों को भी एक सेकण्ड ये ड्रिल कराओ, क्योंकि समय प्रमाण ये अशरीरीपन का अनुभव, यह अभ्यास जिसको ज्यादा होगा वो नम्बर आगे ले लेगा। क्योंकि सुनाया कि समय समाप्त अचानक होना है।

अशरीरी होने का अभ्यास होगा तो फौरन ही समय की समाप्ति का वायब्रेशन आयेगा। इसलिये अभी से अभ्यास बढ़ाओ। ऐसे नहीं, अगले साल में डायमण्ड जुबली है तो अब नहीं करना है, पीछे करना है। जितना बहुत काल एड करेंगे उतना राज्य-भाग्य के प्राप्ति में भी नम्बर आगे लेंगे। अगर बीच-बीच में यह अभ्यास करेंगे तो स्वत: ही शक्तिशाली स्थिति सहज अनुभव करेंगे। ये छोटी-छोटी बातों में जो पुरुषार्थ करना पड़ता है वो सब सहज समाप्त हो जायेगा।

6-4-95

कोई व्यर्थ वा विकारी स्वप्न, लगाव का स्वप्न आता है तो अवश्य सोने के समय आप अलबेलेपन में सोये। कई कहते हैं कि सारे दिन में मेरा कोई संकल्प तो चला ही नहीं, कुछ हुआ ही नहीं फिर भी स्वप्न आ गया। तो चेक करो-सोने समय बापदादा को सारे दिन का पोतामेल देकर, खाली बुद्धि हो करके नींद की? ऐसे नहीं कि थके हुए आये और बिस्तर पर गये और गये -ये अलबेलापन है। चाहे विकर्म नहीं किया और संकल्प भी नहीं किया लेकिन ये अलबेलेपन की सज़ा है। क्योंकि बाप का फरमान है कि सोते समय सदा अपने बुद्धि को क्लीयर करो, चाहे अच्छा, चाहे बुरा, सब बाप के हवाले करो और अपने बुद्धि को खाली करो। दे दिया बाप को और बाप के साथ सो जाओ, अकेले नहीं।

16.11.95

जो दूसरे को देखने में समय लगायेगा उसको अपने को देखने का समय कहाँ मिलेगा? बातें तो बहुत होती हैं ना, और जो बातें होती हैं वो देखने में भी आती हैं, सुनने में भी आती हैं, जितना बड़ा संगठन उतनी बड़ी बातें होती हैं। ये बातें क्यों होती हैं? कई सोचते हैं यह बातें होनी नहीं चाहिए। नहीं होनी चाहिये वो ठीक है लेकिन जिसके लिए आप समझ रहे हो नहीं होनी चाहिए, उसमें समय क्यों दिया? और ये बातें ही तो पेपर हैं। जितनी बड़ी पढ़ाई उतने बड़े पेपर भी होते हैं। यह वायुमण्डल बनना - यह सबके लिए पेपर भी है कि परमत या परदर्शन या

परचिन्तन में कहाँ तक अपने को सेफ रखते हैं? दो बातें अलग हैं। एक है जिम्मेवारी, जिसके कारण सुनना भी पड़ता है, देखना भी पड़ता है। तो उसमें कल्याण की भावना से सुनना और देखना। जिम्मेवारी है, कल्याण की भावना है, वो ठीक है। लेकिन अपनी अवस्था को हलचल में लाकर देखना, सुनना या सोचना - यह रांग है। अगर आप अपने को जिम्मेवार समझते हो तो जिम्मेवारी के पहले अपनी ब्रेक को पॉवरफुल बनाओ।

25.11.95

समय को, संकल्प को बचाओ, जितना अभी बचत करेंगे, जमा करेंगे तो सारा कल्प उसी प्रमाण राज्य भी करेंगे और पूज्य भी बनेंगे। चाहे द्वापर से आप साकार रूप में तो गिरती कला में आते हो लेकिन आपका जमा किया हुआ खाता आपके जड़ चित्रों की पूजा कराता है। तो सब ये नोट करना तो मालूम पड़ जायेगा कि व्यर्थ वा साधारण समय कितना होता है?

मानो आपका आज के दिन जमा का खाता बहुत कम हुआ तो कम देख करके दिलशिकस्त नहीं होना। और ही समझो कि अभी भी हमको चांस है जमा करने का। अपने को उमंग-उत्साह में लाओ। अपने आपसे रेस करो, दूसरे से नहीं। अपने आपसे रेस करो कि आज अगर 8 घण्टे जमा हुए तो कल 10 घण्टे हो। दिलशिकस्त नहीं होना। क्योंकि अभी फिर भी जमा करने का समय है। अभी टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है। फाइनल रिजल्ट का टाइम अभी एनाउन्स नहीं हुआ है।

16-2-96

ड्रिल को दिन में जितना बार ज्यादा कर सको उतना करते रहना। चाहे एक मिनट करो। तीन मिनट, दो मिनट का टाइम न भी हो एक मिनट, आधा मिनट यह अभ्यास करने से लास्ट समय अशरीरी बनने में बहुत मदद मिलेगी।

27-2-96

अभी-अभी एक सेकण्ड में न्यारे और बाप के प्यारे बन जाओ। पावरफुल अभ्यास करो बस मैं हूँ ही न्यारी। यह कर्मेन्द्रियां हमारी साथी हैं, कर्म की साथी हैं लेकिन मैं न्यारा और प्यारा हूँ। अभी एक सेकण्ड में अभ्यास दोहराओ। (ड्रिल) सहज लगता है कि मुश्किल है? सहज है तो सारे दिन में कर्म के समय यह स्मृति इमर्ज करो, तो कर्मातीत स्थिति का अनुभव सहज करेंगे।

10.3.96

समय समीप है तो समय की समीपता के अनुसार अब कौन सी लहर होनी चाहिए? (वैराग्य की) कौन सा वैराग्य - हद का या बेहद का? जितना सेवा का उमंग-उत्साह है, उतना समय की आवश्यकता प्रमाण स्व-स्थिति में बेहद का वैराग्य कहाँ तक है? क्योंकि आपके सेवा की सफ़लता है जल्दी से जल्दी प्रजा तैयार हो जाए। इसलिए सेवा करते हो ना? तो जब तक आप निमित्त आत्माओं में बेहद की वैराग्य वृत्ति नहीं है, तो अन्य आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति नहीं आ सकती और जब तक वैराग्य वृत्ति नहीं होगी तो जो चाहते हो कि बाप का परिचय सबको मिले, वह नहीं मिल सकता। बेहद का वैराग्य सदाकाल का वैराग्य है। अगर समय प्रमाण वा सरकमस्टांश प्रमाण वैराग्य आता है तो समय नम्बरवन हो गया और आप नम्बर दो हो गये। परिस्थिति या समय ने वैराग्य दिलाया। परिस्थिति खत्म, समय पास हो गया तो वैराग्य पास हो गया। तो उसको क्या कहेंगे - बेहद का वैराग्य या हद का? तो अभी बेहद का वैराग्य चाहिए। अगर वैराग्य खण्डित हो जाता है तो उसका मुख्य कारण है - देह-भान। जब तक देह-भान का वैराग्य नहीं है तब तक कोई भी बात का वैराग्य सदाकाल नहीं होता है, अल्पकाल का होता है। सम्बन्ध से वैराग्य - यह बड़ी बात नहीं है, वह तो दुनिया में भी कईयों को दिल से वैराग्य आ जाता है लेकिन यहाँ देह-भान के जो भिन्न-भिन्न रूप हैं, उन भिन्न-भिन्न रूपों को तो जानते हो ना? कितने देह-भान के रूप हैं, उसका विस्तार तो जानते हो लेकिन इस अनेक देह-भान के रूपों को जानकर, बेहद के वैराग्य में रहना।

3.4.96

ऐसे नहीं सोचना कि अभी कुछ समय तो पड़ा है, इतने में विनाश तो होना नहीं है, यह नहीं सोचना। विनाश होना है अचानक। पूछकर नहीं आयेगा कि हाँ तैयार हो! सब अचानक होना है। आप लोग भी ब्राह्मण कैसे बनें? अचानक ही सन्देश मिला, प्रदर्शनी देखी, सम्पर्क-सम्बन्ध हुआ बदल गये। क्या सोचा था कि इस तारीख को ब्राह्मण बनेंगे? अचानक हो गया ना! तो परिवर्तन भी अचानक होना है। आपको पहले माया और ही अलबेला बनायेगी, सोचेंगे हमने तो दो हजार सोचा था - वह भी पूरा हो गया, अभी तो थोड़ा रेस्ट कर लो। पहले माया अपना जादू फैलायेगी, अलबेला बनायेगी। किसी भी बात में, चाहे सेवा में, चाहे योग में, चाहे धारणा में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में यह तो चलता ही है, यह तो होता ही है ...., ऐसे पहले माया अलबेला बनाने की कोशिश करेगी। फिर अचानक विनाश होगा, फिर नहीं कहना कि बापदादा ने सुनाया ही नहीं, ऐसा भी होना है क्या! इसलिए पहले ही सुना देते हैं - अलबेले कभी भी किसी भी बात में नहीं बनना। चार ही सबजेक्ट में अलर्ट, अभी भी कुछ हो जाए तो अलर्ट। उस समय नहीं कहना बापदादा अभी आओ, अभी साथ निभाओ, अभी थोड़ी शक्ति दे दो, उस समय नहीं देंगे। अभी जितनी शक्ति चाहिए, जैसी चाहिए उतनी जमा कर लो। सबको खुली छुट्टी है, खुले भण्डार हैं, जितनी शक्ति चाहिए, जो शक्ति चाहिए ले लो। पेपर के समय टीचर वा प्रिन्सीपाल मदद नहीं करता।

23-2-97

'लेकिन' ही विघ्न डाल देता है। 'लेकिन' शब्द समाप्त होना अर्थात् बाप समान समीप आना और बाप के समीप आना अर्थात् समय को समीप लाना।

3-4-97

बापदादा वर्तमान समय सभी बच्चों को वर्तमान संगमयुग की प्राप्तियों के प्रालब्ध रूप में देखने चाहते हैं। पुरुषार्थ बहुत समय किया, अभी पुरुषार्थ स्वतः चले, मेहनत वाला पुरुषार्थ नहीं।

अभी की प्रालब्ध भविष्य में स्वत: ही प्राप्त होगी। जैसे भविष्य में सिर्फ प्रालब्ध है, पुरुषार्थ समाप्त है। ऐसे अभी बाकी रहे हुए समय में प्रालब्ध स्वरूप का विशेष अनुभव करो। जब प्रालब्ध कहते हैं तो पुरुषार्थ की ही प्रालब्ध होती है। पुरुषार्थ किया है, उस पुरुषार्थ अनुसार ही प्रालब्ध का अनुभव कर सकते हैं।

बाप से लिया है और लेते भी रहो लेकिन आत्माओं से लेने की भावना नहीं रखो - यह कर लें तो ऐसा हो। यह बदले तो मैं बदलूं, यह लेने की भावना है। ऐसा हो तो ऐसा हो। यह लेने की भावनायें हैं। ऐसा हो नहीं, ऐसा करके दिखाना है। हो जाए तो नहीं, लेकिन होना ही है और मुझे करना है। मुझे बायब्रेशन देना है। मुझे रहमदिल बनना है। मुझे गुणों का सहयोग देना है, मुझे शक्तियों का सहयोग देना है। मास्टर दाता बनो। लेना है तो एक बाप से लो। अगर और आत्माओं से भी मिलता है तो बाप का दिया हुआ ही मिलेगा। तो दाता बन फ्राकदिल बनो। देते रहो, देने आता है?

13-11-97

अब बेहद के सेवाधारी बनो। समय बेहद की सेवा में लगाओ। बेहद की सेवा में समय लगाने से समस्या सहज ही भाग जायेगी क्योंकि चाहे अज्ञानी आत्मायें हैं, चाहे ब्राह्मण आत्मायें हैं लेकिन अगर समस्या में समय लगाते हैं वा दूसरों का समय लेते हैं तो सिद्ध है कि वह कमजोर आत्मायें हैं, अपनी शक्ति नहीं है। जिसको शक्ति नहीं हो, पांव लंगड़ा हो और उसको आप कहो दौड़ लगाओ, तो लगायेगा या गिरेगा? तो समस्या के वश आत्मायें चाहे ब्राह्मण भी हैं लेकिन कमजोर हैं, शक्ति नहीं है, तो वह कहाँ से शक्ति लायें? बाप से डायरेक्ट शक्ति ले नहीं सकता क्योंकि कमजोर आत्मा है। तो क्या करेंगे? कमजोर आत्मा को दूसरे कोई का ब्लड देकर ताकत में लाते हैं, कोई शक्तिशाली इन्जेक्शन देकर ताकत में लाते हैं तो आप सबमें शक्तियां हैं। तो शक्ति का सहयोग दो, गुण का सहयोग दो। उन्हों में है ही नहीं, अपना दो। पहले भी कहा ना - दाता बनो।

प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना - यह है दुआयें देना और दुआयें लेना।

कैसा भी हो आपकी दिल से हर आत्मा के प्रति हर समय दुआयें निकलती रहें - इसका भी कल्याण हो। इसकी भी बुद्धि शान्त हो।

28-11-97

जो भी आपके पास है, अपनी जो प्रापर्टी है ना - समय , संकल्प, श्वांस वा तन-मन-धन सफल करो, व्यर्थ न गंवाओ, न आइवेल के लिए सम्भालकर रखो। संकल्प को भी सफल करो। एक-एक संकल्प - यह आपकी प्रापर्टी है। जैसे धन स्थूल प्रापर्टी है, वैसे सूक्ष्म प्रापर्टी है समय , श्वांस, संकल्प। एक संकल्प भी व्यर्थ नहीं जाये, सफल हो।

ज्ञान धन, शक्तियों का धन, गुणों का धन हर समय सफल करो।

मैंने किया, मेरी यह सेवा है, मेरा यह कार्य है। तो जमा करते समय , वह समझते हैं कि जमा कर रहे हैं लेकिन वह ऑटोमेटिक जमा के खाते से निकल, व्यर्थ के खाते में जमा हो जाता है। यह ऑटोमेटिक सूक्ष्म मशीनरी है। बाबा ने कराया, बाबा की सेवा है, मेरी सेवा नहीं है। मैंने किया, नहीं। वर्णन नहीं करो, मैंने यह किया, मैं यह करती हूँ, मैं यह करता हूँ...यह मैं-मैं नहीं। बाबा, बाबा बोलो तो पदमगुणा जमा होगा।

31-12-97

बापदादा ने कई बार यह इशारा दे दिया है कि समय प्रमाण अभी थोड़ा सा समय है सर्व खजाने जमा करने का। अगर इस समय में - समय का खजाना, संकल्प का खजाना, बोल का खजाना, ज्ञान धन का खजाना, योग की शक्तियों का खजाना, दिव्य जीवन के सर्व गुणों का खजाना जमा नहीं किया तो फिर ऐसा जमा करने का समय मिलना सहज नहीं होगा। सारे दिन में अपने इन एक-एक खजाने का एकाउण्ट चेक करो।

अभी समय के टू लेट की घण्टी नहीं बजी है, लेकिन बजने वाली है। दिन और डेट नहीं बतायेंगे। अचानक ही आउट होगा - टू लेट। फिर क्या करेंगे?

उस समय जमा करेंगे? कितना भी चाहो समय नहीं मिलेगा। इसलिए बापदादा कई बार इशारा दे रहा है - जमा करो-जमा करो-जमा करो।

31-1-98

जब बेगरी लाइफ थी, बेगरी लाइफ में सेन्टर खुले हैं, ऐसे आईवेल के समय इस सेना ने अपने तन-मन-धन से निमित्त बन के सेवास्थान स्थापन किये हैं। आईवेल के समय जो सहयोगी बनता है उनका आठ आना, आठ करोड़ बन जाते हैं। बापदादा को याद है - खुद बांधेली होते हुए भी एक कटोरी में आटा, एक कटोरी में चीनी, एक कटोरी में घी, ऐसे कटोरी-कटोरी करके लाती थी। तो सोचो कितने सच्ची दिल वाले रहे। अपने घर खर्चे से बापदादा के सेन्टर चलाये हैं, अपने पर्सनल जमा खाते से, अपने खर्चे से बचत करके सेन्टर स्थापन किये हैं, तो कितना भाग्य है इन्हों का! ऐसे समय पर सहयोगी आत्माओं को बापदादा भी नमस्ते कहते हैं।

30-3-98

संगम का सुख, संगमयुग की प्राप्तियां, संगमयुग का समय सुहाना लगता है ना! बहुत प्यारा लगता है। राज्य के समय से भी संगम का समय प्यारा लगता है ना? प्यारा है या जल्दी जाने चाहते हो? फिर पूछते क्यों हो कि बाबा विनाश कब होगा? सोचते हो ना - पता नहीं विनाश कब होगा? क्या होगा? हम कहाँ होंगे? बापदादा कहते हैं जहाँ भी होंगे - याद में होंगे, बाप के साथ होंगे। साकार में या आकार में साथ होंगे तो कुछ नहीं होगा। साकार में कहानी सुनाई है ना। बिल्ली के पूंगरे भट्ठी में होते हुए भी सेफ रहे ना! या जल गये? सब सेफ रहे। तो आप परमात्म बच्चे जो साथ होंगे वह सेफ रहेंगे। अगर और कहाँ बुद्धि होगी तो कुछ - न -कुछ सेक लगेगा, कुछ-न - कुछ प्रभाव होगा। साथ में कम्बाइन्ड होंगे, एक सेकण्ड भी अकेले नहीं होंगे तो सेफ रहेंगे।

शिव बाप और ब्रह्मा बाप दोनों हर समय आप सबको सहयोग देने के

लिए सदा हाज़िर हैं। आपने सोचा बाबा और सहयोग अनुभव करेंगे। अगर सेवा, सेवा, सेवा सिर्फ वही याद है, बाप को किनारे बैठ देखने के लिए अलग कर देते हो, तो बाप भी साक्षी होकर देखते हैं, देखें कहाँ तक अकेले करते हैं। फिर भी आने तो यहाँ ही हैं। तो साथ नहीं छोड़ो। अपने अधिकार और प्रेम की सूक्ष्म रस्सी से बांधकर रखो। ढीला छोड़ देते हो। स्नेह को ढीला कर देते हो, अधिकार को थोड़ा सा स्मृति से किनारा कर देते हो। तो ऐसे नहीं करना। जब सर्वशक्तिवान साथ का आफर कर रहा है तो ऐसी आफर सारे कल्प में मिलेगी?

1-3-99

समय आने पर दृढ़ संकल्प किया, तो वह बहुतकाल हुआ या अल्पकाल हुआ? किसमें गिनती होगा? अल्पकाल में होगा ना! तो अविनाशी बाप से वर्सा क्या लिया? अल्पकाल का। यह अच्छा लगता है? नहीं लगता है ना! तो बहुतकाल का अभ्यास चाहिए, कितना काल है वह नहीं सोचो, जितना बहुतकाल का अभ्यास होगा, उतना अन्त में भी धोखा नहीं खायेंगे। बहुतकाल का अभ्यास नहीं तो अभी के बहुतकाल के सुख, बहुतकाल की श्रेष्ठ स्थिति के अनुभव से भी वंचित हो जाते हैं। इसलिए क्या करना है? बहुतकाल करना है? अगर किसी के भी बुद्धि में डेट का इन्तजार हो तो इन्तजार नहीं करना, इन्तजाम करो। बहुतकाल का इन्तजाम करो। डेट को भी आपको लाना है। समय तो अभी भी एवररेडी है, कल भी हो सकता है लेकिन समय आपके लिए रुका हुआ है। आप सम्पन्न बनो तो समय का पर्दा अवश्य हटना ही है। आपके रोकने से रुका हुआ है। राज्य-अधिकारी तो तैयार हो ना? तख्त तो खाली नहीं रहना चाहिए ना! क्या अकेला विश्वराजन तख्त पर बैठेगा! इससे शोभा होगी क्या? रॉयल फैमिली चाहिए, प्रजा चाहिए, सब चाहिए।

1-3-99

बापदादा आज बच्चों की कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर चेक कर रहे

थे, तो बताओ क्या देखा होगा? हर एक जानते तो हैं। बापदादा ने देखा कि अभी भी अखण्ड राज्य अधिकार सभी का नहीं है। अखण्ड, बीच-बीच में खण्डित होता है। क्यों? सदा स्वराज्य के बदले पर राज्य भी खण्डित कर देता है। पर राज्य की निशानी है - यह कर्मेन्द्रियां पर-अधीन हो जाती हैं। माया के राज्य का प्रभाव अर्थात् पर-अधीन बनाना। वर्तमान समय मैनारिटी तो ठीक हैं लेकिन मैजारिटी माया के वर्तमान समय के विशेष प्रभाव में आ जाते हैं। जो आदि अनादि संस्कार हैं उसके बीच-बीच में मध्य के अर्थात् द्वापर से अभी अन्त तक के संस्कार के प्रभाव में आ जाते हैं। स्व के संस्कार ही स्वराज्य को खण्डित कर देते हैं। उसमें भी विशेष संस्कार व्यर्थ सोचना, व्यर्थ समय गँवाना और व्यर्थ बोल-चाल में आना, चाहे सुनना, चाहे सुनाना। एक तरफ व्यर्थ के संस्कार, दूसरे तरफ अलबेलेपन के संस्कार भिन्न-भिन्न रॉयल रूप में स्वराज्य को खण्डित कर देते हैं। कई बच्चे कहते हैं कि समय समीप आ रहा है लेकिन जो संस्कार शुरू में इमर्ज नहीं थे, वह अभी कहाँ-कहाँ इमर्ज हो रहे हैं।

15-3-99

बापदादा पहली सेवा यही बताते हैं कि अभी समय अनुसार सभी बच्चे वानप्रस्थ अवस्था में हैं, तो वानप्रस्थी अपने समय , साधन सभी बच्चों को देकर स्वयं वानप्रस्थ होते हैं। तो आप सभी भी अपने समय का खजाना, श्रेष्ठ संकल्प का खजाना अभी औरों के प्रति लगाओ। अपने प्रति समय , संकल्प कम लगाओ। औरों के प्रति लगाने से स्वयं भी उस सेवा का प्रत्यक्षफल खाने के निमित्त बन जायेंगे। मन्सा सेवा, वाचा सेवा और सबसे ज्यादा - चाहे ब्राह्मण, चाहे और जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं उन्हों को कुछ न कुछ मास्टर दाता बनके देते जाओ। नि:स्वार्थ बन खुशी दो, शान्ति दो, आनंद की अनुभूति कराओ, प्रेम की अनुभूति कराओ। देना है और देना माना स्वत: ही लेना। जो भी जिस समय , जिस रूप में सम्बन्ध-सम्पर्क में आये कुछ लेकर जाये। आप मास्टर दाता के पास आकर खाली नहीं जाये। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - चलते-फिरते भी अगर कोई भी बच्चा

सामने आया तो कुछ न कुछ अनुभूति के बिना खाली नहीं जाता। यह चेक करो जो भी आया, मिला, कुछ दिया वा खाली गया?

30.3.99

जो छोटी-छोटी बातें हैं ना - जिसमें समय लगता है, मेहनत लगती है, दिलशिकस्त बनते हैं वह सब ऐसे लगेगा जैसे ज्वालामुखी हाइएस्ट स्टेज और उसके आगे यह समय देना, मेहनत करना, एक गुड़ियों का खेल अनुभव होगा। स्वत: ही सहज ही सेफ हो जायेंगे। बापदादा ने कहा ना कि सबसे ज्यादा बापदादा को रहम तब पड़ता है जब देखते हैं कि मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चे और छोटी-छोटी बातों के लिए मेहनत करते हैं। **मोहब्बत ज्वालामुखी रूप की कम है तब मेहनत लगती है।** तो अभी मेहनत से मुक्त बनो, अलबेले नहीं बनना लेकिन मेहनत से मुक्त होना।

30.3.99

वर्तमान समय की क्या पुकार है? तो बापदादा देख रहे थे कि अभी के समय अनुसार हर समय , हर बच्चे को 'दातापन' की स्मृति और बढ़ानी है। चाहे स्व-उन्नति के प्रति दाता-पन का भाव, चाहे सर्व के प्रति स्नेह इमर्ज रूप में दिखाई दे। कोई कैसा भी हो, क्या भी हो, मुझे देना है। तो दाता सदा ही बेहद की वृत्ति वाला होगा, हद नहीं और दाता सदा सम्पन्न, भरपूर होगा। दाता सदा ही क्षमा का मास्टर सागर होगा। इस कारण जो हद के अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार वो इमर्ज नहीं होंगे, मर्ज होंगे। मुझे देना है। कोई दे, नहीं दे लेकिन मुझे दाता बनना है। किसी भी संस्कार के वश परवश आत्मा हो, उस आत्मा को मुझे सहयोग देना है। तो किसी का भी हद का संस्कार आपको प्रभावित नहीं करेगा। कोई मान दे, कोई नहीं दे, वह नहीं दे लेकिन मुझे देना है। ऐसे दातापन अभी इमर्ज चाहिए। मन में भावना तो है लेकिन..... लेकिन नहीं आवे। मुझे करना ही है। कोई ऐसी चलन वा बोल जो आपके काम का नहीं है, अच्छा नहीं लगता है, उसे लो ही नहीं। बुरी

चीज़ ली जाती है क्या? मन में धारण करना अर्थात् लेना। दिमाग तक भी नहीं। दिमाग में भी बात आ गई ना, वह भी नहीं। जब है ही बुरी चीज, अच्छी है नहीं तो दिमाग और दिल में लो नहीं यानी धारण नहीं करो। और ही लेने के बजाए शुभ भावना, शुभ कामना, दाता बन दो। लो नहीं; क्योंकि अभी समय के अनुसार अगर दिल और दिमाग खाली नहीं होगा तो निरन्तर सेवाधारी नहीं बन सकेंगे।

23-10-99

साधन को सेवा में यूज़ करना। यह बीच का समय है जिसमें साधन मिले हैं। आदि में भी कोई इतने साधन नहीं थे और अन्त में भी नहीं रहेंगे। यह अभी के लिए हैं। सेवा बढ़ाने के लिए हैं। लेकिन यह साधन हैं, साधना करने वाले आप हो। साधन के पीछे साधना कम नहीं हो। बाकी बापदादा खुश होते हैं। बच्चों की सीन भी देखते हैं। फटाफट काम कर रहे हैं। बापदादा आपके आफिस का भी चक्कर लगाते हैं। कैसे काम कर रहे हैं। बहुत बिजी रहते हैं ना! अच्छी तरह से आफिस चलती है ना! जैसे एक सेकण्ड में साधन यूज़ करते हो ऐसे ही बीच-बीच में कुछ समय साधना के लिए भी निकालो। सेकण्ड भी निकालो। अभी साधन पर हाथ है और अभी अभी एक सेकण्ड साधना, बीच-बीच में अभ्यास करो।

23-10-99

स्व-उन्नति या साधना बीच-बीच में न करने से थकावट का प्रभाव पड़ता है। बुद्धि भी थकती है, हाथ पांव भी थकता है और बीच-बीच में अगर साधना का समय निकालो तो जो थकावट है ना, वह दूर हो जाए।

23-10-99

अपने खजाने तो जानते हो ना! समय के खजाने को भी जानते हो कि इस संगमयुग का समय कितना श्रेष्ठ है, जो प्राप्ति चाहिए वह अधिकारी बन बाप से ले रहे हो। सर्व अधिकार प्राप्त कर लिया है ना? एक-एक श्रेष्ठ संकल्प कितना

बड़ा खजाना है, समय भी बड़ा खजाना है, संकल्प भी बड़ा खजाना है। सर्व शक्तियां बड़े से बड़ा खजाना है। एक-एक ज्ञान-रत्न कितना बड़ा खजाना है। हर एक गुण कितना बड़ा खजाना है। दुनिया वाले भी मानते हैं कि श्वांसों श्वांस याद से श्वांस सफल होते हैं। तो आप सबके श्वांस सफलता स्वरूप हैं, व्यर्थ नहीं। हर श्वांस में सफलता का अधिकार समाया हुआ है। बापदादा ने सभी बच्चों को सर्व खजाने एक जैसे ही दिये हैं। सर्व भी दिये हैं और समान दिये हैं। कोई को एक गुणा, कोई को दस गुणा, कोई को 100 गुणा... ऐसे नहीं दिया है। देने वाले दाता ने एक-एक बच्चे को सर्व खजाने ब्राह्मण बनते ही समान रूप में दिया है। लेकिन खजाने को कितना जमा करते हैं या गँवाते हैं, यह हर एक के ऊपर है। हर एक को चेक करना है कि हम सारे दिन में कितना जमा करते हैं या गँवाते हैं?

बापदादा ने पहले भी कहा है - रोज़ अमृतवेले अपने आपको तीन बिन्दियों की स्मृति का तिलक लगाओ तो एक खजाना भी व्यर्थ नहीं जायेगा। हर समय , हर खजाना जमा होता जायेगा। बापदादा ने सभी बच्चों के हर खजाने के जमा का चार्ट देखा। उसमें क्या देखा? अभी तक भी जमा का खाता जितना होना चाहिए उतना नहीं है। समय, संकल्प, बोल व्यर्थ भी जाता है। चलते-चलते कभी समय का महत्त्व इमर्ज रूप में कम होता है। अगर समय का महत्त्व सदा याद रहे, इमर्ज रहे तो समय को और ज्यादा सफल बना सकते हो। सारे दिन में साधारण रूप से समय चला जाता है। गलत नहीं लेकिन साधारण। ऐसे ही संकल्प भी बुरे नहीं चलते लेकिन व्यर्थ चले जाते हैं। एक घण्टे की चेकिंग करो, हर घण्टे में समय या संकल्प कितने साधारण जाते हैं? जमा नहीं होते हैं। फिर बापदादा इशारा भी देता है, तो बापदादा को भी दिलासे बहुत देते हैं। बाबा, ऐसे थोड़ा सा संकल्प है बस। बाकी नहीं, संकल्प में थोड़ा चलता है। सम्पूर्ण हो जायेंगे। ठीक हो जायेंगे। अभी अन्त थोड़ेही आया है, थोड़ा समय तो पड़ा है। समय पर सम्पन्न हो जायेंगे। लेकिन बापदादा ने बार-बार कह दिया है कि जमा बहुत समय का चाहिए। ऐसे नहीं जमा का खाता अन्त में सम्पन्न करेंगे, समय आने पर बन जायेंगे! बहुत समय का जमा हुआ बहुत समय चलता है।

अमृतवेले जब बैठते हैं, अच्छी स्थिति में बैठते हैं तो दिल ही दिल में बहुत वायदे करते हैं - यह करेंगे, यह करेंगे। कमाल करके दिखायेंगे... यह तो अच्छी बात है। श्रेष्ठ संकल्प करते हैं लेकिन बापदादा कहते हैं इन सब वायदों को कर्म में लाओ। सिर्फ वायदा नहीं करो लेकिन जो भी वायदे करते हो वह मन-वचन और कर्म में लाओ।

30-11-99

बाप ने सर्व सम्बन्धों का अनुभव कराया है। कहते भी हो कि बाप ही सर्व सम्बन्धी है। जब सर्व सम्बन्धी है तो जैसा समय वैसे सम्बन्ध को कार्य में क्यों नहीं लगाते! और यही सर्व सम्बन्ध का समय प्रति समय अनुभव करते रहो तो कम्पैनियन भी होगा, कम्पनी भी होगी। और कोई साथियों के तरफ मन और बुद्धि जा नहीं सकती। बापदादा आफर कर रहे हैं - **जब सर्व सम्बन्ध आफर कर रहे हैं तो सर्व सम्बन्धों का सुख लो। सम्बन्धों को कार्य में लगाओ।**

बापदादा जब देखते हैं - कोई-कोई बच्चे कोई-कोई समय अपने को अकेला वा थोड़ा सा नीरस अनुभव करते हैं तो बापदादा को रहम आता है कि ऐसी श्रेष्ठ कम्पनी होते, कम्पनी को कार्य में क्यों नहीं लगाते? फिर क्या कहते? व्हाई-व्हाई बापदादा ने कहा व्हाई नहीं कहो, जब यह शब्द आता है, व्हाई निगेटिव है और पॉजिटिव है 'फ्लाई', तो व्हाई-व्हाई कभी नहीं करना, फ्लाई याद रखो। बाप को साथ साथी बनाए फ्लाई करो तो बड़ा मजा आयेगा।

3-3-2000

इज़ी नेचर उसको कहा जाता है - जैसा समय , जैसा व्यक्ति, जैसा सरकमस्टांश उसको परखते हुए अपने को इज़ी कर देवे। इज़ी अर्थात् मिलनसार। टाइट नेचर बहुत टू-मच आफीशियल नहीं, आफीशियल रहना अच्छा है लेकिन टू-मच नहीं और समय पर जब समय ऐसा है, उस समय अगर कोई आफीशियल बन जाता है तो वह गुण के बजाए, उनकी विशेषता उस समय नहीं लगती। अपने को मोल्ड कर सके, मिलनसार हो सके, छोटा हो, बड़ा हो। बड़े से बड़ेपन में चल सके,

छोटे से छोटेपन में चल सके। साथियों में साथी बनके चल सके, बड़ों से रिगार्ड से चल सके।

30-3-2000

समय की समीपता के प्रमाण स्व-परिवर्तन की शक्ति ऐसी तीव्र होनी चाहिए जैसे कागज के ऊपर बिन्दी लगाओ तो कितने में लगती है? कितना समय लगता है? बिन्दी लगाने में कितना समय लगता है? सेकण्ड़ भी नहीं। ठीक है ना! तो ऐसी तीव्रगति है?

15-10-04

अभी समय प्रमाण अनुभवी मूर्त बन समय को, प्रकृति को, माया को चैलेन्ज करो - आओ, हम विजयी हैं। विजयी की चैलेन्ज करो।

30-11-2004

अभी समय की रफ्तार समान थोड़ा और रफ्तार को तेज करो क्योंकि अचानक कुछ भी हो सकता है। तो उल्हना नहीं रह जाए। बापदादा को यही है कि कोई भी आत्मा का उल्हना नहीं रह जाए कि हमें तो मालूम ही नहीं है।

15-12-2004

हे स्वराज्य अधिकारी बच्चे, अभी इस विशेष अभ्यास को चलते-फिरते चेक करो क्योंकि समय प्रमाण अभी अचानक के खेल बहुत देखेंगे। इसके लिए एकाग्रता की शक्ति आवश्यक है। एकाग्रता की शक्ति से दृढ़ता की शक्ति भी सहज आ जाती है और दृढ़ता सफलता स्वत: प्राप्त कराती है।

18-01-2005

समय का कोई भरोसा नहीं, कब भी क्या भी हो सकता है और अचानक होना

है। बापदादा को पता भी है कब होना है लेकिन बतायेंगे नहीं क्योंकि अचानक पेपर होना है। इसलिए जमा का खाता बहुत बढ़ाओ।

25-03-2005

बापदादा यही चाहते हैं कि संकल्प में दृढ़ता की कमी हो जाती है, हो जायेगा... चलता है, चलने दो, कौन बना है, और एक तो बहुत अच्छी बात सबको बाती है, बापदादा ने नोट किया है बातें, अपनी हिम्मत नहीं चलती ना, तो कहते हैं महारथी भी ऐसे करते हैं, हमने किया तो क्या हुआ? लेकिन बापदादा पूछते हैं कि क्या जिस समय महारथी गलती करता है, उस समय महारथी है? तो महारथी का नाम क्यों खराब करते हो? उस समय वह महारथी है ही नहीं, तो महारथी कहके अपने को कमजोर करना यह अपने को धोखा देना है।

15/02/2007

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि समय की रफ्तार बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। समय की गति को जानने वाले अपने को चेक करो कि मास्टर सर्वशक्तिवान हमारी गति तीव्र है? पुरुषार्थ तो सब कर रहे हैं लेकिन बापदादा क्या देखने चाहते हैं? हर बच्चा तीव्र पुरुषार्थी, हर सबजेक्ट में पास विद ऑनर हैं वा सिर्फ पास है? तीव्र पुरुषार्थी के लक्षण विशेष दो हैं - एक नष्टोमोहा, दूसरा - एराररेडी। सबसे पहले नष्टोमोहा, इस देहभान, देह-अभिमान से है तो और बातों में नष्टोमोहा होना कोई मुश्किल नहीं है। देह-भान की निशानी है वेस्ट, व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ समय, यह चेकिंग स्वयं ही अच्छी तरह से कर सकते हो। साधारण समय वह भी नष्टोमोहा होने नहीं देता। तो चेक करो हर सेकण्ड, हर संकल्प, हर कर्म सफल हुआ? क्योंकि संगमयुग पर विशेष बाप का वरदान है, सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। तो अधिकार सहज अनुभूति कराता है। और एवररेडी, एवररेडी का अर्थ है - मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में समय का ऑर्डर हो अचानक तो एवररेडी और अचानक ही होना है। जैसे अपनी दादी को

देखा अचानक एवररेडी। हर स्वभाव में, हर कार्य में इजी रहे हैं। सम्पर्क में इजी, स्वभाव में इजी, सेवा में इजी, सन्तुष्ट करने में इजी, सन्तुष्ट रहने में इजी। इसीलिए बापदादा समय की समीपता का बार-बार इशारा दे रहा है। स्व-पुरुषार्थ का समय बहुत थोड़ा है।

15/12/2007

हो जायेगा, देख लेंगे, कर ही लेंगे, पहुंच ही जायेंगे.... तो यह गें गें की भाषा नीचे गिरा देती है। तो चेक करो - कितना समय बीत गया, अभी समय की समीपता का और अचानक होने का इशारा तो बापदादा ने दे ही दिया है, दे रहा है नहीं, दे ही दिया है। ऐसे समय के लिए एवररेडी, अलर्ट आवश्यक है। अलर्ट रहने के लिए चेक करो - हमारा मन और बुद्धि सदा क्लीन और क्लियर है? क्लीन भी चाहिए, क्लियर भी चाहिए। इसके लिए समय पर विजय प्राप्त करने के लिए मन में, बुद्धि में कैचिंग पावर और टचिंग पावर दोनों बहुत आवश्यक हैं। ऐसे सरकमस्टांश आने हैं जो कहाँ दूर भी बैठे हो लेकिन क्लीन और क्लियर मन और बुद्धि होगा तो बाप का इशारा, डायरेक्शन, श्रीमत जो मिलनी है, वह कैच कर सकेंगे। टच होगा यह करना है, यह नहीं करना है। इसीलिए बापदादा ने पहले भी सुनाया है तो वर्तमान समय साइलेन्स की शक्ति अपने पास जितनी हो सके जमा करो। जब चाहो, जैसे चाहो वैसे मन और बुद्धि को कन्ट्रोल कर सको। व्यर्थ संकल्प स्वप्न में भी टच नहीं करे, ऐसा माइन्ड कन्ट्रोल चाहिए। इसीलिए कहावत है मन जीते जगतजीत। जैसे स्थूल कर्मेन्द्रिय हाथ है, जहाँ चाहो जब तक चाहो तब तक आर्डर से चला सकते हो। ऐसे मन और बुद्धि की कन्ट्रोलिंग पावर आत्मा में हर समय इमर्ज हो। ऐसे नहीं योग के समय अनुभव होता है लेकिन कर्म के समय, व्यवहार के समय, सम्बन्ध के समय अनुभव कम हो। अचानक पेपर आने हैं क्योंकि फाइनल रिजल्ट के पहले भी बीच-बीच में पेपर लिये जाते हैं।

05-03-08

कोई भी मुश्किल आये बोझ आवे तो बाप को देने आता है, तो बेफिकर बन

उड़ते रहेंगे। दिल में बोझ नहीं रखो। कई बच्चे कहते हैं एक मास हो गया है, 15 दिन हो गये हैं, चलता ही रहता है, और उस 15 दिन में अगर आपका काल आ जाए तो? उसी समय बोझ बाप को दे दो, देना आता है? देना जरूर सीखो। लेना तो आता है देना भी सीखो। तो क्या करेंगे? देना सीखा है? बापदादा आया ही किसलिए है? बच्चों का बोझ लेने के लिए।

31.12.2008

बापदादा का सभी आये हुए बच्चों को यही वरदान है कि आये, टूलेट के समय हैं लेकिन नये आये हुए बच्चों प्रति एक विशेष वरदान है कि कभी भी यह संकल्प नहीं करना कि हम आगे कैसे जा सकते हैं? टूलेट आने वालों को अभी तो लेट में आये हो टू लेट में नहीं आये हो। और अभी आप सबको विशेष बापदादा और निमित्त बने हुए ब्राह्मण परिवार के भाई बहिनों की विशेष सहयोग की भावना है कि अगर आप थोड़े समय को एक एक सेकण्ड को सफल करने का, क्योंकि थोड़े समय में बहुत पाना है, एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं गंवाना, कर्मयोगी बनके चलना, कर्म नहीं छोड़ना है लेकिन कर्म में योग एड करते, कर्म और योग का बैलेन्स रखना है। तो बैलेन्स रखने वाले को ब्लैसिंग एक्सट्रा मिलती है। तो जो भी लेट में आये हो, टूलेट अभी आगे लगाना है, आपको चांस है, थोड़े समय में बहुत पुरुषार्थ कर सकते हो। बापदादा वरदान देते हैं कि हिम्मते बच्चे मददे बाप है ही।

05.02.2009

बापदादा अभी क्या चाहते हैं? हर बच्चा, क्योंकि बापदादा कुछ समय से लेके वार्निंग दे ही रहे हैं समय की। हर बच्चे की पढ़ाई की रिजल्ट का समय अचानक आना है। इसके लिए सदा एवररेडी। साथ-साथ बापदादा यह भी इशारा दे रहे हैं कि अभी समय है उड़ती कला के तीव्र पुरुषार्थ का। चल रहे हैं नहीं, उड़ रहे हैं। साधारण रीति से अपनी दिनचर्या व्यतीत करना, अब वह समय कामन पुरुषार्थ का गया इसलिए बापदादा इशारा दे रहे हैं, हर सेकण्ड, हर संकल्प चेक करो।

मानो अपना तीव्र पुरुषार्थ न कर एक घण्टा साधारण पुरुषार्थ में रहे तो एक घण्टे में अचानक अगर फाइनल पेपर का टाइम आ गया तो अन्त मते सो गति, वह एक घण्टे का साधारण पुरुषार्थ कितना नुकसान कर देगा! इसलिए बापदादा हर बच्चे को, हर संकल्प, हर सेकण्ड समय के महत्व को, समय प्रति समय इशारा दे रहे हैं। हलचल के समय अचल रहने का पुरुषार्थ तीव्र पुरुषार्थी ही कर सकता। साधारण पुरुषार्थी एवररेडी बनने में समय लगा देगा और बापदादा ने कहा है कि सेकण्ड में बिन्दी अर्थात् फुलस्टॉप, अगर तीव्र पुरुषार्थ नहीं होगा तो क्या होता है? अनुभवी तो हैं। फुलस्टॉप के बजाए क्वेश्चन मार्क तो नहीं बन जायेगा!

30-11-09

बहुतों के चार्ट में बापदादा ने देखा है कि वेस्ट थॉट्स की लहर समय ले लेती है और वेस्ट की रफ्तार ऐसी तीव्र होती है जो साधारण संकल्प का एक घण्टा और फास्ट संकल्प का एक मिनट। इसलिए आज यह देख रहे थे कि सबकी प्रिय, बापदादा की प्रिय सन्तुष्ट आत्मायें कौन-कौन हैं? सन्तुष्ट आत्मा के संकल्प में भी यह क्यों, क्या की भाषा स्वप्न में भी नहीं आयेगी क्योंकि उस आत्मा को तीन विशेष बातें, तीन बिन्दियां, आत्मा, परमात्मा और ड्रामा, तीन ही समय पर कार्य में लगा सकते हैं क्योंकि ऐसे समय पर शक्तियों का खजाना आवश्यक है और मास्टर सर्वशक्तिवान वह हैं जो जिस समय जिस शक्ति को आर्डर करे वह हाज़िर हो जाए। चाहिए सहनशक्ति और आ जावे सामना करने की शक्ति, तो है शक्ति लेकिन उस समय काम की नहीं है। तो सर्व खजानों की चाबी है तीन बिन्दियां - आप, बाप और ड्रामा।

30-11-09

अभी कामन पुरुषार्थ का समय गया, अभी समय है तीव्र पुरुषार्थ का, तो आप सभी लेट आये हो लेकिन बापदादा के प्यारे हो। टू लेट के बजाए लेट आये हो, बापदादा खुश है कि फिर भी लक के समय पहुंच गये हो इसलिए जो भी आये हो,

बापदादा के प्यारे हो इसलिए चलना नहीं उड़ना। अभी चलेंगे ना तो नम्बर आगे नहीं ले सकेंगे इसीलिए उड़ती कला में चलना। चलना नहीं उड़ना।

31-12-09

वर्तमान समय समीप आने के कारण बापदादा अभी यही इशारा दे रहे हैं कि समय की समीपता अनुसार व्यर्थ संकल्प यह भी अपवित्रता की निशानी है। सारे दिन में यह भी चेक करो कि कोई भी व्यर्थ संकल्प अभिमान का वा अपमान का अपने तरफ खींचता तो नहीं है? क्योंकि चलते चलते अगर बाप की दी हुई विशेषताओं को अपनी विशेषता समझ अभिमान में आते हैं तो यह भी व्यर्थ संकल्प हुआ और मेरेपन के अशुभ संकल्प मैं कम नहीं हूँ, मैं भी सब जानता हूँ, यह मेरा संकल्प ही यथार्थ है, ऊंचा है, यह मेरेपन का अभिमान का संकल्प यह भी सूक्ष्म अपवित्रता का अंश है। तो अपने को चेक करो किसी भी प्रकार का अपवित्रता के व्यर्थ संकल्प का कोई अंश तो नहीं रह गया है? क्योंकि अभी पवित्र दुनिया की स्थापना का समय समीप लाने वाले आप परमात्म प्यारे बच्चे निमित्त हो। तो जो निमित्त आत्मायें हैं उन्हों का वायब्रेशन चारों ओर फैलता है। तो चेक करो किसी भी प्रकार का व्यर्थ संकल्प भी अपने तरफ खींचता तो नहीं है? क्योंकि अभी पवित्र दुनिया, पवित्र राज्य समीप आ रहा है। दुःख और अशान्ति चारों ओर भिन्न-भिन्न स्वरूप में बढ़ रही है। उसके लिए पवित्रता का वायब्रेशन आवश्यक है। दुःख अशान्ति का कारण अपवित्रता है।

15-3-10

व्यर्थ संकल्प अपने को भी नुकसान पहुंचाते हैं, समय बरबाद करते हैं, चेहरे पर सदा खुशनुमा, खुशकिस्मत का अनुभव कम कराते है। इसलिए अभी समाप्ति का समय समीप लाना है, किसको? आपको ना! जो समझते हैं कि अभी समाप्ति के समय को समीप लाना है, उसके लिए व्यर्थ को समाप्त करना ही है, करना है नहीं, करना ही है, स्वप्न में भी नहीं आवे, संकल्प तो छोड़ो लेकिन स्वप्न

में भी नहीं आये, ऐसे हिम्मत वाले बच्चे जो अपने को समझते हो।

15-3-10

अपने आपको चेक करो कि मैं सारे दिन में कितना समय परमात्म दिलतख्त पर रहता हूँ? क्योंकि यह दिलतख्त विश्व का राज्य प्राप्त कराने का आधार है। क्योंकि इस दिलतख्त के आधार से जितना समय आप दिलतख्त के अधिकारी रहते हो उतना ज्यादा समय भविष्य में राज्य घराने में अधिकारी बनते हो। तो चेक करना जबसे मैं ब्राह्मण बना कितना समय दिलतख्तनशीन बना, इसके आधार से तख्त पर तो नम्बरवार बैठेगे लेकिन सदा राज्य फैमिली में, घराने में अधिकारी बनेंगे। चेक किया है कभी?

24-10-10

कई बच्चे पूछते हैं हम भविष्य में कहाँ आयेंगे? क्या बनेंगे? तो बाप कहते हैं जितता समय से आये हो उतने समय में चेक करो कि मेरा पांव जितना समय हुआ है उतना ही समय झूलों में या तख्त पर रहा है? उतना ही भविष्य में रॉयल घराने में रहेंगे। रॉयल प्रजा में भी नहीं आयेंगे, रॉयल घराने में ही आयेंगे। तो यह हिसाब हर एक अपने आप अपना निकालो। दूसरे को नहीं देखना, अपना हिसाब निकालना। हर एक चाहता क्या है? रॉयल घराने, राज्य घराने में ही रहें। तो अब भी जितना समय मिलता है क्योंकि समाप्ति तो अचानक होनी है। तो जब तक समाप्ति हो तब तक अब भी चेक करेंगे तो जितना समय ज्यादा बाप की गोदी में, तख्त पर, झूले में रहेंगे उतना समय रॉयल फैमिली में रॉयल घराने में भाग्य प्राप्त करेंगे।

24-10-10

बापदादा ने पहले भी कहा है कि अभी धारणा में यह मुख्य धारणा का अटेन्शन दो, कोई भी बात हो गई तो चेक करो सेकण्ड में फुलस्टॉप दे सकते हो! कि चाहते

फुलस्टॉप हैं लेकिन हो जाता है क्वेश्चनमार्क? फुलस्टॉप नहीं, आधा फुलस्टॉप लगता है और मात्रा बन जाता है। आगे चलकर ऐसे सरकमस्टांश आयेंगे जो आपको सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाना पड़ेगा। उस समय क्वेश्चन मार्क, आश्चर्य मार्क को ठीक करने लगो, इतना समय नहीं मिलेगा। सेकण्ड में फुलस्टॉप की आवश्यकता होगी, इसका अभ्यास काफी समय पहले का चाहिए तब समय पर विजयी बन सकेंगे। तो हलचल के समय जब संस्कार, स्वभाव का पेपर हो, उसके लिए अभी से ऐसे समय में अभ्यास करो तो बहुत समय का अभ्यास आगे चल आपका बहुत सहयोगी बनेगा।

24-10-10

आज बापदादा मन को एकरस बनाने की एक्सरसाइज़ सिखा रहा है। सारे दिन में इन 5 रूपों की एक्सरसाइज़ करो और अनुभव करो जो रूप सोचो उसका मन में अनुभव करो। जैसे ज्योतिबिन्दू कहने से ही वह चमकता रूप सामने आ गया! ऐसे 5 ही रूप सामने लाओ और उस रूप का अनुभव करो। हर घण्टे में 5 सेकण्ड इस ड्रिल में लगाओ। अगर सेकण्ड नहीं तो 5 मिनट लगाओ। हर एक रूप सामने लाओ, अनुभव करो। मन को इस रूहानी एक्सरसाइज़ में बिजी करो तो मन एक्सरसाइज़ से सदा ठीक रहेगा। जैसे शरीर की एक्सरसाइज़ शरीर को तन्दरूस्त रखती है ऐसे यह एक्सरसाइज़ मन को शक्तिशाली रखेगा। एक सेकण्ड भी मन में उस रूप को लाओ, समझते हो सहज है ना यह, कि मुश्किल लगता है? मुश्किल नहीं लगेगा क्योकि यह एक्सरसाइज़ आपने अनेक बार की हुई है। हर कल्प की है। अपना ही रूप सामने लाना यह मुश्किल नहीं होता। एक-एक रूप के सामने आते ही हर रूप की विशेषता का अनुभव होगा। कभी-कभी कई बच्चे कहते हैं कि हम इन्हीं रूप में अनुभव करने चाहते हैं लेकिन मन दूसरे तरफ चला जाता। जितना समय जहाँ मन लगाने चाहते हैं उतना समय के बजाए व्यर्थ अयथार्थ संकल्प भी आ जाते हैं। कभी मन में अलबेलापन भी आ जाता, तो बापदादा हर घण्टे 5 सेकण्ड या 5 मिनट इस एक्सरसाइज में अनुभव कराने चाहते हैं। 5 मिनट करके

मन को इस तरफ चलाओ। चलना तो अच्छा होता है ना! फिर अपने काम में लग जाओ क्योंकि कार्य तो करना ही है। कार्य के बिना तो चलना नहीं है। यज्ञ सेवा, विश्व सेवा तो सभी कर रहे हो और करनी ही है। यह 5 मिनट की ड्रिल करने के बाद जो अपना कार्य है उसमें लग जाओ।

30-11-10

जो समझते हैं कि बाप ने कहा, बाप का कार्य है लक्ष्य देना और बच्चों का कार्य है जो बाप ने कहा वह करना ही है। इसकी भी एक डेट फिक्स करो, जैसे भक्त लोगों ने डेट फिक्स की है, शिवरात्रि, तो मनानी है। तो इसकी डेट भी फिक्स करो। अच्छा सबकी इकट्ठी नहीं हो तो पहले एक-एक अपने लिए तो डेट फिक्स कर सकते हैं ना! कर सकते हैं!

30-11-10

बापदादा कुछ समय से बच्चों को यह बता रहे हैं कि वर्तमान समय के प्रमाण कभी भी कुछ भी हो सकता है और कभी भी हो सकता है इसलिए हर एक बच्चे को अपने को यह अटेन्शन देना है कि एक सेकण्ड में बिन्दी लगाने चाहो तो लगा सकते हो? मानो कोई भी व्यर्थ संकल्प आ जाता तो बिन्दी द्वारा एक सेकण्ड में व्यर्थ को समाप्त कर सकते हो? इतना अभ्यास है? कि उस समय, समय के सरकमस्टांश प्रमाण पुरुषार्थ करके व्यर्थ को मिटाने की आवश्यकता पड़ेगी! लगाओ बिन्दी और लग जाए क्वेश्चन मार्क, क्यों, क्या, कैसे... उस समय यह सोचते रहे तो आने वाले समय में जो लक्ष्य है बाप के साथ चलेंगे, बाप तो सेकण्ड में, बिन्दू है और सेकण्ड भी बिन्दू है और फुलस्टाप भी बिन्दु ही है। इतना अभ्यास है? इसके लिए अब से इस अभ्यास के अभ्यासी होंगे तो बाप समान श्रीमत का हाथ में हाथ देते हुए अपने घर पहुंच जायेंगे।

अण्डरलाइन करो। दो बातें कौन सी? एक संकल्प का खजाना और दूसरा समय का खजाना, खजाने तो बहुत मिले हैं, ज्ञान का खजाना, शक्तियों का

खजाना, योग द्वारा जो भी मुख्य सम्पन्न बनने की युक्तियां हैं, सब प्राप्त कराई है। क्योंकि यह संगम का समय सारे कल्प में अमूल्य विशेष समय है, इस समय ही जितनी प्राप्ति करने चाहो उतनी कर सकते हो क्योंकि यह एक जन्म महान जन्म है। एक जन्म में अनेक जन्मों का प्रालब्ध बनाने का है। संगमयुग का समय एक सेकण्ड भी गंवाना नहीं है। एक सेकेण्ड का कनेक्शन अनेक जन्मों के साथ है। जमा करने का एक वर्ष अनेक वर्षों की प्राप्ति का है इसलिए इस समय की वैल्यु सेकण्ड या मिनट नहीं एक घण्टा भी महान है। एक सेकण्ड भी महान है। और संकल्प इस संगम के जन्म का विशेष आधार है। देखो, जो योग लगाते हो तो मनमनाभव।

कहते हो और यह आधार है फाउण्डेशन का। मन का काम ही है संकल्प करना, संकल्प द्वारा ही याद के यात्रा की अनुभूति करते हो। एक दो में भी खास भिन्न-भिन्न संकल्प देके अभ्यास कराते हो ना! तो सब चेक करो - समय की रफ्तार सारे दिन में चलते फिरते कर्म करते, सम्बन्ध में आते अमूल्य रूप से रहा? क्योंकि समय अमूल्य है। संकल्प सर्वशक्तिवान बनाता है।

15-12-10

बापदादा सम्मुख आने वाले बच्चों को और अपने स्थानों पर सुनने वाले, देखने वाले बच्चों को यही कहते अभी पुरुषार्थ को, संकल्प को और संगम के समय को अण्डरलाइन लगाओ। सभी बच्चे प्यार में तो मैजारिटी पास हैं।

15-12-10

बापदादा पूछते हैं कि सदा सेकण्ड में जो रूप अनुभव करने चाहो वह कर सकते हो? सेकण्ड में? 5 स्वरूप जो सुनाये थे, वह भी जब चाहो तो सेकण्ड में वह स्वरूप बन सकते हो? यह प्रैक्टिस करके अपने आपका मालूम पड़े कि मैं जो चाहूं उस स्थिति में सेकण्ड में रह सकता हूँ, या टाइम लगता है। बाकी बापदादा खुश है कि हाथ उठाने में, मैजारिटी हाथ उठाते हैं। अभी यह हाथ उठाया है लेकिन अभ्यास

करते-करते यह ऐसा हो जायेगा जैसे अभी द्वापर कलियुग के अभ्यास में देह अभिमान में आना नेचरल हो गया है ऐसे जिस स्वरूप में भी स्थित होने चाहो वह ऐसा ही इज़ी हो जाए क्योंकि समय ऐसा आने वाला है जिसमें आपको इस अभ्यास की आवश्यकता पड़ेगी।

31-12-10

अब तो आत्माओं को मन्सा द्वारा भी सेवा देने का समय है। चिल्लाते रहते, हे पूर्वज हमें थोड़ा सा सुख शान्ति की किरणें दे दो। तो हे पूर्वज दु:खियों की पुकार सुनाई देती है ना! बापदादा ने इशारा दे दिया है कि कुछ भी आपदा अचानक आनी है, इसके लिए सेकण्ड में फुलस्टाप। वह प्रैक्टिस भी कर रहे हो क्योंकि उस समय पुरुषार्थ का समय नहीं होगा, अभ्यास करें, लगाओ फुलस्टाप और हो जाए आश्चर्य की मात्रा, इसलिए पुरुषार्थ का समय अभी मिला हुआ है। उस समय प्रैक्टिकल करने का समय है, तो अभी से इस अभ्यास को कर भी रहे हैं, बापदादा रिजल्ट देखते हैं, अटेन्शन में है, कर भी रहे हैं लेकिन और भी अटेन्शन को अण्डरलाइन करो। देखो पुरुषार्थ कितना सहज है, मैं भी बिन्दी, लगाना भी बिन्दी है सिर्फ अटेन्शन देना है।

02-02-11

अभी-अभी 5 मिनट के लिए एक ड्रिल बापदादा सबको करा रहे हैं। अपने मन्सा शक्ति से सृष्टि में जो भी आपके भक्त वा अनेक दु:खी अशान्त आत्मायें आपको याद कर रही हैं, हे हमारे पूर्वज हमें थोड़े समय के लिए भी शान्ति दे दो, जरा सा सुख की अंचली दे दो, बचाओ ऐसी आत्माओं को यहाँ बैठे हुए इमर्ज करो, आवाज सुनने आ रहा है! बचाओ, बचाओ, तो ऐसी आत्माओं को अपने मन्सा शक्ति द्वारा सुख शान्ति की किरणें पहुंचाओ। यह मन्सा सेवा सारे दिन में बार-बार करते रहो क्योंकि बाप के साथ आप बच्चे भी विश्व सेवक हो। सारा दिन वाणी द्वारा जैसे सेवा के निमित्त बनते हो ऐसे ही

बीच-बीच में मन्सा सेवा का भी अभ्यास करते चलो। इसमें आपका अपना भी फायदा है क्योंकि अगर आपका मन सदा सेवा में बिजी रहेगा तो आपके पास जो बीच-बीच में माया फालतू संकल्प वा व्यर्थ संकल्प करती है, उससे बच जायेंगे। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

17-02-11

कोई न कोई सेवा में मन से शक्तियां देने की, मुख से वाणी की सेवा, कर्म में गुणों से सेवा, सम्बन्ध सम्पर्क में खुशी देने की सेवा, इस भिन्न-भिन्न सेवाओं में मन को बिजी रखो क्योंकि सारे विश्व में रिचेस्ट आत्मायें कौन सी हैं? आप ही हो ना! कितने खजाने मिले हैं? तो हर खजाने से सेवा करो। खजाने को जितना सेवा में लगायेंगे उतने खजाने बढ़ते जायेंगे इसलिए अभी जैसे स्व की सेवा का अटेन्शन देते हो, ऐसे अपने दु:खी आत्मायें, अपने भक्तों की मन्सा द्वारा किरणें देने की सेवा भी अटेन्शन देके सारे दिन में करो, बहुत चिल्लाते हैं, आपको सुनने नहीं आता। मैजारिटी हर घर में कोई न कोई दु:ख का कारण है। ऐसे दु:खियों को सुख देने वाला कौन? बोलो, कौन है? आप ही तो हो। तो इस मन्सा सेवा को सारे दिन में चेक करो कितना समय जैसे स्व के प्रति देते हो, वैसे मन्सा सेवा के प्रति कितना समय दिया? रहमदिल हो ना। तो दु:खियों पर रहम करो। आपका गीत भी है ना, ओ माँ बाप दु:खियों पर रहम करो। बापदादा को बहुत आवाज सुनने पड़ते हैं।

17-02-11

अभी सेवा जल्दी जल्दी करो। समय कम है, सेवा अभी रही हुई है। आपके पड़ोसी को भी पता नहीं, भाग्य नहीं बनाया तो अडोसी-पड़ोसी सबको यह सन्देश दे दो आपका बाप आ गया। अभी जहाँ रहते हो ना वहाँ देखना हमारे आस-पास कितने हैं, जिनको बाप का पता नहीं, किसी भी तरीके से, नहीं आते, हाथ में पर्चा नहीं लेते तो पोस्ट बाक्स में डाल दो, सन्देश दे दो,

उल्हना नहीं रहे हमको पता क्यों नहीं दिया। कैसे भी किसी द्वारा भी यह सन्देश जरूर पहुंचाओ। सेवा सभी की रही हुई है। आपके मोहल्ले में सबको सन्देश मिला। नहीं मिला हैतो कर लो। अचानक सब हो जायेगा फिर याद आयेगा, हमने नहीं किया, हमने नहीं किया। कर लो।

02-03-11

बापदादा ने तो बहुत समय से अचानक का पाठ पढ़ाया है। लेकिन अभी प्रत्यक्ष रूप में देख करके अभी अपना काम शुरू करो। घबराओ नहीं। कहानी सुनाते हैं ना - चारों ओर आग लगी लेकिन परमात्मा के बच्चे सेफ रहे। तो अभी भी बच्चे तो सेफ हैं ना! पेपर तो आने ही हैं लेकिन आपका डबल काम है। एक तो निर्भय होके सामना करो दूसरा अपने भक्त और अपने दु:खी भाई-बहिनों की सेवा भी कौन करेगा? आप प्रभु के संग में रंग लगे हुए हो, तो जो परमात्मा के संग के रंग में प्राप्त किया है वह अपने भाई बहिनों को, भक्तों को खूब प्यार से दिल से बांटो। दु:ख के समय कौन याद आता है? फिर भी परमात्मा चाहे समझें चाहे नहीं समझें, लेकिन मजबूरी से भी हे बाप, हे परमात्मा कहेंगे जरूर। तो आप परमात्म बच्चों को अभी दु:खियों का सहारा बनना है। उन्हों को शुभ भावना शुभ कामना द्वारा, बाप द्वारा प्राप्त हुई किरणों द्वारा सहारा बनो। फिर भी आपका परिवार है ना! तो परिवार में एक दो को सहयोग देते हैं ना! तो नाम ही है सह योग, श्रेष्ठ योग। वही साधन है सहारा देने का। सन्देश भी भेजा था कि समय फिक्स करो। ऐसे नहीं हो जायेगा, जैसे ट्राफिक कन्ट्रोल, अमृतवेला निश्चित है तो करते हो ना। ऐसे अपने कार्य प्रमाण यह मन्सा सेवा भी अभी के समय प्रमाण अति आवश्यक है। तो समय निकालो, रहमदिल बनो। कल्याणकारी बनो। आपका स्वमान क्या है? विश्व कल्याणकारी। तो रहम आता है? कि हो जायेगा? इसमें अलबेले नहीं बनना क्योंकि जिन्हों को आप सकाश देंगे वही आपके भक्त बनेंगे इसलिए क्या करना है? है अटेन्शन है?

16-03-11

सस्कार मिटाते हो लेकिन जलाते नही हो इसलिए फिर निकल आते हैं। इसलिए कहा कि सस्कार का सस्कार कर देना। दबाना नहीं सस्कार कर देना क्योंकि समय को आपको समीप लाना है आपके एडवासं पार्टी की विशेष आत्मायें और बाप सूक्ष्मवतन निवासी इतंजार कर रहे हैं आपको उन्हों का सकंल्प पहुचंता है वह डेट मागंते हैं आपकी बडी़ दादीया और दादायें दोनों डेट का इतंजार कर रहे हैं तो उन्हों को डेट देंगे? पहली लाइन बताओ डेट देंगे? कि कहेंगे वेट एण्ड सी हर एक इसमें क्या करना है? हर एक अपने रहे हुए सस्कारों का सस्कार कर लो समय समीप आ जायेगा। समय को समीप लाने का यही तरीका है जो विघ्न डाल रहा है रहे हुए सस्कार। तो अभी जब दूसरे बारी सीजन शुरू होगा उसमें दिन हैं काफी दिन है। रोज काई न कोइ सस्कार का सस्कार कर देना। एक एक का करते जाओ इतने दिन हैं।

13-04-11